॥ श्री श्रीगौरनित्यानंद ॥

श्री श्रीवृन्दावन महिमामृत —



प्रकाशक—

बाबा वंशीदास

गोविन्दकुण्ड।

वृन्दावन।

सङ्गणकसंस्करणं दासाभासेन हरिपार्षददासेन कृतम्

* श्री श्री गौर नित्यानन्द *

॥ श्री प्रबोधानन्द स्वामी विजयते ॥

'श्री श्री वृन्दावन महिमामृत'



एवं

संग्रह

रसिक शिरोमणि श्री १०८ प्रबोधानन्द सरस्वतीपाद
रचित अनुवाद श्री भगवन्त मुदित कृत।
गुरु महिमा, गुरु अष्टक, महाप्रभुजी की बारहखड़ी,
श्री महाप्रभुजी वा श्री राधाकृष्ण की नित्त
पूजा पद्धति वा अष्टक इत्यादि संग्रह
करके भक्त महानुभावों के सुख
वर्द्धनार्थ दासानुदास
वंशीदास ने प्रकाशित
कराया।

सर्व सत्वाधिकार
प्रकाशक के अधिकार में है।

प्रथमवार २०००] [नौछावर १।)

* निवेदन मिदम् *



सर्व रसिक महानुभावों से, दास की, यह प्रार्थना है कि मेरी भूल चूक सब माफ करैं, और ऐसी मोपै कृपा करैं कि ऐसेही धीरे धीरे, श्री श्री गौर भक्त महानुभावों के चारित्र और, उनकी इसी तरह श्री बानीजी, निकसती रहैं, दास के मन मैं तौ वहोत लग रही है पर जब तक आप लोग हर एक तरह से उत्साह न देंगे तब तक मैं इकला कुछ भी नहीं कर सकता, यही दास की सविनय प्रार्थना है, श्री मन्महाप्रभू जी के विषय पर जो जो चीज है प्रथम उनका प्रकाश होना आवश्यक है, इति कोई पत्र व्यवहार करैं तो ये ठिकाना है।

पुस्तक मिलने का पताः—

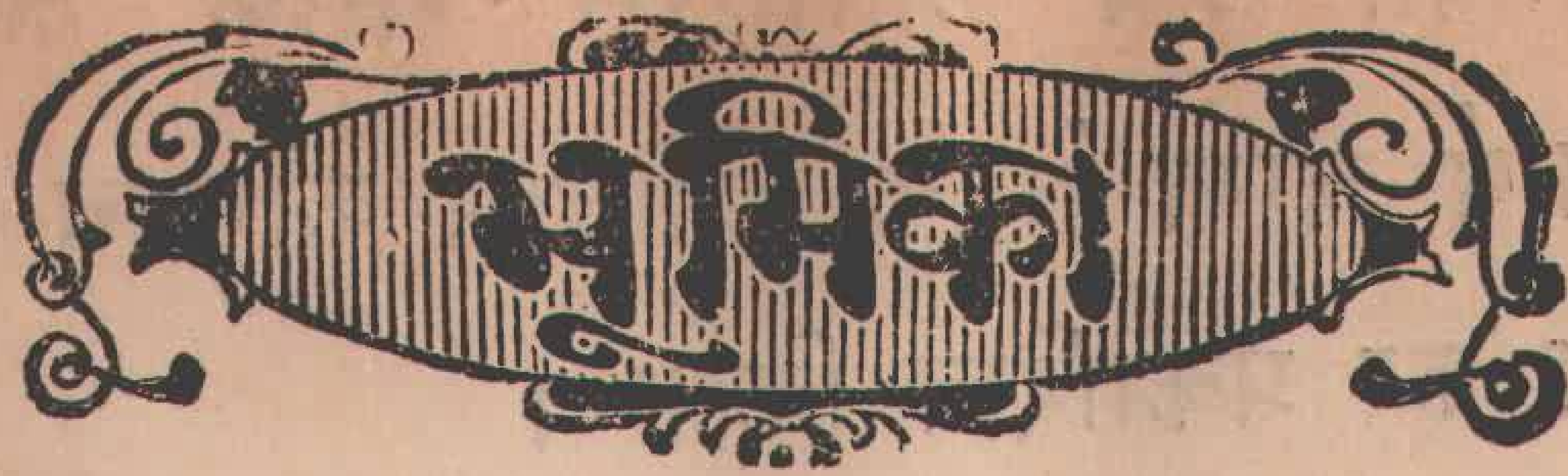
बाबा वंसीदासजी (जिला) मथुरा

श्रीधाम वृन्दावन गोविन्द कुण्ड।

❀ विषय-सूची ❀

विषय—	पेज
१-जीवन चरित्र	१ से
२-श्रीवृन्दावन शतक	५-६२
३-श्रीगुरु महिमा	१-१८
४-श्रीगुरु देवाष्टक	१८-२१
५-श्रीगुरुध्यान प्रणाम मंत्र	२१-२५
६-श्रीमहाप्रभुजी की बाराखड़ी	२६-२६
७ श्रीवैष्णव वंदना	३०-३७
८-श्रीपंच तत्व प्रणाम मंत्र	३८-४२
६-श्रीजुगल प्रणाम मंत्र	४२-४३
१०-श्रीवैष्णव प्रणाम मंत्र	४३-४५
११-श्रीललितादि वृन्दावनादि प्रणाम मंत्र	४५-५२
१२-तिलक धारण मंत्र और नाम जप समर्पण मंत्र	५२-५५
१३-अष्टक आदि	५६-७६

मुद्रक—
बालकृष्णदास खेमका, एन० एल० कौशिक
श्रीब्रजेन्द्र मशीन प्रिंटिंग वर्क्स, वृन्दावन



श्रीवृन्दावनधाम सुख विलास मय विराजमान श्रीमदाखिलावतार माधुर्य्यैक परतम परेश रसमय मदन निधिवन नित्त विपरीत विहारैक मूर्ति श्रीरसिक—सिरोमणि श्रीमन्महा—प्रभू श्रीकृष्ण चैतन्य जू, तत कृपापात्र अनन्य नृपति रसिकाग्रगण्य श्रीपाद प्रवोधानन्द सरस्वती कृत श्रीवृन्दावन माहिमा मृत मूल और भाषा "श्रीभगवन्त मुदित कृत" अनुवाद पद्य श्रीठाकुर नरोत्तमदासजी कृत-गुरु महिमा का भाषांतर, विश्वनाथ चक्रवर्ती कृत गुरु अष्टक, पं० श्रीनन्दकिशोर कृत श्रीमहाप्रभू जू की वाराखड़ी, नित्त पूजा पद्धति व अष्टक ये सव

सम्मिलित ग्रंथ श्रीगौररस रसिक जनन के प्रसन्नार्थ चरण सेवक वंसीदास कामवन वारे ने छपवा कर प्रकाशित किया ।

प्रकाशक—
वंशीदास कामांवारे ।

पद ।

महाप्रभु तुम परम उदार । अद्भुत रीत तुम्हारी देखी पतितन के तुम अति रिझवार । याही आशा लाग रह्यौ हूं और न कछु मोर आधार । श्रीजगन्नाथप्रभु कृपाकीजै दीजै प्रेमदान विस्तार।१।



मंगलाचरन भाषा कर्ता कौ।



परम कारुणीक रसिक शिरोमणि श्रीभगवंत मुदित कृत । अरिल्ल ।

श्रीकृष्ण चैतन्य जै जै विहारी । नागरी रूप गुन आगरी विधि सवै भागरी भक्ति को दयाकारी । भजन हो अगम सो सुगम कियो सहेज हीं श्रीराधिका कंत कौ हित हियारी ॥ मुदित भगवंत रसवंत जे रसिकजन चरन रज रहसि कै शीश धारी । कियो उच्चार मैं दया अनुसार ते श्रीकृष्ण चैतन्य जै जै विहारी ॥ १ ॥

छप्पै ।

जैति जैति वन जैति जैति श्रीराधारवनी ।
जैति जैति ललितादि जैति हित कौतुक कवनी ॥
जैति जैति गोविन्द चन्द वृन्दावन नायक ।
जै जै श्रीहरिदास भजन गुरु रस के दायक ॥

जैति जैति यह हेत कहि नेति नेति निगमन कियो ।
जैति जैति माधौ मुदित रसिकन जैति सुरसादियो।२।

छप्पै ।

जै जै श्रीहरि वंश हंस हित को त्रिद वानी ।
ललिता ललित प्रशंश केलि कल दसा वखानी ॥
जै जै श्रीपरमोद मोद वृन्दावन गायो ।
वहु विध हरष हुलास वास यह वचन द्दढ़ायो ॥
श्रीसत्य सनातन रूप जै नाना आरति मनहरन ।
जै श्रीहरिदास अनन्य जै श्रीकुञ्जविहारी हित करन ३



श्रीवृन्दावन शतक



दोहा।

श्रीवृन्दावन रति शत किये वानी मोद प्रवोध।
भगवंत सो भाषा करौं साखा मनकी सोध॥

नम स्तस्मै कस्मै चिदपि पुरुषायाद्भुत महा।
महिम्ने विभ्राजत् कनक रुचि धाम्ने स्व कृपया॥
असङ्कोचे नैवा स्वपच मखिलेभ्यः स्वय महो।
ददौ यः सद्भक्तिं विमल तर नाना रसमयीम्॥१॥

कवित्त।

नमो नमो ताको काको पुरुष अभूत जाकौ महिमा अपार जाकी पारहू न पायो है। कनक रुचिर धाम राजैं छवि अभिराम करुणा कौ ग्राम नाम मंगल कौ गायो है॥ भक्ति निसंक देत स्वपच ससंक आदि वचन मयंक अंक तम को मिटायो है। वानी हूं ते नेति नेति भगवंत गति देति जगत में विदित परकास प्रेम आयो है॥५॥

यस्मिन्न प्रविशेन्मनोऽपि महतां का तत्र वार्ता पुनः।
शास्त्राणां ज्ञपितञ्च यद्भगवता भङ्ग्यैव भक्त्योद्धवे
तद् बृंदावन मुन्मदेन रसिक द्वन्द्वेन केनाऽप्यहो।
नित्य क्रीडतया गृहीत मिहके विद्युर्न गौराश्रयाः॥

छप्पै।

तिनकौ नहीं प्रवेश महद जे तत्वहि जानहिं।
तिनकी तहां कहा चलै वेद विधि अगम बखानहिं॥
श्रीउद्धौ निजदास सखा संगी हरि जान्यो।
भक्ति भंगिमा भाय ताहि वृज रस उनमान्यौ॥
श्रीवृंदावन उन्मद मदन रसिक द्वंद्व क्रीडा मगन।
दुर्गम नहि जान्यौ परै विना आसरे गौर तन॥६॥

गुणैः सर्वैं हीनोऽप्यह मखिल जीवा धम तमो।
ऽप्यशेषै दोषैः स्वै रपिच वलित दुर्मति रपि॥
प्रसादा त्यस्यै वा विद महोह राधां वृजपतेः।
कुमारं श्रीवृंदावन मपि स गौरौ मम गतिः॥३॥

कवित्त।

सकल गुनहीन सब जीव में अधम तम वहुत
दोषन भर्यो दुर्मति सुढरी । हियो अवरुद्ध हो
शुद्ध भयो दयावल मयाकै हरखि जव बुद्धि
फेरी ॥ श्रीराधिका कंत रसवंत वृन्दाविपिन
प्रीति रस रीति मैं तवहि हेरी । श्रीगौरवरचन्द
अरविन्द वृन्दाविपिन मुदित भगवन्त सोई
सुगति मेरी ॥ ७ ॥

श्रीवृंदावन केलि रङ्ग सहजम् सौदर्य शोभावर्या।
वैदग्ध्यादि चमत्कृतेःपरतरम् विश्रान्तिधामाद्भुतं
तन्मे मोहन दिव्य नागरवर द्वन्द्वम् मिथोजीवनम्।
गौरश्यामल मुज्वलोन्मद रसा विष्टं हृदि स्फूर्जतु॥

छप्पै।

वृन्दाविपिन निहारि केलि रंग रहज विराजै ।
सुन्दर वेष विचित्र विविध छवि शोभा राजै ॥
चमत्कार अपार धाम विश्राम विहारी ।
मनके मनकौ हरन करन सुख प्रीतम प्यारी ॥

भगवंत गौरश्याम जीवनि जुगल उज्वल रस उन्मद मगन । सोई कौतिक छवि माधुरी कौंध चौंध रहौ मम लगन ॥ ८ ॥

इह भ्रामं भ्रामं जगति नहि गंधोऽपि कलितो ।
यदीयस्तत्रै वाखिल निगम दुर्लक्ष्य सरणौ ॥
अपारे श्रीवृन्दावन महिम पीयूष जलधौ ।
महाश्चर्य्यौन्मणलन्मधुर मंनी चित्तंलगतुमे । ५ ।

सवैया ।

जगत संसार में वहोत डोलनि डुल्यों गंध अनुराग की संधि नहिं पाई । निगम कौ दूर दुर्लक्ष ढूंढत फिरैं भनक सुनि तनक नहि जात गाई ॥ निरखि वृन्दाविपिन प्रेम महिमा निपुन अम्मृत कौ सिंधु अचिरज लुनाई । कोटि छवि लास प्रकास कियो मधुरिमा लगै मम चित्त शोभा सुहाई ॥ ९ ॥

जयति जयति बृन्दारण्य मानंद सिन्धो ।
अनुपम मिव सारं सारदा कोटि कत्थ्यैः ॥

खग मृग तरु वल्ली कुञ्ज वापी तडाग।
स्थल गिरि हृदिनीना मद्भुतैः सौभगाद्यैः।६।

सवैया—

जैति वन फूल फल मूल वल्ली विशद कुंज रस पुंजवापी तडागहिं। ठौर शिर मौर जहां खग कुलाहल करैं मत्त सारंग सिखी अलि परागहिं॥ सिन्धु आनन्द कौ सार अनुपम निरखि कोटिशत शारदा कथन रागहिं। सुखद गिरि कंदरा सरस हृदनी तहां सदां सेवत सखी प्रेम वागहिं॥ १०॥

बृन्दारण्ये चरचरन दृक् पश्य वृन्दावन श्री।
जिह्वे बृन्दावन गुण गणान् कीर्तय श्रोत्रग्रह्णान्
वृन्दाटव्यां भज परिमल घ्रान गात्रत्व मस्मिन्।
वृन्दारण्ये लुठ पुलकितं कृष्ण केलि स्थलीषु।७।

सवैया—

देखि दृग रूप छवि भूप वृन्दाविपिन श्रवन सुनि रहसि रस वन विहारी। गंध लै घ्रान अवधान

है चरन चल केलि कौतुक जहां प्रेमचारी ॥
जीभ गुन गाइ हित चाइ वृन्दाविपिन रहे
लपटाइ जहां छवि अहारी। प्रेम रस धाम
अभिराम में लोटि तू होत रज परस ते दरश प्यारी ११

महोज्वल रसोन्मद प्रणाय सिंधु निःस्यन्दिनी।
महा मधुर राधिकारमण खेलनानन्दिनी ॥
रसेन समाधिष्ठिता भुवन वन्धया वृन्दया।
चकास्तु हृदि मे हरेः परमधाम बृन्दाटवी ।८।

सवैया—

सकल जे लोक अवलोक वंदित सदां प्रेम कौ
सिंधु गति प्रति अैसी। श्रवत मकरन्द आनन्द
उन्मत्त रस अमल कल नवल छवि प्रिया जैसी॥
श्रीराधिकारमण कौ केलि सुख देत है हित
लिये हरषि वृन्दादि अैसी। परम रस धाम
वृन्दाटवी हृदै मम करौ ऊदोत दुति तरुणि तैसी।१२।

जन्मनि जन्मनि वृंदावन भुवि,
बृन्दार केन्द्र वन्द्यायां।

अपि तृन गुल्मक भावे भवतु,
ममाशा समुल्लासम् ॥ ९ ॥

सवैया—

जन्म पुनि जन्म में वास हुल्लास यह रहौं बन
भूमि में आस मेरी । असुर सुर शेष अरु देखि
वंदित सब उमा सत रमा की भई चेरी ॥ होंहु
जो गुल्म तृण औषधी भूमि की रहौं या विपिन
वलि निपट नेरी । चरण छवि वलित लखि
ललित रज माधुरी फिरत बन परैगी सीस ऐरी ।१३।

हरिपद पङ्कज सम्वाहन रस मनु भूय पूर्णोऽपि ।
यत्रोद्धव आशास्ते तृनतांतन्नौमि राधिकाविपिनम्

अरिल्ल—

श्रीउद्धव निजदास सखा हित जानि है ।
हरि सेवा में निपुन सुनिगम प्रमानि है ॥
ताके भई अभिलाष विपिन तृण हूजियै ।
हरिहां जै श्रीराधे विपिन निरंतर पूजिये ॥१४॥

राधावल्लभ पाद पल्लव युषां,
सद्धर्म नीता युषां ।
नित्यं सेवित वैष्णवाङ्घ्रि रजसां,
वैराग्य सीमा स्पृशाम् ॥
हन्तै कान्तरस प्रविष्ट मनसा,
मप्यस्ति यद् दूरत ।
स्तद्राधा करुणा बलोक मचिराद्,
विंदतु बृंदावने ॥ ११ ॥

सवैया—

श्रीराधिकावल्लभो चरण सेवी सदां धर्म में देखि जिन वय विताई । सींव वैराग की सेव्य हरिदास दिन रहसि की वात पुनि चित हिताई ॥ दूरि दुरलक्ष तिहि माधुरी विपिन की वास विन करत नहि वन मिताई । करैं करुणा कुवंरि रसिकनी हेत तव विपिन में रहै यह यों जिताई ।१५।

राधानन्द किशोरौ निरवधि,
रस सागरे निमग्नौ ।

निज केलि धाम वृंदाविपिन,
मुद्वीक्ष्यैव सौख्य मापयतः॥१२॥

अरिल्ल—

निरवोध प्रेम अपार विपिन रस सिंधु है।
तामें मगन किशोर रसिक रस इन्दु है॥
मनमें भयो हुलास विपिन छवि वी छकै।
हरि हां भगवत कीनौ सख्य प्रिया पियई छकै।१६।

उद्दाम प्रमदोज्वलैक रसया भक्त्या विधूतावृते।
व्यक्तं कस्य चिदेव चित्त मुकुरे तत्तद्दिगाभोगवत्॥
स्वस्मिन् दिव्य विचित्र केलि मिथुनं,
तत् श्याम गौरं विधू।
ज्योत्स्नावत् परिचारयेत्तदिहकिं,
विन्देऽथ वृन्दावनम्॥ १३॥

सवैया—

प्रेम सौभाग्य मद परम उज्वल महा सरस रस हित लियें भक्ति ऐसे। दूरि आचरन कियो भक्ति जिनकी सहज दसा भई चित्त की मुकुर

जैसे ॥ उदितता मुकुर में भई वृन्दाटवी देत दरसाइ रति मिथुन कैसे । गंध कौ मधुप ज्यौं घटा घन तडित कौ चन्द कौ जोति वन जुगल तैसे ।१७।

दोहा—

भगवंत चंद किशोर विवि श्रीवृंदावन घन जोति।
कवहिं चंद्रिका करैगी हीये हरसि उदोति ॥१८॥

विशुद्धा द्वैतैक प्रणय रस पीयूष जलधौ।
घनी भूत द्वीपे समुदयति बृन्दावन महो ॥
मिथः प्रेमोद्घूर्न द्रसिक मिथुना क्रीड मनिशं॥
तदे वाध्या सीनः प्रविशति पदे कापि मधुरे। १४।

सवैया।

अमल रस प्रणय सोई अम्मृत कौ सिंधु तहां हरख कौ दीप अति छवि लुनाई । उदै भयो विपिनता दीप में रस लियें कही नहिं जाति दुति रति सुहाई ॥ मिथुन उन्मत्त कौ मत्त करै माधुरी केलिकौ धाम अभिराम माई । रहत जे

आसरे वासरे विपिन में तासुरे देत छवि छवि जुन्हाई ॥ १९ ॥

नाहं वेद्मि कथंनु माधव पदाम्भोज,
द्वयीम् ध्यायति ।
कावा श्रीशुक नारदाद्यकलिते,
मार्गेऽस्तु मे योग्यता ॥
तस्माद्भद्रमभद्र मेव यदिनामास्तां ममैकं परम्।
राधाकेलि निकुंज मंजुल तरं वृंदावनं जीवनम् १५

सवैया—

माधौ जू के चरण अरुण कैसें कै ध्यांइयत जानत न प्रीति रीति सेवा के सुभायकी। शुक मुनि नारद के मारग में न जोगिता न भैगता भगाति देखि उपजी न भायकी ॥ मेरे एक निकुञ्ज केलि जीवन है विपिन विलास जहां एक रसना नायकी। यहै सुधि यहै डेरी पथ कै कुपथ एरी हौं तौ चेरी वृन्दावन मन वच कायकी ॥ २० ॥

यत्र सीमा न मपिस्पृशेन्न निगमो दूरात्परंलक्ष्यते ।
किञ्चिद् गूढतया यदेव परमानन्दोत्सवैकावधि ॥
यन्माधुर्य्य कणोह्य वेदि न शिव स्वायं उवाद्यै रहम्
तद्बृन्दावन नाम धाम रसदं वंदामि राधापतेः १६

सवैया—

निगम अगम गूढ दूरिते दुरलक्ष देखि आनन्द कौ तत्व नेति काहू कै वरवा नहीं । आनन्द अपार चारु रस कौ आगारु वन सींव कौ परसि ताको लेसहू लखा नहीं ॥ माधुरी निकुञ्ज ताको एक कन प्रेम पुञ्ज धाता शिव शवक सों सुन्यों पै दिखा नहीं । राधा पिय केलि धाम श्रीवृन्दावन जाको नाम अति अभिराम ताको पाइहौ सखा नहीं ॥ २१ ॥

कदानु बृन्दावन कुंज मण्डले,
भ्रमन् भ्रमन् हेम हरिन्मपि प्रभं ।
संस्मृत्य संस्मृत्य तदद्भुत प्रिय,
द्वयं द्वयं विस्मृति मेतु मेऽखिलं। १७।

अरिल्ल।

कनक नील मनि जाति सहज उद्योति है।
क्रांति विपिन वहु भांति जुगल मन होति है॥
चलत फिरत नव कुञ्ज कवहिं मन आइ है।
हरि हां हरख दसा गति द्वंद्व विसरि सव जाइ है।२२।

छिद्येतखण्डशइदं यदि मे शरीरम्।
घोरा विपद् विततयो यदिवा पतन्ति॥
हा हन्त, हन्त, न तथापि कदापि भूयाद्।
वृन्दावनादितर तुच्छ पदे पिपाशा॥ १८॥

अरिल्ल—

टूक टूक करि देह विपिन में डारिये।
आवहिं विपति समूह तौ देखि न हारिये॥
यह आशा जिन होउ अनत चलि जाइये।
हरि हां श्रीवृन्दावन सिर मौर कहौ कहां पाइये।२३।

स्वयं पतित पत्र कान्य मृतवत् क्षुधा भक्षयन्।
तृषा मिहिर नंदिनी सुचि पयोऽञ्जलि भिः पिवन्॥

कदा मधुर राधिकारमण रास केलिस्थली।
विलोक्य रस मग्न धीरधि वसामि बृंदावनम्।१६।

सवैया—

परे जे पतव सुख भूख में पियूख जैसे खाहु,
रूख रूख तरे ऐसी तोकों जीविका। प्यासते
वढै जो पीर, तरणि तनया तीर अंजुली कौ
भीर धीर छीर नीर पीविका॥ केलि कल
जोहत विमोहत सु ह्वै है कव, वृन्दावन कुञ्ज
पुञ्ज अमर अमीविका। आनन्द में झूमि घूमि
वसौंगो विलास भूमि, आराति कौ ठूमि जैसे सुख
पावै हीविका॥ २४॥

भूमिर्यत्र सु कोमला वहु विध प्रद्योति रत्नच्छटा।
नाना चित्र मनोहरा खग मृगाद्याश्चर्य रावादिमत्
वल्ली भूरुह जातयोऽद्भुततमा यत्र प्रसूनादिभिः।
तन्मे नन्दकिशोर केलि भवनं वृंदावनं जीवनम्॥

छप्पै।

जहां कुञ्ज अटा छवि छटा छटा वन सहज

विराजै । रतन प्रभा करि खचित भूमि मृदु अमल सुराजै ॥ मृग दृग मोहन देखि फिरत गोहन सुर लागे । खग रव अद्भुत गान राग रागिनि ते आंगे ॥ कुवंरि किशोरी केलि कौ अनुछिन कौतुक होत अति । श्रीवृन्दावन आनन्द घन सु है मम जीवन प्रान गति ।२५।

साक्षात् पुरौ श्रीपुरुषोत्तमाङ्घ्रि,
सेवा रसादप्यधिकौ रसौघः ।
स्यंदेत वृन्दाविपिनेप्य द्रष्टे,
राधा प्रियेऽत्रोद्धव एव साक्षात् ॥ २१ ॥

अरिल्ल—

सेवा श्रीपति चरन अखिल रस सार है ।
ता रसकौ रस विपिन सदा आधार है ॥
श्रवत सहज अनुराग कहौ कौ भाषि है ।
हरि हां अन देखे अनुमान सु उद्धव साखि है ॥२६॥

दोहा ।

श्रीराधा पति देखे नहीं सुनत वढ्यौ अभिलाख ।
सो विन देखे अनुमान किय उद्धव याकी साख ॥२७॥

जागर्ति दुन्दुभि रव परमोऽत्रराधा,
वृन्दावने वन इति प्रकटः पुराणे ।
तस्या विधेय मसमोर्द्ध महानुराग,
मूर्तें स्तदङ्गन मपोह्य हरिंक पश्यैः ॥२२॥

सवैया—

प्रगट दमामो देखि वेदन में वाजत है
श्रीवृन्दावन रजधानी राधा जाकी रानी है ।
अति ही रवानी कछु शिव शुक उनमानी
आसन सरोज शेष श्रीपति वखानी है ॥ पीउ
प्यारी दोऊ मन वृन्दावन एक तन संपति
स्वरूप घन वन में समानी है । जहां राजा
तहां रानी सेवत हौं रजधानी स्याव मनि म तौ
जानी वृन्दावन पानी है ॥ २८ ॥

मिलन्ति चिन्तामणि कोटि कोटयः,
स्वयं वहिर्दृष्टि मुपैति वाहरिः ।
तथापि बृन्दावन धूलि धूसरम्,
न देह मन्यत्र कदापि यातुमे । ३२ ।

॥ अरिल्ल ॥

चिन्तामणि की रासिं विहिन तजि पाइये ।
अनत मिलै हरि आप तऊ नहिं जाइये ॥
श्रीवृन्दावन की धूरि सुधुसरि तन रहौं ॥
हरि हां यह आसा मम चित्त कहूं कोनावहौं । २६ ।

कृपयतु मयि वृन्दारण्य राज्ञी मनाग,
प्यति वहुल कृपोरूस्नेह भारा द्रुदश्रु ।
फलतु तदनुकम्पा कल्प वल्ली फलत्व,
दृभुत मधि वसति मैं तत्प्रियारामसीम्नि ।२४।

॥ सवैया ॥

आनंद स्वरूप घन स्वामिनि उदार मन करुणा कटाक्ष कन यह मोको दीजिये । तुम हौ दया की दानि जानन की मनि जान मेरे अनुमान कछु माया मोह कीजिये ॥ करुणा सहज वेली प्रेम द्रुम अलवेली फलै जा नवेली तो पै यह फल लीजिये । वृन्दावन रजधानी तामें वास दीजरानी

सुखदरवानी वानी सुनि सुनि जीजिये ॥ ३० ॥

तेना कारिसमस्त एव भगवद्धर्म्मोऽपितेनाद्भुतः।
सर्वस्मात् पुरुषार्थ तोऽपिपरम कश्चित्करस्थी कृत
तेनाधायि समस्त मूर्धनि पदंब्रह्मक्षादयस्तंनम,
स्त्या देहान्तमधारियेनेवसतौ बृन्दाबनेनिश्चयः

॥ छप्पै ॥

तिंन भक्ति भागवत धर्म सब पुरुषारथ साधे। विधि विधान के सीस पांय दै हरि आराधे। ब्रह्मादिक कौ पूजि सबै ताकों शिर नावैं। भजन भावना भाइ सुता कौ सुर मुनि गावैं। जिन कीनों हिय विचार यह देह अंतलौं वसौं वन। सुफल मनोरथ फल भयो रासिक कथन किये वास मन॥ ३१ ॥

पुलिने पुलिने कालिन्द जाय,
विचरङ्घ्रवापि तलेतले तरुणां।
प्रणयाद्भुत सौख्य कन्दवृन्दा,
विपिने हन्त कदादिनानि नेष्ये ॥ २६॥

॥ अरिल्ल ॥

पुलिन पुलिन हित डुलानि सुयमुना कूल में।
कुञ्ज कुञ्ज तर फिरत रहौं मन फूल में॥
श्रीवृन्दाबन रसकंद सुहित हितायहौं।
हरि हां तामें राहिकै कवहुं सुदिनन वितायहौं।३२।

गौरश्यामल मिथुनं खेलति कन्दर्प लीलययात्र, राधामाधव नाम्ना प्रथितं तन्नौमि काननं किमपि॥ २७ ॥

॥ सवैया ॥

श्रीराधिका माधवा नाम अभिराम सुनि धाम विश्राम वर रहत भीने। लेत मिलि देत रस माधुरी मोदसों मगन अनुराग भुजकंठ दीने॥ कुंज रस पुंज में गौर अरु श्याम मिलि केलि कंदर्प कैरें रंग लीने। जयति बर अवानि हित रवानि वृन्दाटवी रूपनिाधि रूपसों विवसकीने ३३।

खगवृन्दं पशुवृन्दम् द्रुम वल्ली वृन्द मुन्मद

प्रेम्णा। प्रीणयदमृत रसेन शान्तम् बृन्दा-
वन नमत ॥ २८ ॥

सवैया –

द्रुमन के वृंद अरविंद वल्ली विशद् रसद नव
कुञ्ज रति छवि अनूठी। खगनि अरु मृगनि
पशु दृगन की माधुरी करत आनन्द घन घटा
बूठी ॥ बसत विवि ईंठ की डीठ में विपिन यों
लसत ज्यों सूठि में नग अंगूठी। नमो अभिराम
रस धाम वृन्दाविपिन मधुप मन माधुरी रहौ तूठी।३४।

ऊषर मपि हरि भक्ते र्नाना दुर्मार्ग निष्ठ मप्यधमम्।
बृन्दाविपिन मचिंत्य प्रभाव मुन्मादयेत् प्रेम्णा२९

छप्पै।

मन ऊसर हरि भक्ति वीज उपज्यो नहिं तामें।
अपमारग आसक्त डिम्भ कौतुक सब जामें ॥
अधम अपत सिरमौर विषै लंपट खल ज्वारी।
पर निंदा पर दोष खुनस जिय रहत खुमारी ॥
भगवंत इहि विधि सब दोषनि भरयो श्रीवृंदावन

वास धन हरत। देखि अति प्रभाव वृन्दाविपिन
सुमत्त प्रेम ताहू करत ॥ ३५ ॥

भक्त्यैकयाऽन्यत्र कृतार्थ मानिनः,
धीरास्तदेतन्न वयं विदामः।
श्रीराधिका माधव वल्लभं नः,
परन्तु वृन्दावन मेव सद्भश्रयः ॥३०॥

अरिल्ल—

एक भक्ति कोऊ साधि आप कृतारथ मानत।
और ठौर है वसत विपिन की गंध न जानत ॥
हम जानत नहिं कौंन कौंन विधि धर्म गह्यौ है।
श्रीराधामाधव देतय विपिन हम सरन लह्यौ है।३६।

दोषा करोहं गुणा लेस हीनः,
सर्वाधमो दुर्लभ वस्तु काङ्क्षी।
वृन्दाटवी मुज्वल भक्ति सार वीजम्,
कदा प्राप्य भवामि पूर्णः ॥ ३१ ॥

अरिल्ल।

सब दोषनि की खानि अधम गुन हीन हौं।

संपति सिंधु अपार सु चाहत दीन हौं ॥
सोई वृन्दावनरसबीज भक्ति को सार है।
हरि हां कब पाऊंगो ताहि सु प्रान अधार है ।३७।

शुद्धोज्वल प्रेम रसा मृताब्धे,
रनन्त पारस्य किमप्युदारम् ॥
राधाभिधम् यत्र चकास्ति सारं,
तदेव वृन्दाविपिनं गतिर्मे ।३२।

सवैया—

प्रेम रस सार अति ऊजरौ अमल नित अम्मृत कौ सिंधु अगाध माई। कोटि शशि वृन्द कौ चन्दमुख राधिका प्रगट या सिंधु में छवि लुनाई ॥ होऊ गति मति सु वृन्दाटवी अति सुषद सार कौ सार संपति सुहाई। मीन रस लीन हौं दीन बीनती करत रहौ सोई चित्त में छविछटाई ॥ ३८ ॥

सर्वे साधन हीनोऽपि बृन्दारण्यैक संश्रयः।
यः कोपि प्राप्नुया देव राधा प्रिय रसोत्सवम् ।३३।

दोहा—

जिनन गह्यौ वृन्दावन आसरौ सब साधन करि हीन
पिय प्यारी रति पाइ है ज्यों पावत जल मीन।३६।

त्यजन्तु स्वजनाः कामं देह बृत्तिश्च मास्तुवा।
न बृन्दावन सीमान्तः पदं मे चलतु क्वचित्।३४।

दोहा।

कुंटुम सजन छांडौ सबै मिलौ न कछु अहार।
श्रीवृन्दावन की सींव तजि चलौं न पग मन हार।४०।

समे न माता सच मे पिता न,
समे न वन्धुः सच में सखा न।
समे न मित्रम् सच में गुरु र्न,
योमे न बृन्दावन वास मादिशेत्।३५।

सबैया।

कहैं दुख पाय बसै जिनि जाय सो ना वह माय पिता नहि भैया। सो नहि मीत सखा न सहोदर सो नहि बंधु दयाल न दैया॥ सो गुरु नाहि कहै वस कुञ्जन पुञ्जन दोष दसा कौ

गहैया । ये भगवंत तजौ सब बाधिक मित्र वहै
वन वास कहैया ॥ ४१ ॥

तच्छास्त्रम ममकर्ण मूल मपि न स्वप्नेपि यायादहो
श्रीबृंदाविपिनस्य यत्र महिमा नात्यद्भुत श्रूयते ॥
तेमे दृष्टि पथं न यान्तु नितरां संभाष्यता माप्नुयुः ।
ये वृन्दावन वैभव श्रुति गते नोल्लासिन्द स्ते खलाः॥

छप्पै ।

सो वह ग्रन्थ पुरान श्रवन पथ परौ न तामे ।
श्रीवृन्दाविपिनि प्रताप कथन रस कह्यौ न जामे ॥
तासों करौ अलाप न नैनन देखौ ताको ।
सुनि कै विपिन विलास हरष मन हो न जाको ॥
भगवंत ऐसे कुटिल कौ संग करत जे भूलि जन ।
तिनको कबहू ना मिलै श्रीवृन्दावन रज लेस कन ४२

अल मल मिह योषित् गर्द्धभी सङ्ग रंगै ।
अल मल मिह वित्ता पत्य विद्या यशाभिः ॥
अल मल मिह नाना साधना यास दुःखै ।
भवत भवत वृन्दारण्य माश्रित्य धन्याः ।३७।

सवैया। जोषिता गर्धवी सोषिता भजन की दोषिता संग कौ रंग नहि चाहूं। काम धन धाम सुत ग्राम जस रंजना अंजना जगत की चाहत न हाहूं॥ लोक परलोक साधन सवै त्यागिहौं मुकति अरु भुकति वैकुंठ ताहूं। होउ वृन्दाटवी गति सु मम आसरौ जनम परजंत सव दिन दिनाहूं ॥ ४३ ॥

वैकुण्ठं कोटि कोटि प्रगुणित,
मपिनो यद्रजो लेस मात्रम् ।
प्रोन्मील त्सौभ गन्धे र्लव मपि,
लभते शुद्ध भावो ज्वलायाः ॥
कुर्वारन् भक्ति कोटि भगवति,
न तथा प्यद्भुत प्रेम मूर्तेः ।
श्रीराधाया अभक्तेः किमपि,
न कलितां नौमि बृन्दाटवीं तां ॥३८॥

सवैया।

वीज रस सार अति शुद्ध उज्जल अमल सिद्धि सौभाग रज यों वखानहि। कोटि वैकुंठ सुख होइ जो एक मिलि तऊ रज लेस महिमा न जानहि॥ कोटि विधि भक्ति जे करत है स्याम

की श्रीराधिका भक्ति जै मन न आनहि । नमो वृन्दाटवी अगम दुर्लभ तिनहि कोटि परलोकं जो जतन ठानहि ॥ ४४ ॥

इद मपि भविता किं यत्र कुत्रापि बृंदा,
पद मपि मम जातं श्रोत्र वीथी मकस्मात् ।
मधुर मधुर राधा माधवा नङ्ग खेला,
वन सुपनय दंत दॅस्यंति प्रेम मूर्च्छा ।३९।

कवित्त ।

होइगी कवहि इह नाम वृन्दा भनक भ्रमत जहं तहं परै कान मेरे । मधुर ते मधुर रस सघर घन माधुरी चित्र छवि होइगी चित्त अरे ॥ नवल नव नागरी केलि कौतुक जहां पुलक तन वढैगी होत नेरे । मगन मन मूरिछा होइगी दरस ते सरस हित होइगो कुवंरि हेरे ॥ ४५ ॥

कदा नु बृन्दावन वीथिका स्वहम्,
परि भ्रमन् श्यामल गौर मद्भुतम् ।

किशोर मूर्त्ति द्वय मेक जीवनं,
पुरः स्फुरद्वीक्ष्य पतानि मूर्छितः ॥४०॥

छप्पै।

नव किशोर चित्त चोर तरुन तन रूप मौर है।
कोटि कोटि छवि काम धाम दुति स्याम गौर है॥
दोऊ मूरति वन एक जीव जीवनि रस भोगी।
कौतुक केलि विलास सदां आनन्द उप जोगी॥
चलत फिरत नव कुञ्ज में कब ह्वै है मम पुलक
मन। देखि नवल नव नागरी वेपथ गति ह्वै
परै तन ॥ ४६ ॥

किमेता दृग् भाग्य मम कलुष मूर्ते रपि भवे।
न्निवासो देहान्ता वधि यदिह वृन्दावन भुवि॥
तयोः श्रीदम्पत्त्यो र्नव नव विलासै र्विहरतो।
पद ज्योतिः पूरैः रपितु मम सङ्गोऽनु भविता।४१।

छप्पै।

ऐसो नहिं कोऊ सुकृत भाग अैसो नहि पायो।
हौं खल मूरति पाप जनम यों वादि गमायो॥

देह अन्त परजन्त वसौं गो कुञ्ज मदन में।
नाना करत विलास मिथुन जा रंग मदन में॥
तिनके कोमल कमल पद श्रीकौ दाता जोति
शत। तिन सों मोसों होइगो सहज संग
अनुराग रत॥ ४७॥

भूतं स्थावर जङ्ग मात्मक महो यत्र प्रविष्टं किम।
प्यनन्दैक घना कृति स्वमहसा नित्योत्सवं भासते
मायान्धी कृत दृष्टि भिस्तु,
कलितं नाना विकल्पात्मना।
तद् वृन्दावनविपिनं कदाधि वशतः
स्यान्मे तनू श्चिन्मयी॥ ४२॥

छप्पै।

जीव जंत परजत जिते अस्थावर जंगम।
श्रीवृन्दावन में वास किये नित रज सों संगम॥
ते मूरति अनुराग सबै उत्सव सुख दाता।
तिनसों मानत विपिन सहज शरणा गत नाता॥
सुनि जे जे माया अंध नर ते देखत नाना भांति

थपु । या वृन्दावन के वास वसि सु कव करि हौ आनन्द वपु ॥ ४८ ॥

यत्र प्रविष्टः सकलोऽपि जन्तु,
सर्वः पदार्थो ष्यवुधै रदृश्यः ।
स्वानन्द सच्चित्घनता मुपैति,
तदेव वृन्दावन माश्रयन्तु ॥ ४३ ॥

सवैया—

वसत वृन्दाटवी सकल जे जीव सुनि अखिल विधि तन धरे विषै गानी । गूढ मति विकल अति रहसि रस माधुरी निपट आगाधरी नहीं जानी ॥ दूरि दुर्लछ जा कहत आनन्द घन पाइ है रूप सों छवि रवानी । निरखि वृन्दाटवी प्रेम निधि नाटवी गह्यो मै आसरौ मीन ज्यों पानी ४६

वृन्दावनस्थ ष्वपि येऽत्र दोषा,
नारापयान्त स्थिर जङ्गमेषु ।
आनन्द मूर्ति ष्वपराधि नस्ते,
श्रीराधिका माधवयोः कथं स्युः ॥४४॥

छप्पै।

श्रीवृन्दावन में वसत जेते जंगम अस्थावर।
ते मूरति अनुराग तनक नहि माया तांवर॥
तिनसों ठानत दोष सु तौ वे है अति अपराधी।
मारयो पांय कुठार गई जो भक्ति हि साधी॥
भगवंत निन्दा करत ही वृन्दा ताको वित हरत।
श्रीराधामाधव शरण ते इतर जानि वाहिर करत ५०

ये बृन्दावन वासि निन्दन,
रता येवान बृंदावनम्।
श्लाघन्ते तुलयन्ति येच,
कुधियो केनापि वृंदावनम्।
ये वृंदावन मत्र नित्य सुख चिद्रूपम् सहंते न वा।
तैः पापिष्ठ नराधमै र्न भवतु स्वप्नेपि मे सङ्गतिः।४५

सवैया—

वृन्दावन वासी उपहासिन की निन्दा करै निपट उदासी वन वैभव न सुहात है। वन की समान और तीरथ वखान करै निपट अयान मूढ कहि

न लजात है ॥ वन कौ रहस रसु सहि न सकत पसु लये हिये गांस गंसु जमपुर जात है। उनसों अलाप भूलि सुपने न होइ मिलाप तिनके विलोक पाप ताप हू सुज्ञात है ॥ ५१ ॥

असह्य वह्नु दुर्वचो यदि वेदान्त साक्षात्त्रियम्।
वलादप हरन्ति चे त्प्रिय सुतादिकं घ्नन्ति वा ॥
धनाद्यपि च जीवनं यदि हरन्ति बृन्दावन।
स्थिता तदपि ते प्रिया मम भवन्ति वन्द्याः सदा४६

कवित्त।

धन लेहु जन लेहु अरधङ्गी हरि लेहु मांगे ते न देहु जो पै उदभट कांमी है। सुतहू कौ मारौ तन टूक टूक कर डारौ दोषहू न निरवारौ वडे मत्त वामी है ॥ अैसे वृजवासी ताकी जग करै उपहांसी मेरे तौ आभासी अेतौ सुकृत सुधामी है। पूजही तौ जानौ भगवंत इष्ट करि मानौ इनमें जो दोष आनौ वडी जीय स्वामी है।५२।

दोहा।

राहियै वन में हेत यह निर दूषित निह काम।
वासी सों रिस करत ही दुख पावत पति धाम ॥५३॥

पर स्वस्ते यैक व्यसन मपि नित्यं पर वधू।
प्रसक्तं विश्वेषा महह वहुधा हिंसक मपि ॥
दुराचारं लाभा द्युप हत मपि भ्रात ररुणाम्।
दिवान्धस्तं बृन्दावन गत जनं नाव गन येः॥४७॥

॥ छप्पै ॥

परदारा सों लीन त्रिषै लंपट अति कामी।
चोरी कौ जिय स्वाद जगत हटकत मति वामी ॥
अति लंपट विभिचार धर्म कौ लेस न जानै।
महा लोभी अति कृपण काक कण सर्वसु उनमानै ॥
ऐसेऊ जे वन वसत तिनमें दोस न लेस कन।
द्दग उलूक मन मूक करि ये दिनेस आनन्द घन।५४

पर धन पर दार द्वैष मात्सय लोभा।
नृत पुरुष परा भि द्रोह मिथ्याभि लापान् ॥

त्यजति ज इह भक्तो राधिका प्राण नाथ ।
न खलु भवति बन्ध्या तस्य वृन्दावाना शा ॥४८॥

॥ सवैया ॥

पर धन पर दारा नहि चाहत तृष्णा लोभ घटी सब मनकी॥ मिथ्या वाद विवाद जगत जे हिंसा शोक मिटी या तनकी ॥ बढी भक्ति श्रीराधावर की भई उज्जल आरति जा जनकी । बन्ध्या होइ न आसा कबहूं पावै निधि श्री वृदावनकी ॥५५॥

कुरु सकल मधर्म्मं मुञ्च सर्व स्व धर्म्मम् ।
त्यज गुरु मपि वृन्दारण्य वासा नु राधात् ॥
स तव परम धर्म्मः साच भक्ति र्गुरूणाम् ।
सकिल कलुष राशि र्यद्वि वासान्तराय ॥४९॥

छप्पै ।

करि मन सकल अधर्म्म धर्म्म ताजि ज जग साधक । ता गुरु हू कौ छांडि वास वृन्दावन वाधक ॥ वहै धर्म्म सत कर्म्म वहै गुरु पद की सेवा । वहै शिरोमणि संग रंग वृन्दावन

देवा ॥ भगवंत और पाप आताप सब या दुख की कोऊ नाहि सर । अन्त राव जो एक पल श्रीवृन्दावन ते होइ नर ॥ ५६ ॥

दोहा ।

करि अधर्म यह धर्म्म नहि यह तौ विपिन प्रताप।
सत मारग निर बर्ति कौ वन सुमिरत है आप॥५७॥

निर्मर्ज्यादाश्चर्य कारुण्य पूर्णौ,
राधाकृष्णौ पश्यतश्चेत् कदाचित् ।
यः कोप्यस्मिन् या दृश स्ता दृशो,
वा देह स्यान्ते प्राप्नुया देव सिद्धिम् ॥५०॥

॥ अरिल्ल ॥

जाकी नहि मर्याद आड सो देखियै ।
अद्भुत करुणा रूप सु पूरण पैखियै ॥
ऊत्तम पामर नीच विपिन जो गहैगो ।
हरि हां देह अन्त निर धार रसिक दोऊ लहैगो ।५८।

राधा मधुपति पादाम्बुज,
भक्ति रस पूर दूर मुक्तस्य।

अजितेन्द्रियस्य कृपया मम,
बृन्दारण्य माश्रयो भवतु ॥ ५१ ॥

दोहा—

निर दूखित रह्यो विपिन सों आप विभूषित वाम।
रह्यो निरन्तर मिलहिंगे पाति वृन्दावन धाम ॥५६॥

॥ अरिल्ल ॥

राधा मधुपाति पाद पदम सद वर वरौ।
भक्ति रसासव पूर दूर मुक्तन धरौ ॥
अजितेन्द्रिय पै कृपा सो मम ऊपर कियो।
हरि हा वृन्दावन निज ओर जोर आश्रैदियो ॥६०॥

राधा माधव पाद पङ्कज रजः प्रेमोन्मद तत् प्रिय
क्रीडा कानन वासि षुस्थिर चर प्राणि स्वपि द्रोहिषु
प्रद्वेषं परमा॒पराध महहो त्यक्ते तरै रप्यघै।
र्युक्तो प्यामरणांत लब्ध वसति बृदावने स्यात्कृती

सवैया—

आप आताप अरु पाप की देह है गहैं अपराध
तन ताप तीन्यो ॥ वसत वृन्दाटवी जीव अरु

जंत जे दोष अपराध तिनको न कीनौ मरण
परजंत लौं बसौं वन भूमि में सुगति यह भई
रज परस लीनो ॥ चरण अरविंद की माधुरी
मोद में केलि कानन रहत रंग भीनो ॥ ६१ ॥

न लोक वेदोद्धृत मार्ग भेदे,
राविश्य संक्लिष्यत रे विमूढाः ।
हठेन सर्वं परिहृत्य वृंन्दावनान्तरे,
पर्ण कुटीं कुरुध्वम् ॥ ५३ ॥

सवैया—

वेद अरु लोक में कह्यौ सो लह्यौ तैं भूलि करि
खेद जिन करहि वौरै । हटक मन हेत यह
कटुक तू खाहि जिनि फटक करि देखि कछु
बात और ॥ रहसि रस रीत आनन्द घन
प्रीति की भक्ति बिन जगत में अगाति भौरै ।
करहि किन कुटी रस जुटी वृन्दाटवी सदां
जहां द्रुम रहत रंग मौरै ॥ ६२ ॥

दोहा—

परन कुटी करि विपिन में भवन लडैंती स्याम ।
अनपासा जहां पाइयै रसिक भजन विश्राम ।६३।

य त्तद् वल्गुन्तु शास्त्रा न्यहह,
जनतया गृह्यतां यत्तदेव ।
स्वं स्वं यत्तन्मतं स्थापयतु,
लघु मति स्तर्क मात्र प्रवीनः ॥
अस्माकन्तू ज्वलै को न्मद,
विमल रँस प्रेम पीयूष मूर्तेः ।
श्रीराधायाः विहाराटवि मिह,
नविना न्यत्र निर्यासि चेतः ॥ ५४ ॥

छप्पै ।

वेदन की विधि लही गही जो कही पुराणनि ।
आप आपनी मति कौ कै ठानौ जाननि ॥
वाद स्वाद में निपुन करा चरचा मन भाई ।
ओछी मति नहि धीरं भजन की गंध न पाई ॥
आनन्द निधि नव नागरी जाको प्यार बिहार

वन । भगवंत या वन ते कबहुं सु जिनि चलौ
मेरे प्रान मन ॥ ६४ ॥

स्निग्ध श्यामा भिरामाच्छवि,
मृदु मसृणो त्तप्त हेमा वदातम् ।
ज्योति र्द्वन्द्वं किशोराकृति,
मधुर महोद्घूर्न मानं रसेन ॥
नित्यं यत्रैव खेलायति मदन,
कला कौतुकेना त्युदारम् ।
सारं साराद शेषा दपि तदिह,
धनं श्री ल वृन्दावनं नः ॥ ५५ ॥

छप्पै ।

अति स्निग्ध घनश्याम काम कोटिक छवि पावैं ।
गौर माधुरी निरखि डीठि उपमा नहि आवैं ॥
ये किसोर चित चोर मत्त जोवन रंग भीने ।
घूमत झूमत नैन वैन मन आनन्द दीने ॥
भगवंत केलि अनुराग में मत्त मगन दोऊ रहत
वन । नहि वरनि सकति सोई सारदा

आस्वादन करि रहासि मन ॥ ६५ ॥

अपार करुणा करं वृज विलासिनी नागरम् ।
मुहुः सुवहु काकु भि र्नति भिर तेद भ्यर्थये ॥
अनर्गल वहन् महा प्रणाय सीधु-सिन्धौ मम ।
क्वचि ज्जनुषि जायतां रति रिहैव बृन्दावने ।५६।

कवित्त ।

करुना के सिन्धु अरविंद नैन मोहन है सोहन सनेह निधि प्रीतम पियारी जू । महिमा अपार प्रेम भजन कौ सिंधु सार जुगल उदार वन दया उपकारी जू ॥ एक कोऊ जीव काहू जोनि में जनम कीजै होय जामें रति मेरी वृन्दावन चारी जू । करुना की खानि तुम जानन की मनि जान यह मोको दीजै दान नृपति विहारी जू ॥ ६६ ॥

अप मारग सब करत दुष्ट मति धर्महि छांडैं ।
मन भायो रस ढरत उठत मन जे जे चाडैं ॥
भक्ति सिन्धु की गंध अंध ताको नहि परसी ।

काम विषै के लोभ वसत वन नाना दरसी ॥
अैसेऊ जे वन वसत ते रस मूरति सव होत
जन । जै जै श्रीवृन्दाटवी सु नमो नमो करि
विमल मन ॥ ६७ ॥

इह सकल सुखेभ्यः सूत्तमं भक्ति सौख्यं,
तदपि परम काष्ठां सम्यगाप्नोति यत्र ॥
तदिह परम पुंसो धाम बृन्दावनाख्यं,
निखिल निगम गूढं मूढ बुद्धि र्न वेद ॥५८॥

अरिल्ल—

लोक लोकन की भुक्ति सुगति सुख गावहीं ।
ता सुख ते उत्कर्ष भक्ति सरावहीं ॥
ता रस कौ रस सार भजन रस रीति है ।
हरि हां पूरन प्रेम प्रकाश विपिन सोई प्रीति है ।६९।

दोहा ।

वेदन कौ दुर्लक्ष सुनि कुवरि रसिक कौ धाम ।
दुर मति कौ सूझत नही ज्यौं उळूक कौ घाम ॥६६॥

भजन्त मपि देवतान्तरं यथाक्षर ब्रह्मणि ।
स्थितं पशुवदेव वा विषय भोग मात्रेरतम् ॥
अचिन्त्य निज शक्तितः स्वगत राधिका माधव ।
प्रगाढ रस दुर्गमं कुरुत एव वृन्दावनम् ॥६९॥

॥ सवैया ॥

भजत कोऊ देवता सेवता ब्रह्म कौ कर्म अरु धर्म जौ विधि वताई । विश्व में जे विषै भोग तिनको करत लल्क मन स्वाद रस रहत भाई ॥ वसत वृन्दाटवी अधम नर भाइ विन गहैगो कुगति मति कहा ताई । मगन रस करैगो विपिन आनंद घन हरैगो तिमिर छवि चंदमाई।७०।

यद् कोऽप्यंश मपिस्पृशेन्न निगमो,
यन्नो विदुर्योगिनः ।
श्री श ब्रह्म शुकार्ज्जुनोद्धव मुखाः,
पश्यन्ति यन्न क्वचित् ॥
अन्यत् किं व्रज वासिनां मपि न यत्,
दृश्यं कदा लोकये ।

श्रीवृन्दावन रूप मद्भुत महं
राधा पदैका श्रयः ॥ ६० ॥

कवित्त।

रूप गुन गन्स कौ अंस महिमा निरखि संस ताको करत वेद हारे। श्री एस अरु सेस ब्रह्मा दिकन अगम है जोग गह्यो भोग शिव सव विसार ॥ उद्धवो पांडु सुत लच्मी ना लह्यौ देखि नहि सकत वृज वास वारे। होइगो दरस छवि परस वृंदाटवी स्वामिनी पद सरन गति हमारे ॥ ७१ ॥

विस्मृत्य द्वैत मात्रं प्रणाय मय,
महा ज्योति रेकार्णा वान्तः।
श्रीवृन्दारण्य मत्युज्वल दतुल,
रसाम्भयोधि तास्मिन् सखे त्वम् ॥
वेशो किञ्चिद् गृहीत्वोज्वल,
मखिल कला कोमला भीर वाला।

प्राण श्रीराधिकायाः किमपि रस,
निधे श्चाटु कारं भजेथाः ॥ ६१ ॥

सवैया—

वान्ति करि डारि संसार के सुख जिते देखि रस सिन्धु वन छवि लुनाई। उठति रस लहरि छवि गहरि आनन्द मैं प्रिया अनुराग निधि सखिन पाई ॥ एक कछु भेष धरि रहै जो विपिन मैं सुनैगो वात जे कोक गाई। कुवंर रस मगन ह्वै कहैं जव कुवंरि सों मुदित अनुराग यों रति लडाई ॥ ७२ ॥

छन्द गीत का।

करि न सकत संयम इन्द्रिन कौ अखिल दोष अपराध भरयौ हौं। अगुन अकेलो अगति कहा करौ अंध कूप मै अंध परयो हौं ॥ पाप कूल प्रति कूल भये हरि सूल कछू नहि विषै छरयौ हौं। करुणा निधि वृन्दावन मोको वास देहु यह चित्त धरयौ हौं ॥ ७३ ॥

दुर्वासिना सुदृढ रज्जु शतैर्निवद्ध,
माकृष्य सर्वत इदं स्व वलेन कृष्ण ।
वृन्दावने विहरतः सह राधया ते,
पादारविन्द सविधं नयमानसम्मे ॥६२॥

कवित्त—

असद दुर्वासना अखिल गुण शृंखला सुदृढ
यह मन वन्ध्यौ अपथ चारी । आपने महावल
कुंवर नागर नवल छोडियो दीन तुम दयाकारी ॥
नवल नव कुंज रस पुञ्ज वृन्दाटवी करत कल
केलि मिलि प्रिया प्यारी । करहु निज चरन कौ
भृत्य आनन्द में राखियो निकट रस
में विहारी ॥ ७३ ॥

जाति प्राण धनानि यान्तु सुयशो,
राशि परि क्षीयताम् ।
सद्धर्म्मा विलय प्रयान्तु सततं,
सर्वैश्च निर्भर्त्स्यताम् ॥

आधि व्याधि शतेन जीर्य्यतु,
वपुर्लुप्त प्रतीकारतः ।
श्रीवृन्दाविपिन तथापि न,
मनाकृत्यक्तुं ममास्तां मतिः ॥६४॥

छप्पै ।

प्रान जाव तौ जाव जाव जस सकल बडाई ।
होउ धरम कौ नास भरम मन गहौ जडाई ॥
आधि व्याधि के दुःख करै जो तनकौ जीरन ।
करौं नहीं उपचार कोटि होउ नाना पीरन ॥
भगवंत इहि विधि वचन कठोर कहि सबहि
निरादर करहु किन । श्रीवृन्दावन कौ छांडियै
यह आवै मन भूलि जिन ॥ ७४ ॥

रक्षति संसार भयाद्दोषा,
कर मप्य शेष देह भृद् वृन्दम् ।
वृन्दावन मिति तेन प्रथितं;
तन्नौमि काननं किमपि ॥६५॥

अरिल्ल—

जहां लौं धरै सरीर अखिल है लोक में।
दोष वृन्द की खानि रहत दिन शोक में॥
श्रीवृन्दावन रस धाम दुःख भै जग हरै।
हरि हां यह निरुक्ति यह नाम वृन्द जन
गति करै॥ ७५॥

दोहा।

श्रीवृन्दावन वन्दित सवै अलक लडी कौ धाम।
वृन्दे जू पोषत सदां यह निरुक्ति यह नाम।७६।

वृन्दारण्या दन्यत् प्रकृतेरन्तर्वहिष्वापि।
नैवास्ति मधुरं वास्त्वित्यव कलितं यैर्नमस्तेभ्यः७६

कोटि ब्रह्मांड सत कांड वैकुंठ सुनि ज्ञान विज्ञान जे तिन न हेरे। मधुर ते मधुर रस सभर वृन्दाटवी कमल कर कमल सुत दोऊ ढरे॥ दूर दुरलच्छ जहां गम नहीं अगम अति नेति कह्यौ नेति कहूं नहीं नेरे। जिनन

यह जानि वन माधुरी उरधरी मुदित भगवंत सोई सेव्य मेरे ॥ ७७ ॥

दोहा।

श्रीराधे वृन्दाटवी ये दोऊ एक सरूप।
आनन्द घन अनुराग में संपति रूप अनूप ॥७८॥

विभ्राज त्तिलका कलिन्द तनया,
नीरौघ नीलांवरौ।
दञ्चत्कांञ्चन चंपकच्छवि रहो,
नाना रसोल्लासिनी ॥
कृष्णा प्रेम पयोधरेणा रसदे,
णात्यन्त सम्मोहिनी।
गोपेन्द्रात्मज वल्लभा विजयते,
राधैव वृन्दाटवी ॥६७॥

अरिल्ल।

तिलक प्रिया के भाल ललित अति सोहनो।
तिलक वृक्ष वहु भांति विपिन मन मोहनो ॥

नीलांवर छवि चारु सार पहिरे तन गोरी ।
जमुना स्यामल कांति अङ्ग झलकत वन खोरी ॥
कंचन मृदुल अनूप कुँवरि तन छवि कहै ।
चंपक सुमन सुवास विपिन यह छवि लहै ॥
पीन पयोधर देखि रहस्य मन स्याम है ।
गिरि गोवर्धन उरज विपिन अभिराम है ॥
प्रिया पिय कौ तोषति रहस्य अनंग में ।
पोषत फल दल मूल विपिन घन रंग में ॥७९॥

दोहा—
भगवंत संपति माधुरी छवि समान सम हेत ।
नव नागरी वृंदाटवी दोऊ प्रीतम सुख देत ।८०।

यस्मिन् कोटि सुरद्रु वैभव युता,
भूमि रुहाः पोषकाः ।
भक्तिः सद्वनिता महा रसमयी,
यत्र स्वयांश्लिष्यति ॥
यत्र श्रीहरिदास वर्य्य गणिताः,
खट्टाय माना शिला ।

स्तद् बृन्दावन मद्भुतं सुख मयं,
को नाम ना लम्वते॥६८॥

छप्पै।

श्रीवृन्दावन भूमि कल्पतरु पोष कौ। पोषत मनके भाय छिड़ाये दोष कौ॥ भक्ति सुधारस सार सु वनिता निधि लिये। आलिङ्गित मन आहि हरख हित रति किये॥ गिरि गोवर्द्धन सिला सुनि विमल अमल परजङ्क अति। ऐसो वह कहि को है जो चाहत नाहिं विपिन गति।८१।

विन्दन्ति यावत् प्रणायं न मन्दा,
बृन्दावने प्रेम विलास कन्दे।
तावन्न गोविन्द पदार विन्द,
स्वच्छन्द सद्भक्ति रहस्य लाभः॥६९॥

दोहा।

प्रेम कन्द वृन्दाविपिन नहिं जानत मति मन्द।
तौ लौं तौ पावै नहीं रहस्य भक्ति गोविन्द।८२।

स्मारं स्मारं नव जल धर श्यामलं धाम विद्युत्।
कोटि ज्योति स्तनु लतिकया राधयाश्लिष्य मानम्

उच्चै रुच्चैः सरस सरसं प्रोज्जलीजृम्भमान ।
प्रेम्णाविष्टौ भ्रमति सुकृतिः कोऽपि बृंदावनान्तः

॥ छप्पै ॥

नव जलधर तन स्याम कोटि विद्युत छबि गोरी ।
आलिङ्गित अभिराम कुंवर वर प्रिया किशोरी ॥
शोभित परम अनूप रूप सुन्दर सुखदाई ।
जोबन जोति उदोति हरषि आनंद अरुणाई ॥
भगवन्त सुख की रासि ते धरे सहज यह छबि
हिये । श्रीवृन्दावन में फिरत हैं मत्त प्रेम
आराति लिये ॥८३॥

॥ अरिल्ल ॥

कञ्चन रचित मानि खचित सुनाना ठौर है ।
कोमल किरानि कुलाहल सांवल गौर है ॥
हरषि उमाडि दृग वारि पुलाकि अकुलाउंगो ।
हरिहां लोटि मरम की चोट धरानि परि जाउंगो
राधापदाङ्क भूषित बृन्दारण्य,
स्थलीषु निर्भर प्रेम्णा ।

हरि–हरि कदा लुठामि प्रतिपद,
गलदश्रु रुल्लसत्पुलकः ॥७ ॥

प्रिया चरन जावक रंगी ठौर–ठौर बनभूमि ।
प्रेम पुलक अंसुवा कुलत कब लुठहौं तन झूमि ॥

पूर्णोज्वल प्रेम रसैक मूर्ति,
र्यत्रैव राधा विजयी हरीति ।
तत्रैव वृन्दावन माश्रितानां,
भवेत्परं भक्ति रहस्य लाभः ७२

अरिल्ल –

श्रीराधारस मूरति पूरति प्रेम है । कुञ्जन करत बिहार चारु छबि हेम है ॥ आनन्द विपिन विहार सहज ते पाइ हैं । हरि हां वृन्दावन सों चित्त हरषि जे लाइ हैं ॥८६॥

सर्वत्यक्त्वा सरस विशद प्रेम पीयूष सान्द्रे ।
बृन्दारण्येऽद्भुत तरुलता गुल्म काद्यैर्मनोज्ञे ॥
राधाकृष्णोज्वल गुणगुणोद्गानमत्तालि कीरै

नीरेनापि स्थिति मिह तनो रध्यवस्या वसन्तु ।७३।

॥ अरिल्ल ॥

परम उज्वल रस रहासि रंग देखि आनंद धामहै। सकल सम्पति छांडि कर गाहि विपिन मन विश्रामहै ॥ मत्त मधुकर कीर कुञ्जन गुञ्जत अभिराम है। चारि अंजुलि जीविका जग्त उदर पूरन काम है ॥८७॥

श्रीराधायाः कनकरुचिर ज्योति रङ्गच्छटोघैः।
शुद्ध प्रेमोज्वल रसमयैःसेव्य मानं समंतात् ॥
गोविन्दस्याम्बुद रुचितनोर्ज्योतिरम्भोधि पूरैः
सान्द्रानन्दात्मभिरपिचितं नौमिवृन्दावनं तत् ॥

कवित्त।

कनक रुचिर जोति छटा के समूह कोटि जग मग जगमग होत प्रेम प्यारी उजियारी जू। सजल नवीन घन अगनित नील मानि कोटिक मनोज मन वारिद विहारीजू ॥ अङ्गन की

कांति पांति, वन में न मांति पुनि कौंधि चौंधि मिलि जाति, होत नहिं न्यारी जू। अति ही उदार छबि कौतिक अपार जामें नमो–नमो बारम्बार वृन्दावन प्यारी जू ॥८८॥

निन्दा वा स्तुतिरेव वा वहु,
विपत्सम्पत्तिरेवास्तुवा।
पाण्डित्यं वत मूर्खतापि यदिवां,
रागो विरागोऽथवा ॥
यत्किञ्चिद्भवतु श्रुते रपि मना,
लक्ष्यं न यद् वैभवंम्र ॥
तद्वृन्दाविपनं न जीवन मिदं,
स्वप्नेऽपि हातुं क्षमः ॥

कुण्डलियां

जस अपजस हो कोटि जस सम्पति होइ तो कोय। विपाति होइ तो बिपाति नहिं दुख आवै नहिं भाय। दुख आवै नहिं भाय दोउ पण्डित

कै मूरख ॥ होउ तटस्थ वैराग राग विषया को पूरक । होनो होउ सो होउ मन निगम न पहुंचत जासु रस ॥ छांडि सकौ नाहिं बन सुपन जस अपजस होउ कोटि जस ॥

चण्डाल श्वखरादिवत् यदि जनाः कुर्वन्ति सर्वे तिरस्कार दुर्विसहश्च तेन नास्ति मे खेद-स्तनीयानपि । देवादेव्य इमे च भूत निवहाः प्राणाश्च दद्युर्महा ॥ स्नेहात्तुष्टि मतो नमे गुरुतृषोवृन्दावनीथरसे ॥

कवित्त ।

सुपच ज्यों श्वान भंडिहा फिरत जूंठि कौ तारि सिर मारि दुरि—दुरि पुकारैं । अचल हारैं नखर मचल कर गिर रहौं, खुनस करि ताहि मारत न हारैं ॥ होउ अपमान इहि भांति तो दुख नहीं सुख नहीं, सिद्धि जो देव सिर डारैं । टरत नाहिं लगन मन मगन वृन्दाटवी जतन करैं कोटि तो जतन हारैं ॥ ९० ॥

भ्रातः समस्तान्यपि साधनानि,
विहाय बृन्दावन माश्रयस्व ।
यथा तथा प्राक्तन वासना वशा-,
च्छरीरत्वापि हृदयं विचेष्टताम् ॥

दोहा—

सव साधन मन छांडि के करि वृन्दावन वास।
परालबध बस होत है दुख सुख भोग विलास ॥

तादृक कामो भवतु भगवन् येन कस्याञ्चिदेनी।
दृश्या सक्तोऽप्यहह नवाहिर्यामि वृन्दाटवीतः ॥
तादृग दम्भोऽप्युदयतु तथा हंकृतिश्चापि मे स्यात
येनाप्यास्मिन् रसमय वने रोचये नित्यं वासम् ॥

सवैया—

ऐसो कछु मन काम बढ्यौ, सुनि वाम मृगाक्षी
में प्रान वसैं दिन। ताके सरूप अनूप छक्यौ
रहौं, जाउं नहीं तजि एक पलौ छिन ॥ दम्भ
अहंकृत सो करै वास करै, परिहांस, तू ऐसी

करै जिन । यह जिय आस करौं वनवास सु त्रास नहीं उपहांस करौ किन ॥९२॥

वरं वृन्दारण्ये हरि हरि करें खर्पर भृतो ।
भ्रमामो भैक्ष्यार्थम् स्वपच गृह वीथीषु दिनशः
तथापि प्राचीनैः परम सुकृतैरत्र मिलितम् ।
न नेष्यामोऽन्यत्र क्वचिदपि कथञ्चित वपुरिदम्

कबित्त ।

खपरा सू लीने हाथ कपरा न देह साथ, वपुरा अनाथ ऐसे फिरों टूक भूख कौं । सुपच कुपच्च धाम मांगौं कन टूक टाम कहैं मेरो लैके नाम भिक्षा दे भ्रमूक कौं ॥ जथा लाभ जैसो जोग ताको तैसौ करौ भोग, दुख सुख सोग रोग कहौं नाहीं कूक कौं । अनत न जाऊं मन जाता भांति रहौं वन साधु के असाधु जन गहौं नहीं चूक कौ ॥९३॥

जरत्कंथामेकां दधदपिच कोपीन मनिशम् ।
प्रगायन् श्रीराधा मधुपात रहःकेलि लहरीम् ॥

फलं वा मूलं वा किमपि दिवसान्ते कवलयन्
कदा नेष्ये वृन्दावन भुवि दशां जीवन मयीम

कवित्त ।

सांझ लौं जुरै जो आय मूल फूल फल खाय
प्यारी पियगुन गाय ऐसी विधि जीजिये ।
ऊधरा पुरानी कंथा गूदरी कोपीन पंथा पहिर
कै ताको ग्रंथा, संथा प्रेम लीजिये ॥ अवनी
कनक चारु झलकत प्यारी, प्यारे जीवन दशा
विचारु ऐसी गति कीजिये । दम्पति हुलास हित
सम्पति विलास नित, प्रगट चकोर चित्त नित्त
रस पीजिये ॥६४॥

प्रकृत्यु परिकेवले सुखनिधौ परब्रह्मणि,
श्रुति प्रथित वैभवं परपदं विकुंठाभिधम ।
तदन्तर थिलोज्वलंजयति माथुरं मण्डलं,
महा रसमयं सखे ! कलय तत्र बृन्दावनं ॥

कवित्त।

विपिन विहारु चारु कौतुक अपार जामें, करत करत विचार मन परत न जान्यौ है। माया ते है ब्रह्म पर तापर वैकुण्ठ धर, सुखनिधि जोति हरि निगम वखान्यौ है॥ यातें अति अभिराम माथुर मही सुधाम मण्डल सरस वेद ग्रंथन में आन्यौ है। ता मण्डल, में रजधानी वृन्दावन, राधेरानी रवन रवानी वानी याते वन जान्यौ है

कदा वृन्दारण्यं श्रवन रसन स्पर्शनं निरी।
क्षणघ्राणाद्यैर्मे भवति रससिन्धु सृवादिव॥
कदा वा तल्लोको त्तर रस मदान्धो मधुपते।
र्गुणानुच्चै रुच्चैः सरसमिह गास्यामि परितः॥

कवित्त।

प्रेमरस सिन्धु कौ रूप वृन्दाटवी, होउ सोई जीव कौ जीव माई। श्रवन कौ सुजस रस कहन कौ नाम रस, परस रज दरस कौ छबि जुन्हाई॥

नासिका गंध आमोद मद माधुरी, होइगो मत्त मन वन निकाई ॥ उच्च सुर गांन रस रसिकनी प्रान कौ कहत कव, फिरैगो निधि सुपाई ॥६६॥

स्वानन्द सच्चिद्धन रूपता मति,
यावन्न बृन्दावन वासि जन्तुषु ।
तावत्प्रविष्टोऽपि न तत्र विन्दते,
ततोऽपराधात्पदवीं परात्परम् ॥८३॥

॥ सवैया ॥

रस आनन्द प्रेम की मूरति ये वासी वृन्दावन जनरे । जे जानत ये और भांति है ते नर वुद्धि विकल्ल माति मन रे ॥ कहा भयो जो विपिन बस्यो है याते और अपराध न गनरे । ह्वै है गति पै रति नहिं पावै, श्रीराधारासिक चरन रज कन रे ॥ ६७ ॥

यदैव सच्चिद्रस रूप वुद्धि
बृन्दावनस्थ स्थिर जङ्गमेषु ।

विस्या न्निर्व्यलीकं पुरुषस्तदैव,
चकास्ति राधा प्रिय सेव्य रूपः ॥८४॥

॥ अरिल्ल ॥

जे जे वन में वसत, जिते जंगम अस्थावर।
ते मूरति अनुराग, सवै उत्तम अरु पामर॥
जे जन इनको इहि विधि सुदृढ सुदेखि हैं।
हरि हां महल टहल निजु दासि करन सुख पेखि हैं॥ ६८॥

सकल विभव सारं सर्व धर्म्मैक सारं,
सकल भजन सारं सर्व सिद्धयैक सारं।
सकल महिमसारं वस्तु बृन्दावनान्तः,
सकल मधुरिमाम्भो राशि सारं विहारं॥

छप्पै।

सब सम्पति सुख सार, सार सब धर्म नबेली।
सकल भजन कौ सार, सारानिधि विपिन सहेली॥
जग महिमा कौ सार, सार मधु अति मधुताई।
आनंद सार अपार, सिन्धु सुख आनंद माई॥

सो सब रस कौ सार है, चारु विहार निहार नित
श्रीवृन्दावन के वास वासि हरषि सदा जहां रहत चित॥

दैवीवाक् प्रतिषेधिनी भवतु मे,
स्याद्वा गुरूणा गिराम् ।
श्रेणी शास्त्र विदा मिहास्तु बहुधा,
यः कोऽपि कोलाहलः ॥
त्यक्त्वा साधन साध्य जाति मखिलं,
लग्नस्तु मे राधिका ।
क्रीडा कानन वास सम्पादि मनाग्,
व्यावर्तते नो मनः ॥

छप्पै ।

सुर वानी अरु वेदं सकल वरजैं तो वरजौ ।
गुरु जो आज्ञा देहि भङ्ग करि ताहि न लरजौ ॥
ग्रन्थ पुराण जु कह्यो कह्यो उनको जो चाहै ।
साधन सिद्धहु छांड़ि परम निधि मन अवगाहै ॥
श्रीराधा कानन अति सुखद तामें मन कीहै लगन
रञ्चक इत उत विपिन ताजि भूलचलौं नहिंडग पगन॥

प्रगायन्नटन्नूद्धसन्वा वालुठन्वा ।
प्रधावन् रुदन् सम्पतन् मूर्च्छितो वा ॥
कदा वा महाप्रेम माध्वी मदान्ध ।
श्चरिष्यामि वृन्दावने लोक वाह्यः ॥

अरिल्ल ।

गावत रोवत पुलक उठौं गौ भूमि मैं । हंसत फिरौं मद अन्ध दशा रंग घूमि मैं ॥ बे सुधि मत्त अनुराग छक्यौ छबि धाम मैं । हरि हां नाहि लोकन में डीठि विलोकानि श्याम मैं ॥१॥

न लोकं न धर्मं न गेहं न देहं,
न निन्दास्तुतिं नापि सौख्यं न दुखं।
विजानं किमप्युन्मदः प्रेम माध्व्या,
ग्रह ग्रस्तवत् कर्हि वृन्दावने स्याम् ।८८।

छप्पै ।

लोक न जानो धर्म कर्म कीराति नहिं जानौं ।
देह न जानौं गेह जगत निन्दा नहिं मानौं ॥

सुख मानो नहि कौन दुःख पुनि मन न विचारौं
मूरख ह्वै के मुग्ध परम छबि विपिन निहारौं ॥
मत्त मुदित अनुराग करि ग्रहन गस्योरहौं प्रान मन।
कब वृन्दावन में होंउगो दसा वावरो एक छिन १०२

हरेकृष्ण कृष्णेति कृष्णेति मुख्या-
न्महाश्चर्य नामावलि सिद्ध मन्त्रान्।
कृपामूर्ति चैतन्य मेवोपगीतान
कदाभ्यस वृन्दावनस्यां कृतार्थः ॥

छप्पै।

कृष्ण कृष्ण यह नाम कल्प तरु भक्ति पुरन्दर।
मन्त्र सिद्ध अभिराम भजन को दया धुरन्धर ॥
अति आश्चर्य अनूप नवल नामावलि पाई।
श्रीमुख श्रीचैतन्यदेव करुणानिधि गाई ॥
ताको मन अभ्यास करि रटन गहौंगो रैन दिन।
कब वृन्दावनकी कुञ्जमें सुपाऊंगो आवरण बिन१०३

हैमस्फाटिक पद्म राग रचितैर्माहेन्द्र नालद्रुमे
र्नावारत्न मयस्थली भिरालिझङ्कारै स्फुटत्वाह्लिभिः

चित्रैःकीर मयूर कोकिल मुखनैर्नां विहङ्गैर्लसंत्
पद्माद्यैश्च सरोभिरद्भुत महं ध्यायाभि वृन्दावनम्

॥ छप्पै ॥

कहूं इन्द्र नीलमानि क्रांति भांति स्फटिकैं विविध तरु। पद्मराग कहूं कनक लसत द्रुमवय किशोर वर॥ नाना रतन जराइ जटित बहु विध सिंहासन। करत मधुप झङ्कार कुसुम अम्बुज दल आसनं॥ जहां कोकिल मोरं चकोर कोक धुनि सुनि पुलाकित रागगन। हरयौ भरयौ फूल्यौ फरयौ सु ऐसे वन को ध्याय मन ॥१०४॥

ताम्बूल पानक मनोहर मोदकादि,
रम्ये लसन्मृदुल पल्लव चारु तल्ये।
द्वारंस्थितालि भिरहो सुहृदाववेक्ष्य,
बृन्दावनं स्मर निकुञ्ज गृहैर्मनोज्ञं॥

कवित्त।

पान अरु खान मधुपान की सौंज सब भरी

रस ढरी मन रसिक माई । तल्प दल रचित सुख सुचित आनन्द में चन्द अरविन्द काल्है लुनाई ॥ कुञ्ज के द्वार सुकुंवार सहचरि खरी प्यार के दरस हरष आईं । निरख प्रिया स्याम कौ धाम संपाति रची, सुमिरि मन रूप जहां पराति झाई ॥ १०५ ॥

क्वचिद्रति विमर्दित प्रसव तल्पकैः कुत्रचित् ।
रतोपकरणान्वित प्रिय मृदु प्रसूनास्तरैः ॥
क्वचित्प्रमद राधिका मधुपति प्रवृत्तोत्सवैः ।
सदा नव निकुञ्जकैः स्मर सुमञ्जु बृंदावनम् ।६२।

॥ सवैया ॥

कहूं रति दल मलित फूल मलाति अङ्ग छवि जगमगत काम वहु सुरति कीयें । कहूं रति भोग संयोग सुख करन कौ तल्प सखि रचित हैं मननि दीयें ॥ कहूं कल केलि भुज मेलि दोऊ करत हैं, अधर रस मधुर कौ मधुर लीयें ।

मुदित भगवंत रसवंत वृन्दाविपिन निरखि
आनन्द छवि सुमिरि हीयें ॥ १०६ ॥

राधाकृष्ण रहः सुहृत् क्षितिधर,
स्योपत्यका सुस्फुरन् ।
नाना केलि निकुञ्ज वीथिषु नवो,
न्मीलत् कदम्वालिषु ॥
भ्रामम् भ्राम महर्निशम् ननु परम्,
श्रीरास केलिस्थली ।
रम्या स्वेव कदा प्रकाशित रहः,
प्रेमा भवेयं कृती ॥ ९३ ॥

छप्पै ।

गिरि गोवर्द्धन नेम प्रेम वर्द्धन पिय प्यारी ।
रस वर्द्धन तहां छेम वसत हित कुञ्ज विहारी ॥
नाना कुञ्ज समाज साज गिरिराज सु कूलनि ।
चप्पक वकुल कदम्व अम्व फूले वहु फूलनि ॥
भगवंत केलि धाम अभिराम वन क्रीडत स्यामा

स्यामा दिन । भ्रमत भ्रमत ता विपिन में विवस
होउंगो देखि इन ॥ १०७ ॥

अलं क्षयि सुखप्रदैर्युवति पुत्र वित्तादिक ।
विमुक्ति कथयाप्यलं मम नमो विकुण्ठश्रिये ॥
परंत्विह भवे भवे भवतु वार्षभानव्यथ ।
ब्रजेन्द्र तनयो वने लसति यत्र तस्मिन्रतिः॥९४॥

छप्पै ।

नहिं चाहत धन धाम ग्राम सुख सुत दुख दाता ।
नाहिं चाहत परलोक मुकति वैकुण्ठ सुज्ञाता ॥
नाहिं चाहत आनन्द ब्रह्म सुख गति कौ देवा ।
नाहिं चाहत हरि भक्ति चरन श्रीपति की सेवा ॥
खेलत जहां किशोर वर रसिक रसिकनी रासि रस ।
चाहत सोई वृन्दाटवी सु जनम जनम यह वास वस ॥

नमामि वृन्दावन मेव मूर्द्ध्ना,
वदामि वृन्दावन मेव वाचा ।
स्मरामि वृन्दावन मेव बुद्ध्या,
वृन्दावना दन्य दहं न जाने ॥९५॥

सवैया—

करखि अनुराग आनन्दघन माधुरी पुलक मन, कुलक तन रहसि गाऊं। वुद्धि कौ सुद्धि करि विमल आदरस ज्यों परसि छवि दरसि कै ध्याय ध्याऊं॥ प्रान धन जीव भगवंत वृन्दाटवी या विना और कौ नाहिं कहाऊं। प्रेम आधीश की सरीस कौ को नहीं हरखि वन ईस कौ सीस नाऊं॥ १०९॥

राधापति रति कन्दं बृन्दावन मेव जीवनं येषाम्।
तश्चरणाम्भोज रेणो राशा मेवाह माशासे।९६।

॥ अरिल्ल ॥

प्रान पियारी पिय सुरति कौ कन्द है।
श्रीवृन्दावन रस जीवन जिनहि सुछन्द है॥
जिनके चरन कमल रज वहत सहज जा ओर कौ।
हरि हां सो रज धारौं शीश नवों वा ठौर कौ॥११०॥

गृणन्ति शुक शारिकाः सु चरितानि राधापते।
स्तदैक परितुष्टये तरुलताः सदोत्फुल्लिताः॥

सरांसि कमलोत्पलादि भिरधुश्च यत्र श्रियम्।
तदुत्सव कृते मनः स्मर तदेव वृन्दावनम् ।९७।

सवैया—

पढत शुक सारिका कारिका प्रेम की केलि सुकु-
मारिका रति विहारी। तरलता वल्लरी कल्लरी
कुसुम सब मल्लरी मोद फूली निबारी॥ कमल
कल्हार भरे, सरस रस सार उर, उछलत चारु
जल युक्ति न्यारी। जग मगत धाम हित लेखि
प्रिया स्याम कौ होत विश्राम वन सुमिरि प्यारी।१११।

नाना केलि निकुञ्ज मण्डपयुते नानासरो वापिका
रम्ये गुल्मलता द्रुमैश्च परितो नानाविधैः शोभिते
नाना जाति समुल्लसत्खग मृगै नाना विलास-
स्थली। प्रोन्मीलन्मणि रोचिषि प्रियकदा
ध्येयोऽसि बृन्दावने॥ ९८॥

छप्पै।

नाना कुञ्ज अनूप रूप मन मथ मन मोहैं।
वापी ताल तमाल लता द्रुम बहु विधि सोहैं॥

खग मृग दृग छवि चारु चपल मन देखे भावै।
वानी हरख विलास श्रवन सुनि प्रान सिरावै ॥
जहां तहां मण्डल मानि खचित रचित रंग वहु
भांति सुनि । कवहिं मुदित ह्वै सुमिरि हौं ऐसे वन
छवि क्रांति गुनि ॥ ११२ ॥

यत्रैवाति रसोन्मदं विहरते मत्प्रेष्ठ वस्तु द्वयम् ।
भक्तिः कापि महा रसोत्सव मयी यत्रैव निःस्यंदते
यत्रैव प्रविशन्ति नैव निगम श्रेणी गिरां भङ्गय ।
स्तास्मिन्नेव ममास्तु धीः प्रणायिनी बृंदावने पावने

सबैया।

नवल वृन्दाटवी नवल नागर दोऊ मत्त मद प्रेम
जहां रंग भीने । श्रवत रस माधुरी भक्ति आनन्द
मय रसिक रस चाह तहां भाइ लीने ॥ रहत
आवेस परवेस नाहिं वेद कौ, खेद अरु जतन
वहु भांति कीने । रहसि रस काम अभिराम ता
धाम की, वुद्धि करि जाहिंगे भाइ चीने ॥११३॥

वाण्या गद् गदया कदा मधुपते नामानि संकीर्तये
धाराभिर्नयनाम्भसां तरु तलक्षौणी कदापङ्कये ॥
दृष्ट्वा भावनया पुरोभिल दिवस्वन्तेक भोग्यं
महोद्वन्द्वं हेम हरिन्मणिच्छवि कदानं स्ये
मुहुर्विह्वलः ॥ १०० ॥

छप्पै।

गद गद सुर अनुराग गान गुन कवहिं करौंगो।
पुलक अंसु जल नयन अयन द्रुम कवहिं भरौंगो ॥
ध्यान प्रत्यक्ष समान प्रगट ह्वै मन आभासैं।
कनक हरी मनि जोति मिथुन जव हिये प्रकासैं ॥
कौंध चौंध दामिनी दरस सिथिल होइ रहौंगो।
चकित छटा छवि रूप कै चरण त्रित्रस ह्वै गहौंगो ॥

वृन्दारण्य निकुञ्ज सीमनि वसन्,
प्रेमातुरश्चिन्तयन् ।
स्व प्राणैक धनं किशोर मिथुनं,
द्रक्षाम्य कस्मात्कदा ॥

श्यामाः काश्चन चन्दिका रसमयी,
गौरीश्च काश्चिच्छटाः ।
पश्यामि शृणुयाञ्च शीत मधुराः,
काश्चिंन्मिथो वाक् सुधाः ॥ १ ॥

सवैया—

नवल नव कुञ्ज में प्रेम आतुर, विवस होइ कव देखि हौं मिथुन माई । जीव धन प्रान दोऊ जान मन जानकी, वनक वानिक वनी रस लुनाई ॥ एक छवि चन्द्रिका स्याम अभिराम दुति, गौर छवि चन्द्रिका राति जुन्हाई । देखि कै नैन सुख श्रवन के वैंन मन, होइगो चैंन निधि परम पाई ।११५।

बृन्दारण्ये किमपि जनता दुस्प्रवेशं प्रदेशम् ।
गत्वा प्रोच्चैर्निजदयितयो र्नाम जल्पन्नुदश्रुः ॥
अत्त्यन्तार्त्या विकल विकलो दिव्य मूर्त्या कयापि
श्रीश्वर्याज्ञा कर मृग दृशा,
वाक् सुधा स्वासितः स्याम् ।२।

सबैया।

अगम वृन्दाटवी सुगम भई दयावल्ल पाइ करि
ताहि सुर उच्च गाऊं। श्रवत दृग वारि न संभार
उच्चार यह कहां सुकुवाँरि रट यहै लाऊं ॥ रति
रमा की स्वामिनी वचन प्रेरित सखी देखि ढिग
आइ हैं मोद पाऊं। विकल आचेत हौं कहैं
उठ चेत यह वचन सुनि हेत भगवंत सिरनाऊं।११६।

एतत्कारुण्य पुञ्जम् कति दिन कलित स्वाश्रय
प्रौढ राधा कृष्णांघ्रि द्वन्द्व गूढ प्रणय भव
रसाभ्यञ्जितो दार दृष्टम् ॥ श्रीमद्वृन्दा-
वनम् मे निज परम चमत्कारि रूपेण सान्द्रा-
नन्दौघ स्यन्दि व प्रोच्छलित मधुरिमै कार्ण-
वेना विरास्ताम् ॥३॥

सवैया—

दया कौ पुञ्ज वृन्दाटवी कुञ्ज में उठत छबि
मधुरिमा लहरि भारी। कल्प तरु काम अभि-
राम पद जुगलवर समझि गह्यौ मनहि यारी ॥

प्रेम रङ्ग प्यार उदगार अञ्जन कियो माधुरी विपिन को तब निहारी। सिन्धु आनन्द कौ मधुरिमा मधु लिये प्रगट है चित्त में बन बिहारी॥

कदा सुदृढ भावनो दित निजेष्ट रूपम् मना-
गपि स्मृत शरीर केर्नहि रसे प्रविष्टोऽद्भुते।
क्षणम् किमु मुहूर्तकम् किमथ याम मे वा-
स्थितोवहिर्दगपि मुग्धवत् व्यवहरामि बृन्दावने॥

॥ सवैया ॥

होइगी कबहिं यह सुदृढ जिय भावनारूप निज इष्ट कौ मन प्रकासै। सघन वा रूप की माधुरी लगन में कछुक सुधि देह की मन अभासै॥ होइ विक्षेप वा रूप सौं चित्त कौ विरह की दाह जब तनहिं त्रासै। घरी पल याम या धाम में वाम गति फिरौं छबि बावरो मगन आसै॥११८॥

नान्य द्वदामि न श्रणोमि न चिन्तयामि,
नान्यद्व्रजामि न भजामि न चाश्रयामि।

पश्यामि जाग्रति तथा स्वपनेऽपिनान्यद्
श्रीराधिका रति विनोद बनं विनाहं ॥

सबैया।

और न कहौं सुनौं नहि औरहि ध्यान करौं नहिं और और कौ। और न भजौं सजौं नाहिं औरहिं नहीं आसरौ और और कौ ॥ भगवन्त पौरि न जाउं और कीं गेह बिकानो बड़ी ठौर कौ। चलत फिरत सोवत और जागत देखौं विपिन विहार गौर कौ ॥१६॥

किं माम् खेदयसे विमुञ्च वसनं तल्पोत्त-
मेऽस्मिन् सुखेणागत्य स्वपिहि त्यज त्यज
भुजं श्लिष्यामि कान्ते सकृत ! आः किं
निर्दय मुञ्च मुञ्च न किम प्यापीडये राधिका-
कृष्णालाप मिमं कदानु श्रणुयामवृन्दाटवी
कीरतः ॥६॥

सवैया—

गह्यौ भुज मूल दुकूल किशोरी। आतुर श्याम

सुकाम किये बस छांडि लडैती कहैं मुख मोरी ॥ रहे अरगाइ सुभाइ लिये कह्यौ पौढिये सेज सुधा निधि गोरी । उतै कहैं मुख्न इतै कहैं प्याइ वढ्यौ चित चाइ आलिङ्गित भोरी ॥ सुन्यों मुख कीर कालिन्दी तीर गह्यौ भुज मूल दुकूल किशोरी ॥२०॥

कदावा स्वच्छन्दं दिन रजनि वृन्दावन वने-चरन्नेकः स्वस्त्यदूभुत नवनिकुञ्जालिषु विशन्। अकस्मादे वा लौकिक मधुर कैशोर सुवयाः इतोनत्वं याया इति मृदु गिरा वारयतिमाम् ॥

अरिल्ल

कुञ्ज सुधारस पुञ्ज सजी बन धाम में । तहां हरखत फिरौं सुछन्द निसादिन नाम में॥ कोऊ वस इक कृपाल सखी तहां आइके । हरि हां आगे तू जिन जाइ कहेगी धायकें ॥२१॥

कदा वा तृष्णाकः सिथिलित समस्त व्यव-हृतिस्त्यजन् दीर्घ श्वास कथमपि गृहीतैक कवलः।

सदा जाग्रत्प्रायःक्षरा मुदित तन्द्रोऽति मधुरम-
तदा लोक वृन्दावन भुवि निज प्रान मिथुनम्॥

छप्पै।

प्रेम दस्य अनुराग मगन होइ मूक रहौंगो।
छांड़ि सबै व्यवहार उसांस न सांस गहौंगो॥
एक ग्रास कहूं खाइ रहुंगो जागत ऐसे। आरत
घन की प्यास पुकारत चातक जैसे॥
छिनक झपट दृग मूंदि कै लीन होउँ जब प्रेम
भर॥ कब देखौं प्रिय नागरी श्रीवृन्दावन अनु-
राग कर॥२२॥

अकस्मा देकस्मान्नव ललित कुञ्जाद्वत वहि-
भवात्स्मित्वा नव्यं तरुण मिथुनं लौकिकमिव।
गंतो दूरं दृष्ट्वा पुनरथ निवृत्यस्व दपितौ-
विलोक्यस्यां वृन्दावन भुवि महाप्रेम विकलः॥

सवैया—

होउंगो ठाढो निकुञ्ज के द्वारे हौं देखौंगो एक
अचानक जोरी। सुन्दर रूप अनूप जुवा कोउ

राजकुवांर किशोर किशोरी ॥ भ्रम कौ निरवार विचार कियौ फिर देखौं निहार ये दंपति कोरी। आनि लखे दुलखे ये तौ मोहन सोहन स्याम सुधा निधि गोरी ॥ २३ ॥

कदा पूर्ण ज्योत्स्ना धवले रास वलये-
चरन्नेको बृन्दावन पति विलास स्मृति परम्।
अकस्मादानंदाम्बुधि लहरि कोलाहल मिव-
ध्वनिम् दिव्यं वेणोर्व्वलय रसनादेश्च श्रणुयाम्

कवित।

ऊजरी शरद राति फूले द्रुम जल जाति फिरौंगो पुलकित गात देखत उजियारी कौ। सुमिरत रास लास बृन्दावन पति विलास हरख हुलास हित प्रीतम पियारी कौ॥ परैंगी भनक कान किंकिनी वलै सुथान सुरताल तान गान वैंनरौ विहारी कौ। धुनि की तरंग प्रेम वारिद अनंग रंग कौतुक अभंग रास दूलह दुलारी कौ ॥ २४ ॥

कदावा कस्यापि स्फुट नव कदम्बस्य विटपे—
स्फुरद् गोपीभर्त्तुः किमपि कलये स्मेर वदनम्।
कदा श्रीराधायाः कुसुमचय लोलञ्च ललितम्-
करम् वीक्षे वृन्दावन भुवि लतौघे क्वचिदपि॥ ११

॥ अरिल्ल ॥

फूल्यौ तरुण कदम्ब ललित अति सोहनो।
तहां बाढ्यौ नव रंग नवल मन मोहनो॥
ताडिग लता समूह सु वीनत फूल कौ।
हरि हां कब देखौ कर करज प्रिया पट कूल कौ॥२५

इदं मे किम् भावि द्रुत कनक गौरच्छविहरि-
न्मणि स्यामं धामद्वय मिह मिथोऽम्सार्पित भुजम्।
निरीक्षे तत् स्मेरं मम बहु विध प्रेम विसृतम्-
सुखम्पश्चाच्छाया द्वय मथ पुरो मूर्च्छपतिमाम्॥ १२

सवैया

कनक रुचिर धाम अभिराम तन कामिनी हरन
मन स्याम घन रंगभीने। ललित मद गलित
रस वलित नव नागरी नवल दोऊ अंस पर भुजा

दीने ॥ प्रेम मधु माधुरी अंध मोहि देखि करि आइहैं निकट दोऊ हरख लीने । आपने रूप भरि तेज की क्रांति करि मूर्च्छित करहिंगे मोहि प्रवीने ॥२६

अति प्रेमोत्कल्यात क्षितिषु विलुठत् मे वपुरिदं-
करेण स्पृष्ट्वा मां विलुठयति राधा प्रिययुता ।
अहो वृन्दाख्येऽद्भुत महिम सीमन्यपि सुदु-
र्घटाशा काप्येका समुदयतिहा किं न भविता ॥१३

सवैया

प्रेम की चाह उत्साह अति मन बड़ी विकल ह्वै धरनि पर परौं ऐसैं । हिरन सुर गांन धुकि त्रांन की प्रांन ज्यौं जल विना मीन गति छीन जैसैं ॥ कुंवर पिय लाड़िली आपने हाथ निजु छुवहिंगी आनि मोहिं भृत्य कैसैं । अगम वृन्दाटवी दुर्गम यह वासना चंद अरविंद गति होय कैसैं ॥२७॥

कदावा कालिन्दी तट निकट वृन्दावन लता-
निकुञ्जान्तः सुप्तं तदति सरसं प्रेष्ठ मिथुनं ।
मिथो गाढाश्लिष्टं मृदु मृदु मया लालित पदं-

मुदा वीक्ष्ये स्वप्नेऽप्यहह सुख निद्रां गतमहम् १५

सवैया

कालिन्दी के तीं निकुञ्ज लतानि में सेज रची नव रंग नवेली। सोइ गये रस भोइ मनोरथ पांय पलोटौं हौं जाइ सहेली ॥ पौढ़े दोऊ रति संगम में रस रंग अलिंगन लाड गहेली। हौं अपनों सुपनों हित देखि कें कौतिक में धुकि जाऊंगी हेली ॥ २८ ॥

महाश्चर्या नंत स्व महिम वलादेव सकला-
धमस्याप्याशानां व्यति करमसम्भाव्य मपिमे।
कदा वृन्दारण्यं स्व वसतिकथा मात्र प्रवहत्-
कृपा पूरं सम्पूरयतु परतोऽप्यर्ब्बुद जनः ॥१५॥

सवैया

प्रेम रस सार कौ सार वृन्दाटवी अगम अपार कछु कह्यौ न जाई। आप वल जगत वल लोक लोके सवल सफल यह कामना हो न माई ॥ मिलन की आस औ वास वृन्दाटवी

बड़ौ हौं अधम वन सुगति पाई । जिनन यह कह्यौ हौं वसौं वृन्दाटवी कहत यह वचन में सुगति पाई ॥ २९ ॥

स्वकर्मस्रोतोभिः सतत मभित श्चालित ममुम-
प्रभो जीवं यत्र क्वचिदपि न यात्यन्त विवशम।
परन्त्वे तावन्मे भवतु भव दुःखार्दित हृदो-
ऽप्य विश्रान्तं बृन्दावन पद पैर वास्तु रसना॥ १६

सवैया

आपने कर्म वस जीव भरमत फिरत नर्क अरु स्वर्ग जैसी कमाई । कहूं भयो लोक लोकेश कहूं नृपति नर, कहूं भयो रंक गहै दीनताई ॥ हौं जु संसार आसार के भय दुखित गह्यौ गैं आसरौ यह बड़ाई । रसन रसनाम वृन्दाटवी रटत रहौं हरैगो तिमिर वन शशि जुन्हाई ॥३०॥

न सत्याख्ये लोके स्पृहयति मनो ब्रह्म पदवीं-
न वैकुण्ठे विष्णो रपि मृगयते पार्षद तनुम् ।
परं श्रीमद् वृन्दावन सरस भावोत्सव वताम-

निवासे धन्यानां सुवहु कृमि जन्मापि मृगयते॥

छप्पै।

ब्रह्म लोक पद लोक लोक पुनि सत्य न चाहौं।
मृत्युलोक पुनि लोक लोक और न अवगाहौं॥
श्रीपति सुख के करन हरन भै जग के ज्ञाता।
देहिं पारिषद सुतन होंउ नहि ताके दाता॥
श्रीवृन्दावन रसमाधुरी जिनके जीवन प्रानधन।
तिनके गृह में दीजिये जनम रंकोऊ कीट तन॥

श्रीमद्वृन्दाविपिन कुसुमा मोद वाही समीरो-
यस्मिन् देशे सरति तदवाच्छिन्न कृष्णाप्लुतो वा।
येषां बृन्दावन मनु सक्तत् ग्रीवया सन्नतं वा-
तत्रै वास्तां मम खलु जनि हन्त तेषां गृहेऽपि

छप्पै।

श्रीवृन्दावन की गंधि संधि सौरभ सुख सरसति।
पवन गवन लै रवन जाइ जिहि ठौरन परसति॥
धनि वे देस सुदेस तरुणजा निकट निवासी।
नित्य करत जल पान मिलैंगे विपिन विलासी॥

भगवन्त एक वार जाको सहज श्रीबृन्दावन को धुक्यौ सिर । तिनके गृह में दीजिये जनम रसिकनी रसिक वर ॥३२॥

ममापिस्या देता दृश मिह दिनं किन्तु परमम्
यदा बृन्दाटव्याः कथमपि कृत स्पर्शन मपि ॥
अहो देह दूरादपि सम वलोक्यान्त जनुषाम् ।
मुहुर्दन्यंमन्ये धरणि पतितः स्याम्कृतनतिः ॥

अरिल्ल ।

अन्तिज और जे नीच बसत जे बृन्दावन में ।
होत दरस रज परस सुधा वन उनके तन में ॥
तिनको दरसन पाय कहौंगो धन्य है । हरि हा
इनको नाऊं सीस गुनो ये मन्य हैं ॥३३॥

यदपि च मम नास्ति श्रीलवृन्दावनीये ।
महिमनि मसमोर्द्धं हन्त विश्वास गन्धः ॥
यदपि च मम तस्मिन्नास्ति वासैष नाऽपि ।
प्रसरतु मम ताद्दश्यैव वाणी तथापि ॥२०॥

सवैया।

उपमा न दीनी जाय पटतर कौंन कोऊ आय कौंन की समान कीजै वृन्दावन बन की ॥ होत नहिं आहिलाद महिमा अगाध सुनि वडोई असाध रुचि रञ्जक न मन की ॥ ताको विश्वास वास सुनतहि लागे त्रास, निपट निरास गति दसा मेरे तन की। ऐसी मेरी होउ बानी वृन्दावन गामी नामी, वृन्दावन धाम धामी रट गहौं पन की ॥३४॥

अचैतन्य प्रायं जगदिद महो सर्व विदपि-
प्रथीयः श्रीबृन्दावन महिम वीथी जडमतिः।
अहो भ्राम्य दृष्ट्या विविध सदसद्वर्त्मसुतथा
न पूर्णाःतस्यैव ध्रुव मिह निषेवे पद रजः २१

छप्पै।

ज्ञाता धर्म सर्वज्ञ तत्ववेत्ता अरु ज्ञानी। निस्पृह परम उदास मगन मन हरि पद ध्यानी ॥ जग संसार असार कर्म वस भ्रमत जु जित तित।

दग्ध आसा व्यौवहार घटी नहिं तृष्णा परमित ॥
यह कौतिक जग देखिकर जड ह्वै रहै विहारबन।
हौं सेवत तिनकी चरण रज दाता आनंद प्रेम गन ॥३५॥

हा वृन्दावन हा महारसमय प्रेमैक सम्पान्निधे-
हाराधा रतिनागर स्मरकला साक्षिन्मदेकप्रिय ।
हा रासेश्वर विश्वमूर्छन लतावल्ली खगाद्यद्भुत-
श्रीमन् हा प्रकृतेःपरादपिपरं त्वंमे गतिस्त्वंगतिः॥

छप्पै।

रस में रस कौ सार प्रेम रस संपति लीने ।
रस निधि रस आगार चारु रस दंपति दीने ॥
कुवंरि कुवंर निज केलि कला कौतिक के साखी ।
लताफूल फल मूल ललित छवि जात न भाखी ॥
ब्रह्मादिक जहां मगन मन पुरुष प्रकृति ते धाम पर ।
श्री वृन्दावन रस माधुरी मम रति गति हो कल्पतरु

नमोस्तु वृन्दावन सुन्दराभ्यां,
नमोस्तु बृन्दावन विभ्रमाभ्यां।

नमोस्तु वृन्दावन जीवनाभ्यां,
नमोस्तु वृन्दावन नागराभ्याम् ॥२३॥

छप्पै।

वृन्दाबन में बसत रसिक दोऊ रस की मूरति ।
तिनको करौं प्रणाम धाम रस आनंद पूरति ॥
वृन्दाविपुन विलास विवस ताको सिर नाऊं ।
जे जीवन तन प्रान जान जस तिनको गाऊं ॥
दोऊ जन वन घन रहस्य की जान निपुन हैं
जातरासि भगवन्त तिनका चरण रज ज्यौं चकोर कौं जोति शशि ॥ ३७ ॥

नमोस्तु वृन्दावन सत्कृपाभ्यां,
नमोस्तु वृन्दावन सद्रसाभ्यां ॥
नमोस्तु वृन्दावन पूर्णताभ्यां,
नमोस्तु वृन्दावन गोचराभ्याम्॥२४॥

छप्पै।

फूल पात जल जात मूल फल जिनको सेवत
तिनको। करौं प्रणाम विपिन जिनको भरि खेवत

तिनको पुनि परणाम विपिन करि जे सुख पावत। सब विधि पूरण काम विपिन जिन लाड़ लड़ावत॥ जे वृन्दावन में पाइये रहत निरन्तर कुञ्ज घर। वार वार सतवार सत नमो नमो करां धरनि पर॥ ३८॥

वृन्दारण्योत्तमं नास्ति नास्ति मत्तोऽधमंकचित
राधा नाम्नः प्रभावेण यदिस्याम्मेलनं तपोः।

सवया—

इन सौं न उपकारी मोसौं न खल है॥

अमल कमल कल कामना कौ देत मेरे जिय क्रोध लोभ माया ही मल है। वृन्दावन वास आस बृन्दावन सुखरास कैसे पाऊं हौंतौ तुच्छ वन ऊंचौ फल है॥ पूरन करन काम आनन्द धाम सुनि राधा राधा नाम सोइ भगवन्त केवल है। प्रबल सुनाम प्यारी भारी सदा हितकारी इनसौं न उपकारी मोसौं न खल है॥३६॥

श्रीमद्बृन्दावनेश्वर्य्याः सकृन्नामैक मङ्गलम्।

सर्वाश्चर्यानन्त शक्तिर्मुखे विजयतां मम ।२६।

छप्पै ।

रति मंगल यह नाम सहज मंगल सुख दाता ।
पिय मंगल हित काम रहसि मंगल कौ ज्ञाता ॥
मंगल भाव प्रभाव हरष मंगल छवि हेली । राम
राम अनुराग मदन मंगल अलवेली ॥ अति
अनन्त ऐश्वर्य्य सुनि भगवन्त मंगल बन बसत ।
मंत्र नाम यह स्वामिनी, एक वार जिहि मुख
रसत ॥ ४० ॥ भाषा कर्ता की उक्ति

छप्पै ।

बन विचित्र बनराव भाव बन विचित्र किये चित्त ।
तिनके होत प्रकास हिये हित प्रेम परम वित ॥
जिनके प्रीत प्रतीत सुदृढ वन की मन आई ।
बिन श्रम विपिन प्रताप हरषि सहचरि तिन पाई ॥
भगवन्त एक भरोसे विपुन के रहै निपुन जे धीर धर ।
आधि व्याधि चिन्ता भजन मिटि गई आरति पीर
पर ॥ १४ ॥

प्रथम दया पर मोद मोद जिहि मन कौ दीनौं।
श्री गुरु श्रीहरिदास दया मैं भाषा कीनौं ॥
श्रीमाधौ मुदित प्रशंस हंस जिन रतिरस गायौ।
तिन कौ हौं निज अंस रहसिरस तिनते पायौ ॥
इष्ट चन्द गोविन्दवर श्रीराधा जीवन प्रानधन।
हित सङ्गी रङ्गी भजन सु कहत सुनत कल्यानवन

कुण्डलिया।

भाषा साखा सोई बचन कोई दीरघ कोई नून।
तामें दोष न हूजिये होइ भक्ति करि सून ॥
होइ भजन करि सून वहै जिन रहासि न जान्यौं
कहा भयो भगवन्त निगम सरसुनी बखान्यौं ॥
वह सुन्दर वह मृदुल सुनि चित्र विचित्र जु पद
रचन। जामें गायौ रहासि वन भाषा साखा सोई
वचन ॥४३॥

दोहा।

मम माता दाता भजन श्रीवृन्दावन वास।
सोये श्रीगोविन्दजू माधौ मुदित हुलास ॥४४॥

कुण्डलिया।

यह बिनती भगवन्त की सुनहु रसिक दै चित्त।
अपनो मोकौं जानि के दया करहुगे नित्त॥
दया करहुगे नित्त कहौं यह भृत्य हमारौ।
जिहि तिहि भांति निरन्तर यह रहौ वन में डारयौ।
श्रीवृन्दावन आनंदघन अति रस में रसवन्त।
हौं कदर्य्य जिय डरत हौं यह बिनती भगवन्त॥

दोहा।

संवत दसपै सात सै अरु सात वरष है जानि।
चैत मास में चतुर वर भाषा कियौ बखानि॥

पद राग रागकली।

रसिक सौं बातें लाड लडोहीं।
हँसि हँसि जात समात हिये में, फिर चितवत पिय सोंहीं। करत विहार उदार सकल अंग, प्रेम विबस ललचोंहीं॥ श्रीभगवन्त मुदित लडावत छिन छिन छैल दसा गहि गौंहीं॥४६॥

इति श्री अनन्य रसिक नृपति श्री श्रीप्रवोधानन्द सरस्वती पाद कृत मूल व रसिकाभरन श्रीभगवन्त मुदित कृत भाषा श्रीश्रीमद्वृन्दावन महिमामृतशतक सम्पूर्णशुभंमस्तु

नाना मार्ग रतोऽपि दुर्मति रपि,
त्यक्त स्वधर्म्मोऽपिहि ।
स्वछन्दा चरितोऽपि दूर भगवत्,
सम्वन्ध गन्धोऽपिच ॥
कूर्वन् यत्रच काम लोभ वशतो,
वासं समस्तोत्तमं ।
या या देव रसात्मकं पद महं,
तन्नौमि वृन्दावनम् ॥५७॥



३९ पेज का रहा हुआ ५७ नं० का श्लोक।

* श्री गौरांग नित्यानन्द *

॥ श्री निकुंजेश्वरी जयति ॥

श्रीगुरु महिमा प्रारम्भः



दोहा।

श्री चैतन्य मन हरन प्रभू श्री नित्यानंद संग ॥
श्री अद्वैत प्रभु परिषाद जैसे अंगी अंग ॥ १ ॥
गदाधर वासादि वर गौर भक्त जे आहिं ॥
इनके पद सुमिरन करे सर्व विघ्न मिट जांहि ॥
श्री गुरु महिमा चाहत कह्यौ किमिसो कही जुजाइ।
श्रीगुरु देवन के देव हैं चरन कमल चित लाइ ॥
गुरु रस जस निधि अति वड़ो कौंनसु पावै पार।
दुरगम हूं दुरगम लगैं दुरलक्ष अमित अपार ॥
नेति नेति जाकौ रटैं आगम निगम पुरान।
सोई देतअति कृपा करि श्री गुरु सम को आन ॥
सहचरि प्यारी पीय की निज करुणा वपु धार।
प्रकटाति श्रीगुरु रूप धरि धरनी विपिन विहार ॥

निज सुख सुख जो छांडिदिय पर हित हेत जु लागि
ऐसे गुरु जिन नाहिं भजे ते नर अधम अभागि ॥
यातें श्रीगुरु गुरु रटौ जपौ श्रीगुरु नाम ।
ध्यान करौ श्री गुरु चरन गुर देखौं अठ याम ॥
गुरु सोवत गुरु जागियत गुरु सु उठे गुरु बैठ ।
गुरु चलत गुरु फिरत मैं गुरु वल गुरु दल ऐठ ॥
गुरु अति ज्ञान विज्ञान गुरु गुरु धारणा गुरुध्यान ।
गुरु सु भक्ति गुरु उक्ति मम श्रीगुरु जुक्ति प्रधान ।१०।
गुरू जोग गुरु भोग है गुरु सुख गुरु सम्पत्ति ।
गुरु गुन गुर्वित गुरु गुनौ उर गुरु गुरुवर मुक्ति।११।
अष्ट अंग सौं दंडवत प्रथम कियो परणाम ।
जगन्नाथ करि हैं गुरू सव विधि पूरण काम ॥१२॥

चौपाई ।

श्रीगुरु देव चरण चित लावौं ।
हृदय ध्यान धरि शीश नवावौं ॥१३॥
करि अस्तुति परिकरमा दीजै ।
तन, मन, धन सव अर्पण कीजै ॥१४॥

गुरु है व्रम्हा सुर तेंतीसा।
गुरु विन को जानै जगदीशा ॥१५॥
गुरु हैं नेम धर्म सव केरा।
गुरु हैं आवा गमन निवेरा ॥१६॥
गुरु हैं ज्ञान ध्यान मम स्वामी।
गुरु हैं सवके अन्तर्यामी ॥ १७॥
गुरु विनु सव सूझत है धंधा।
गुरु विनु जग भटकत जिमि अंधा ॥१८॥
गुरु हैं सव तीरथ व्रत पूजा।
गुरु विनु और नाहिं हरि दूजा ॥१९॥
गुरु त्यागी जु और गुण गावै।
सो सूधौ यमपुर कों जावै ॥ २० ॥
श्रीगुरु मन्त्र हृदै नहिं धरहीं।
सहज जाइ नर्कन में परहीं ॥२१॥
गुरु मंत्रन कौ करै जो त्यागा।
निकसि कोढ सो मरै अभागा ॥२२॥

सात जन्म कोढ़ी कौ पावै ।
गुरु निन्दा जो सुनै सुनावै ॥२३॥

प्रमाण चाड़क्य नीति कौ ।

एका क्षरं प्रदातव्यं योगुरुं नाभि वन्दते
सत योनिं श्वान भुङ्क्त्वा पुनचंडालोभिजायते

चौपाई ।

गुरु निंदा जाके मुख होई ।
ताकौ मुख देखौ मति कोई ॥ २५ ॥
गुरु निन्दक का मुखडा जारौ ।
आप मरौ निन्दक कौ मारौ ॥ २६ ॥
गुरु निन्दक जो वली दिखावै ।
ता छिन कान मूंदि उठि जावै ॥२७॥
गुरु निन्दा जो सुनै सयाना ।
शीशा औंटि भरै तिहि काना ॥२८॥
तव यह दोष मिटै वहु भारी ।
व्यास वचन सुनि साखि हमारी ॥२९॥

आचार्य्यं मां विजानीयान्नावमन्येत कार्हिचित्।
न मर्त्यबुध्या सूर्यत सर्वदेवमयो गुरु रिति ॥
श्रीमद्भागवते ॥

दोहा।

श्रीगुरु देवहि जानियैं हैं निज कृष्ण सरूप।
अंतर जामी भक्त वर ये विचित्र रूप अनूप ॥ ३० ॥
साखी स्मृति और शास्त्र सब आगम निगम पुरान।
श्रीव्यास वचन सुनि मानि है हरि गुरु एक समान ३१

चौपाई।

हरि रूठैं तौ गुरू बचावै।
गुरु रूठैं कहूं ठौर न पावै ॥ ३२ ॥

प्रमाण

हरि रुष्टे गुरु स्त्राता, गुरू रुष्टे न कश्चन।३३।

चौपाई।

जिमि नारद धीमर गुरु कीना।
पै मुख कहत श्राप हरि दीना ॥ ३४ ॥
कंपित वहुत देव मुनि भयेऊ।
अति आतुर धीमर पहं गयेऊ ॥ ३५ ॥

सुनि वृत्तान्त उपाय वताया ।
चौरासी तैं तुरत वचाया ॥ ३६ ॥
गुरु विनु सकल क्रिया जग माहीं ।
भक्ति मुक्ति फल उपजत नाहीं ॥ ३७ ॥
तातै प्रथम गुरु कौ मानैं ।
गुरु कौ वचन हृदय में आनैं ॥ ३८ ॥
निस दिन गुरु कौ ध्यान धरीजे ।
गुरु मंत्र जप सदा करीजै ॥ ३९ ॥
गुरु के वचन मानिये प्यारे ।
गुरु गोविंद जानौं मति न्यारे ॥ ४० ॥
गुरु पद जलजु पियौ मन लाई ।
गुरु उच्छिष्ट पाये गति भाई ॥ ४१ ॥
श्रीगुरु पद रज नित करि सेवा ।
गुरु गोविंद एकही देवा ॥ ४२ ॥

प्रमाण

दोहा ॥

गुरु गोविंद दोऊ खरे काके लागौं पाय ।
वलिहारी विन गुरुन की गोविंद दिये वताय॥४३॥

भक्ति भक्त भगवंत गुरु चतुर नाम वपु एक ।
इनके पद वंदन किंये नासैं विघ्न अनेक ॥४४॥

पद ॥

जे कोऊ गुरु गोविन्द नाम गुन गावत गुनत
विचार विचर ॥ १ ॥

दोहा ।

जप पूजादि योग क्रिया करै अनिच्छित जान ।
अफल होय ऊगै नहीं बोवो वजि पखान ॥४५॥

कवहुंक गुरु जो झूठ वखानैं ।
तऊ शिष्य सांचे करि मानैं ॥ ४६ ॥
गुरु सौं उलटि जवाव न दीजै ।
संपति जाय पुन्य फल छीजै ॥ ४७ ॥
जो गुरु होय काम लवलीना ।
क्रोधी कुटिल जाति मति हीना ॥ ४८ ॥
लोभी लंपट कपटी क्रूरा ।
तऊ शिष्य जानै गुरु पूरा ॥ ४९ ॥
कोढी कृपण कुरूप कुजाना ।

कठिन मोह में क्रांती ।
तऊ शिष्य जानै गुरु सांती ॥ ५१ ॥
गुरु सौं सन्मुख वाद न ठानै ।
गुरु कौ इष्ट मंत्र सम जानै ॥ ५२ ॥
गुरु सौं परम प्रेम पद लेई ।
गुरु सेवा मिथ्या ना देई ॥ ५३ ॥
गुरु सौं विमुख सो अति अज्ञानी ।
विषै बासना सौं रुचि मानी ॥ ५४ ॥
और सबै अप लच्छन पावै ।
तऊ ताहि परमेश्वर भावै ॥ ५५ ॥
कामी कृष्ण वामन अति लोभी ।
क्रोध नृसिंह गुरु वर वपु तोभी ॥ ५६ ॥
गुरु जो बात अटपटी भाखैं ।
शिष्य सदा मर्यादा राखैं ॥ ५७ ॥
उत्तर फेरि कर कछु नाहीं ।
हरि गुरु इक लेखैं मन माहीं ॥ ५८ ॥

दोहा।

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु शिव पार ब्रह्म गुरु देव ।
गर ते और नँ दूसरा जगन्नाथ गर देवँ ॥ ५६ ॥

प्रमाण

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥६०॥

चौपाई

श्रीगुरु चरण जहां कहुं आवैं ।
कौनौ भांति शिष्य जो पावैं ॥ ६१ ॥
त्रिविध प्रणाम तिहि छिन करै ।
जैसे लकुट हाथ तै परै ॥ ६२ ॥
गुरु प्रणाम तें दुख वहु नासैं ।
गुरु प्रणाम सुख सकल प्रकासैं ॥ ६३ ॥
गुरु प्रणाम जमपुर नाहिं जावै ।
गुरु प्रणाम पूरण गृह पावै ॥ ६४ ॥

दोहा।

रतन अमोलक मंजु है विविध भांति के चीर ।
सर्वस दे कर कीजिये गुरु प्रसन्न माति धीर ॥६५॥

चौपाई

गुरु माहिमा कौ को कहि आवै ।
शेष महेश पार नहिं पावै ॥ ६६ ॥
शिव सनकादिक मुनि शुक देवा ।
नारद सारद उहै न भेवा ॥ ६७ ॥
मैं किमि कहौं महा मति हीना ।
जो कछु सुनी सोई कहि दीना ॥ ६८ ॥
जगन्नाथ तीनो पुर माही ।
गुरु बिन काहू की गति नाहीं ॥ ६९ ॥
गुरु आवत आगे ह्वै लावै ।
विदा होत पहुँचावन जावै ॥ ७० ॥
सरधा सहित करै परणामा ।
जो चाहै हरि पुर विश्रामा ॥ ७१ ॥
जाय गुरु आसन पर वैठैं ।
सोवत सन भवन में पैठैं ॥ ७२ ॥
ता छिन गुरु आगे तै टरियै ।
आज्ञा होय तौ आनन्द करियै ॥ ७३ ॥

ध्यान मूल गुरु मूरति जानै ।
पूजा मूल गुरू पद मानै ॥ ७४ ॥
मन्त्र मूल गुरु वाक्य विचारै ।
भक्ति अमल गुरु वदन निहारै ॥ ७५ ॥
नित उठ गुरु पादोदक पीवै ।
गुरु उच्छिष्ट पाय नित जीवै ॥ ७६ ॥
गुरु मूरति कौ करियै ध्याना ।
गुरु चरित्र नित पढ़ै सुजानः ॥ ७७ ॥
गुरु सौं वाद करै नर कोई ।
हुंकर तुकर कै जीतै जोई ॥ ७८ ॥
अगम घोर जंगल में जावै ।
विकट ब्रह्म राक्षस गति पावै ॥ ७९ ॥
श्रीगुरु जोर्नै पदारथ होई ।
गुरु समान जानौ नाहिं कोई ॥ ८० ॥
तिनका एक कहे विनु हरै ।
कुंभी पाक नरक में परै ॥ ८१ ॥

दोहा ॥

पीठ चिन्हपद पावडी आसन सेज सुजान ।
वस्त्र नीर छाया गुरु निलंघनी गुरु समान ।८२।

चौपाई ।

गुरु की वस्तु गुरू सम होइ ।
यामै भरम करौ जिन कोइ ॥ ८३ ॥
गुरु सम मान वस्तु को कीजै ।
धरि विश्वास प्रेम रंग पीजै ॥ ८४ ॥
गुरु गुरु वस्तु अभेद सरूप ।
तव गुरु कृपा लखै निज रूप ॥ ८५ ॥
वर्ण एक सव कहि गुरु लीना ।
श्रवण लागि कै जो गुरु दीना ॥ ८६ ॥
आछे आछे महल बनाई ।
श्रद्धा सहित गुरुहि पधराई ॥ ८७ ॥
औरहु असन वसन वर चीरा ।
लैकर भेंट करै गुरु धीरा ॥ ८८ ॥
जो कछु वस्तु भली करि जानै ।
गुरुहिं अर्पि मन अति सुख मानै ॥८९॥

तन, मन, धन अपनौं कछु नाहीं ।
गुरु गुर सुमिर लेहु मन माहीं ॥ ६० ॥
भेंट भक्ति सौं आगे धरिये ।
और सकल सामग्री करिये ॥ ६१ ॥
मेवा मधुर मिष्ट पकवाना ।
गुरु जेंवैं जेंवैं भगवाना ॥ ६२ ॥

दोहा ।

गुरु जन हरि जन गुरहरी विप्र सु पंडित जांन ।
इन दर्शन हित भेंट लै कीजै सरस पयांन ॥६३॥
जो लालच वस देंय नाहिं महा पतति परवानि ।
तिनकौ मुख जिन कोऊ लखौ तिन्हैं विलोके हांनि

चौपाई ।

अश्वमेध दस सहस्त्र करीजै ।
वाजपेय सत कोटि पुरीजै ॥ ६५ ॥
सकल भूमि तीरथ करि आवै ।
सो फल गुरु चरित्र पढि पावै ॥ ६६ ॥
सन्ध्या प्रात दिवस मध्याना ।

गुरु चरित्र को करै वखाना ॥ ९७ ॥
ग्यारस और अमावस पूनों ।
पढै पुन्य पावत फल दूनौं ॥ ९८ ॥
सात समुद्र करै मसियानी ।
लेखनी भार अठारह जानी ॥ ९९ ॥
कागज भूमि समस्त बनावै ।
सकल पात वृच्छन के लावै ॥१०० ॥
बरनै सहस्त्र सारदा आई ।
लिखै कोटि चतुरानन धाई ॥ १ ॥
गर महिमा को पार न पावै ।
शेष सहस युग अमित जु गावै ॥ २ ॥
पामर जीव पार कहा पावै ।
जगन्नाथ जस कछु इक गावै ॥ ३ ॥

दोहा ।

श्री चैतन्य कृपाजु लहि भाषा कहि कछु गाय ।
श्रीगौर गुरु लखिये जु इक गुन गन रूप सुभाय।४।

श्रीरूप सनातन चरन रज निज शिर लीजै धार ।
गुरु आचारज रूप है यहै शास्त्र निरधार ॥ ५ ॥

चौपाई ।

सम्वत सत्रह सै अरु साठैं ।
माघ वदी उजियारी आठैं ॥ ६ ॥
भरणी इन्द्र अरु मङ्गलवार ।
गुरु चरित्र भाषा विस्तार ॥ ७ ॥

दोहा ।

भूल होइ सो जानियै, मात्रा विन्द उचारि ।
हाथ जोरि विनती करौं, लीजौ संत सुधारि ॥८॥
स्वामी तुलसीदास के, सेवक अति मति हीन ।
जगन्नाथ भाषा सरस, गुन चरित्र गुंन कीन ॥६॥
जल ते थल तें राखि लिय, तोरि सुदृढ़ भौ वंध ।
मूरख हाथ न दीजियै, कहत सयाने संत ॥१०॥
श्रीजगन्नाथ के दास की, गुरु महिमा विस्तार ।
ताते कछु लै और तै, कहि गुरु चरित विचार ।११।
भूल चूक सब रसिक जन, लीजौ आप सुधार ।

जड मति हीन दीन अति राखौ चरन मझार ।१२।
श्रीगौर गुरू गुन गन रटौं दिन श्रीगुर पद आस।
गुरू रूप दरसौं सुदिन गुर वृन्दावन वास।१३।

चौपाई ।

श्रीगुर महिमा कौंन सुगावै ।
गुरु प्रताप पूरन फल पावै ॥ १४ ॥
गुरु महिमा कहि कहि सब हारे ।
जिन कछु गर्व कियो गये मारे ॥ १५ ॥
श्रीगुरु महिमा रसिक लहंत ।
पशु पामर कहा जानै तंत ॥ १६ ॥
श्रीगुरुदेव गाऊं श्रीगुरुदेव गाऊं ।
श्रीगुरुदेव गाय गाय अमित प्रेम पाऊं॥१७॥
श्रीगुरुदेव नाम गुन रूप तन लाऊं ।
श्रीगुरुदेव प्रानन के प्रानहि जिवाऊं ।१८।
श्रीगुरुदेव लैना श्रीगुरुदेव दैना ।
श्रीगुरुदेव भज भइया कछुतेऊ भै ना।१९।
श्रीगुरुदेव द्यौसौ श्रीगुरुदेव रात्यौ ।

श्रीगुरुदेव व्यौहार श्रीगुरुदेव वात्यौं ।२०।
श्रीगुरुदेव वल वुद्धि कुल जात पाँती ।
श्रीगुरुदेव भेंटि शीतल भई छाती ॥२१॥
श्रीगुरुदेव अङ्ग विन सङ्ग तजि सांतौं ।
श्रीगुरदेव हिलग विन हेत करि हांतौं ।२२।
श्रीगुरदेव प्रेम विन नेम न सुहांतौं ।
श्रीगुरदेव हित वोलत मिलत महल कौ नातौं
श्रीगुरदेव नाम रुचि श्रीगुरुदेव नाम सुचि ।
श्रीगुरदेव नाम लिये जाय दुख दोष मुचि ।२४।
श्रीगुरुदेव करमै श्रीगुरुदेव धरमै ।
श्रीगुरुदेव नाम निधि वेधि लहु भरमै।२५।
श्रीगुरुदेव ज्ञानै श्रीगुरुदेव ध्यानै ।
श्रीगुरुदेव नाम करि कोटि अस्नानै २६
श्रीगुरुदेव नाम मेरे मन्तर सुमाला ।
श्रीगुरुदेव नाम मुद्रा तिलक माला २७
श्रीगुरुदेव सेवा श्रीगुरदेव पूजा ।

श्रीगुरदेव भजन बिन भाव नाहिं दूजा २८
श्रीगुरदेव भक्तिरति श्रीगुरदेव परम गति ।
श्रीगुरदेव जस गावत भई सुदृढ मति २९
श्रीगुरदेव व्रजरीति श्रीगुरदेव रसरीति ।
श्रीगुरदेव नाम लिये सब सुसाधन जीति३०
श्रीगुरदेव निज दरस श्रीगुरदेव अर्सपरस ।
श्रीगुरदेव दास देखि उमगत ही हरष ३१
श्रीगुरदेव सुखदेत श्रीगुरदेव हित हेत ।
श्रीगुरदेव नाम लेत अपनो करि लेत ३२
श्रीगुर महिमा भक्ति अनुसार ।
पूरण भई कृपा अति चार ॥३३॥

॥ इति श्रीगुरुमहिमा सम्पूर्ण ॥

श्री श्रीगुरु-देवाष्टकम्



संसार दावानल लीढ लोक,
त्राणाय कारुण्य घना घनत्वं ।

प्राप्तस्य कल्याण गुणार्णवस्य,
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् १
महाप्रभोः कीर्तन नृत्य गीत,
वादित्र माद्यन्मनसो रसेन ।
रोमाञ्च कम्पाश्रु तरङ्ग भाजो.
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।२।
श्रीविग्रहाराधन नित्य नाना,
श्रृङ्गार तन्मान्दिर मार्जनादौ ।
युक्तस्य भक्तांश्च नियुञ्जतोऽपि,
वन्दे रोः श्रीचरणारविन्दम् ।३।
चतुर्विध श्रीभगवत्प्रसाद स्वाद्वन्न,
तृप्तान् हरि भक्त सङ्घान् ।
कत्वैव तृप्तिं भजतःसदैव,
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम ॥४॥
श्रीराधिका माधवयोरपार माधुर्या,
लीला गुण रूप नाम्नाम ।

प्रतिक्षण स्वादन लोलुपस्य,
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।५।
निकुञ्ज यूनो रतिकेलि सिद्धयै,
या यालिभिर्युक्तिरपेक्षणीया ।
तत्राति दाक्ष्यादति वल्लभस्य,
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।६।
साक्षात् धरित्वेन समस्त शास्त्रै,
रुक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भिः ।
किन्तु प्रभोर्यः प्रिय एव तस्य,
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।७।
यस्य प्रसादाद् भगवत्प्रसादो,
यस्य प्रसादान्न गतिः कुतोऽपि ।
ध्यायं स्तुवंस्तस्य यशस्त्रि सन्ध्यां,
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम ।८।
श्रीमद् गुरोरष्टक मे तदुच्चैर्ब्राह्मे,
मुहूर्त पठति प्रयत्नात् ।

यस्तेन बृन्दावन नाथ साक्षात् ,
सेवैव लभ्या जनुषोऽन्त एव ।९।

श्रीमद्रसिक शिरोमणि श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती विरचित
गुरु-अष्टक ।

निज आत्मध्यानम् ।

दिव्यश्रीहरि मन्दिराढ्यतिलकंकण्ठं सुमालान्वितं
वक्षःश्रीहरि नामवर्णा सुभगं श्रीखण्ड लिप्तं पुनः॥
शुभ्रंसूक्ष्म नवाम्बरं विमलतां नित्यं वहन्तीं तनुः
ध्यायेच्छ्री गुरुपाद पद्म निकटे सर्वात्सुकाञ्चात्मनः

श्री गुरु रूप सखी अनुगात्म ध्यानम् ।

श्रीगुरोश्चरणाम्भोज, कृपा सिक्त कलेवराम् ।
किशोरीं गोप माने श्रीकृष्णा,
वनितां नाना लङ्कार भूषितां ॥
पृथु-तुग कुचद्वन्द्वां चतुः षष्टि कलान्वितां ।
रक्त-चित्रान्तरीया मावृत शुक्लोत्तरीयकां ॥
स्वर्ण चित्रारुणा प्रान्त मुक्ता दाम सुकाञ्चलीम।
चन्दनागुरु काश्मीर चर्च्चिताङ्गीं मधुस्मिताम्॥

सेवोपायन-निर्माण-कुशलाँ सेवनोत्सुकाम् ।
विनयादि-गुणोपेतां श्रीराधाकरुणार्थिनीम् ॥
राधाकृष्ण सुखामोद-मात्र चेष्टां सुपाझिनीम् ।
निगूढ भावां-गोविन्दे मदनानन्द-मोहिनीम् ॥
नानारस-कलालाप-शालिनीं-दिव्यरूपिणीम्
साङ्गीतरस-सञ्जात-भावोल्लास भरान्विताम् ॥
तप्त काञ्चन शुद्धाभां-स्वसौख्य-गन्धवर्जिताम्
दिवानिशं-मनोमध्ये-द्वयोः प्रेमभराकुलाम् ।
एक मात्मानमनिशं भावयेद् भक्ति माश्रितः

श्रीगुरु रूपा सखी ध्यान

चिदानन्द-रसमयीं—द्रुतं हेम सम प्रभाम् ।
नील वस्त्र-परिधानां—नानालङ्कार भूषिताम् ॥
राधिका कृष्णयोःपार्श्व-वर्तिनीं नव यौवनाम् ।
गुरुरूपा सखीं-वन्दे-सान्द्रानन्दप्रदायिनीम् ॥

श्री श्री गुरुदेव ध्यानम् ।

ब्रह्म रन्ध्र स्थित-पद्मे सहस्र दल शोभिते ।
श्रीगुरुं-परमात्मानं-व्याख्या मुद्रालसत्करम् ॥

द्विनेत्रं द्विभुजं पीतं ध्याये दखिल सिद्धिदम् ।१।

दूसरा ।

गुरुं गौरं द्विनेत्रं द्विभुजञ्च करुणेक्षणम् ।
वराभयकरंशान्तं स्मरेत्तन्नाम पूर्वकम् ॥ २ ॥

कृपा मरन्दान्वित पाद पङ्कजं,
स्वेताम्वरं गौर रुचिं सनातनम् ।
शन्दं सुमाल्याभरणां गुणालयम्,
स्मरामि सद्भक्ति मयं गुरुं हरिम् ॥ ३ ॥

श्वेतपद्मे समासीनं द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुम् ।
वराभय करंशान्तं ध्यायेदखिल सिद्धिदम् ।४।
श्रीगुरुं गौर हृदयं शान्तं करुणा शालिनम् ।
वरा भय करं ध्यायेत प्रणाय तिलकालकम् ॥५॥
शुद्ध स्वर्ण रुचिं शुद्ध भाव भूषा कलेवरम् ।
सच्चिदानन्द सान्द्राङ्गं करुणामृत वर्षिणम् ॥
शशाङ्कायुत सङ्काशं वराभय लसत्करम् ।
शुक्लाम्वर धरं देवं शुक्ल माल्यानु लेपनम् ॥
शिष्यानुग्रह सन्धानं स्मित नित्य युतााननम् ।

श्रीकृष्ण प्रेम सेवादि दातारं दीन पालकम ॥
समस्त मङ्गलाधारं सर्वानन्द मयं विभुम ।
ध्यायन् श्रीगुरुदेवं तं परमानन्द मश्नुते ॥६॥
गुरुं गौर द्विभुजञ्च वरदं करुणेक्षणाम् ।
वृन्दावने निकुञ्जस्थं कल्पवृक्ष प्रमूलकम ॥
राधामाधवयोः प्रेष्ठं विशाखादि समन्वितम ।
व्रजे रामा गणै युक्तं भजे पतित पावनम ।७।
प्रातः शिरसि शुक्लेब्जे द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुं ।
प्रसन्न वदनं शान्तं स्मरेत्तन्नाम पूर्वकम ॥८॥

हृदम्बुजे कर्णिकामध्य संस्थम्,
सिंहासनाद्यः स्थित दिव्य मूर्तिम ।
ध्यायेद् गुरुं चन्द्रकला प्रकाशम्,
सम्वित्सुखा विष्ट वर प्रदानम ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीश्रीगुरुदेव ध्यान ॥

* श्रीगुरुदेव प्रणाम मन्त्रः *

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षु रुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥१॥

नमस्ते गुरुदेवाय सर्व सिद्धि प्रदायिने ।
सर्व मङ्गल रूपाय सर्वानन्द विधायिने ॥२॥

इति श्रीगुरुदेव प्रणाम मन्त्रः ।

* श्रीगुरु रूप सखी प्रणाम मन्त्रः *

राधा सन्मुख संसक्तिं सखी सङ्ग निवासिनीम् ।
तामहं सततं वन्दे परां गुरु रूपां सखीम् ॥३॥

इति श्रीगुरुरूप सखी प्रणाम मन्त्रः ।

* श्रीगुरु चरणामृत धारण मन्त्रः *

अज्ञान तिमिर हरं सर्व मङ्गल दायकम् ।
श्रीकृष्णाङ्घ्रि प्रदं नित्यं श्रीगुरूचरणोदकम्॥४॥

इति श्री ।

* श्री गुरु पद रज सेवन मन्त्र *

अविद्या हरणं पुण्यं सर्व क्लेश निवारणम् ।
गुरु पाद रजो नित्यं भक्षयामि शुभप्रदम् ॥

इति श्री वृहद् भक्ति तत्व सार से उद्धृत किये
श्री गुरु महिमा व श्रीगुरु अष्टक व ध्यान प्रणाम
संपूर्णम् ।

कक्का–कालियुग आयो जानि कै, श्रीनवद्वीप निज धाम ।
प्रगटे धरि (श्री) गौराङ्ग वपु, सुन्दर श्रीघनश्याम ॥
खखा–खान पान और विषय प्रिय, देख सकल संसार ।
करुणा सिंन्धु महाप्रभू, कीनौ भक्ति प्रचार ॥ २ ॥
गगा–गौड देस पावन कियो, धरि गौराङ्ग सरूप ।
उद्धारे हरि ने पतित, परे हते भव कूप ॥ ३ ॥
घघा-- घर घर कीर्तन कृष्ण कौ, करि करि पावन कीन ।
वाल वृद्ध वनिता सवहिं, करे प्रेमरस लीन ॥ ४ ॥
नना– नाहक जन्म गमाव मत करि लै हरि सौं नेह ॥
वार वार नहिं वावरे, पावैगो नर देह ॥ ५ ॥
चचा– चरण भजौ चैतन्य के, जो सुख चाहौ चित्त ।
रसिकन के जीवन वुही, प्राण बरोवर वित्त ॥ ६ ॥
छछा–छांडि सकल दुर्वासना, भजि लीजे चैतन्य ।
ज्ञान योग सव भोग तजि, कोजै भक्ति अनन्य ।७।
जजा–जो हरि वृन्दाविपिन में, नांचे गोपिन संग ।
सोई अब संन्यास* धर, सिखवत हैं सत सग ॥८॥
झझा–झांझ मृदंग वजावहीं, भक्त जूथ चहुं ओर ।
श्रीराधे गोविंद कहि, निर्तत गौर किशोर ॥ ९ ॥

नोट— * चौवीस के दोहा को देखो श्रीमहाप्रभू के विषै जहाँ संन्यास पाठ है तहाँ वैष्णव वैराग का नाम संन्यास माया वादी संन्यासी नहीं ।

ञञा–नित नवीन यह माधुरी, मगन रहौ मन मोर ।
परत रहै इन कान मैं, श्री गौर नाम कौ शोर ॥ १० ॥
टटा–टूक टूक की गूदरी श्री गौर चरन अनुराग ।
वडे भाग ते पाइयै, विषयन सौं वैराग ॥ ११ ॥
ठठा–ठाकुर नाहि न दूसरो, श्री चैतन्य समान ।
जो निज भक्तन देत हैं, प्रेम भक्ति कौ दान ॥ १२ ॥
डडा–डारि भार संसार कौ, धरि सन्यासी भेष ।
उद्धारौ हरि नाम तैं, सब बङ्गालौ देस ॥ १३ ॥
ढढा–ढाइ दिये नाना कुमति, करि हरि नाम प्रहार ।
नवद्वीप निज धाम में, कीन्हो नित्य विहार ॥ १४ ॥
नना–निंदक पापी पतित, अति दुष्टन के सिर मौर ।
ते गौरांग प्रताप ते, भये और से और ॥ १५ ॥
तता–तारे पतित अनेक प्रभु, को करि सके बखान ।
कठिन कुलिश पाषाणसौं, भये प्रेम रस खान ॥ १६ ॥
थथा–थोरे कौ मानत वहुत, माथे लेत चढाय ।
ऐसे हरि कौ वावरे, क्यों न भजै चित लाइ ॥ १७ ॥
ददा–दास होहु चैतन्य के, लेहु गौर यह नाम ।
तौ निश्चैं करि पाइयै, अंत समै निज धाम ॥१८ ॥
धधा–धीरज धर मन बाबरे काहे कौं अकुलाय ।
मोसे कितने पतित प्रभु, दीने पार लगाय ॥ १९ ॥

नना--नास किये नाना कुमित, प्रगट करी रस रीत।
ऐसे हरि की बावरे, क्यों न करैं परतीत॥ २०॥
पपा--प्रगट न होते जो कहूं, गौर चंद रस खान।
तौ कलियुग के जनन कौ, क्यौं होतौ कल्याण॥ २१॥
फफा--फार्यौ जिन हरिणाकशिपु, रावण डार्यौ मार।
कंस पछारौ छिनक मैं, सोई शची कुमार॥ २२॥
ववा--वाढ्यौ चहु दिश प्रेम प्रभु, किये अनाथ सनाथ।
जबते प्रगटे गौर हरि, भक्त वृंद लै साथ॥ २३॥
भभा--भाल तिलक माला गले, नन प्रेम जल पूर।
करुणा सिंधु महाप्रभू, मेरी जीवन मूर॥ २४॥
ममा--मारि मारि जेते असुर, कृष्ण किये उद्धार।
भक्ति दान दै गौर हरि, ते सव कीये पार॥ २५॥
यया--यन्म लियो नदिया नगर, जगन्नाथ द्विज गेह।
भक्तन तें गौराङ्गप्रभु, कीनों अधिक सनेह॥ २६॥
ररा--रूप सनातन आदि लै, हरि, के भक्त अनन्त।
जिन वृन्दावन माधुरी, प्रगट करी रसवन्त॥ २७॥
लला--लाजत जाको वदन लखि, कोटि शरद के चन्द।
करूणा सिन्धु महा प्रभो, काटो सव दुख द्वन्द॥ २८॥
ववा--वह वांकी चितवनि वसी, झांकी परम रसाल।
राह चलत हूं जिन करी, तेहू भये निहाल॥ २९॥

शशा-शची तनय विन कौन जग, एसौ परम दयाल ।
शरण लेत ही देत हैं, प्रेम भक्ति तत्काल ॥३०॥
षषा-षड्भुज धरि दर्शन दियौ, जगन्नाथ में नाथ ।
धनुष वाण बंसी लई, दण्ड कमण्डल हाथ ॥३१॥
ससा-साधुनकी लै मण्डली,करि कीर्त्तन तिहि बीच ।
उद्धार्‍यौ हरि ने पतित, क़ाजीसौ अति नीच ॥३२॥
हहा-हरी हरी हरि कौ यही घरी-घरी नित खेल ।
हरी करी पाषाण ते जरी भक्ति की बेल ॥३३॥
प्रेम भरी हरि ने करी, कृपा-दृष्टि की कोर ।
हरी खरी वाराखड़ी, रसनिधि नन्दकिशोर ॥३४॥
लीला यह चैतन्य की, गावैगौ जो कोइ ।
रूप प्रेमरस माधुरी, हृदे प्रकाशित होइ ॥३५॥

इति श्री रसनिधि श्रीनन्दकिशोर कृत वारहखड़ी
॥ सम्पूर्ण ॥



श्रीश्रीवैष्णव-वन्दना

—: व :—

महिमा ।



दोहा ।

श्रीवृन्दावन वासी जिते, वैष्णवगण जे आंहि ।
ते सब को बंदन करों, सबके चरणन मांहि ॥
श्रीनीलाचल वासी जिते, श्रीमहाप्रभु गन गाय ।
भूमी ते परि वंदना करों, सबन पद मांय ।२।
श्रीनवद्वीप वासी जिते, महाप्रभु के भक्त ।
सब के पद वन्दन करों, ह्वै अनुराग सुयुक्त ३
महाप्रभु वर भक्त जिते, गौड देस करि वास ।
तिन सब के वन्दों चरन, करिके प्रणति हुलास४
जे जे देस विराजहीं, श्री गौर के गन्न ।
ऊर्द्ध बाहु करिके करों, वन्दन सबन चरन्न ।५।
ह्वै गये अरु जे होंयगे, हैं जितने प्रभु दास ।
सबके बन्दों चरन अति, दन्तन करिके घास ६

जन--जन धारें शक्तिवर, तरिवे को ब्रह्माण्ड ।
वेद पुराणन गुण कहै, जो कोऊ सुनै प्रकांड ७
पतितन के पावन सबै, श्रीमहाप्रभू गन होंय ।
मैं अति पापी लोभ वश, सरन लई हित जोय८
शिव सनकादिक नारद, सारद शेष अनन्त ।
अज पद रज खोजत फिरें, हरिहु न पावत अंत
जहँ इनहूँ की पहुँच नहिं,मैं लघु कृमि कहा छार
अति साहस वन्दन करों,कितनिहु शक्तिहि धार१०
दम्भ मात्र मैं करों अति, तमो बुद्धि के दोष ।
तऊ इनकी लखि अतिकृपा, मन पावै सन्तोष११
यहां मूक बड़ भाग ते, तऊ मनहिं उल्लास ।
मो अधम्म के दोष छमि,करहुजु निज जन दास
होंइ सकल वांछाजु सुधि,अरु जम बन्धहु छूटि
जो जग को दुर्लभ सदा,महा प्रेम धन लूटि१३
कछु दिन बीते वासना, मन की पूरन होंग ।
देवकीनन्दन दास येइ,लग्यो लोभ कहि सोय१४

छप्पै ॥

कविजन करत विचार वडो कोऊ ताहि भणीजे।
कोऊ कहै अवनी बड़ी जगत आधार फणीजे ॥
सो धरी शिर शेष-शेष शिव भूषण कीनो।
शिव आसन कैलास भुजन भरि रावण लीनो ॥
रावण जीत्यौ वालि वालि राघौ इक शायक दंडे
अगर कहैं त्रैलोक में हरि उर धारें ते बड़े १५
हरि सुयश प्रीति हरिदास के त्यों भावै हरिदास
यश। नेह परस्पर अघट निवहि चारों युग आयो
अनुचर को उतकर्ष श्याम अपने मुख गायो।
ओत प्रोत अनुराग प्रीति वोही जग जाने ॥
पुर प्रवेश रघुवीर भृत्य कीरति जु बखाने।
अगर अनुग गुण वरणते सतीपति तिन होय
वश ॥ हरि सुयश० ॥ १६ ॥
उतकर्ष सुनत सन्तनको अचरज कोऊ जनि करो।
दुर्वासा प्रति श्यामदास बसता हरि भाषी ॥
ध्रुव गज पुनि प्रह्लाद राम शवरी फल साखी।

कबित्त ।

राजसूय यदुनाथ चरण धोय जूंठ उठाई ॥
पांडव बिपति निवार दियौ बिष बिषया पाई ।
कलि बिशेष परचौ प्रगट आस्तिक ह्वै के चित
धरो ।। उतकर्ष सुनत ० ।। १७ ॥
सब ही ते बड़ी क्षति क्षितिहूँ ते सिन्धु बड़े
सिन्धुहू ते बड़े मुनि वारिध अंचै रहे । तिनहू
बड़े नभ तामें मुनि से अनेक जाके बीच तारा-
गण चारों ओर छै रहे ॥ नभ हू ते बड़े पग
वामन बढ़ाये जब तिनकी उंचाई देख तीनों
लोक न रहे । तिनहू ते बड़े सन्त साहब अगम
गति ऐसे हरि वड़े जाके हृदे घर करि रहे १८
साधवो हृदयं मह्यं साधूमां हृदयं त्वहम् ।
मदन्यं तेन जानन्ति नाहं तेभ्यो मनागपि ॥
अहं भक्त पराधीनोह्य स्वतन्त्र इव द्विज ।
साधुभिर्ग्रस्ति हृदयो भक्तै भक्त जन प्रियः ॥
तुलायामलवे नापि न स्वर्गं न पुनर्भवं ।

भगवत्संगि संगस्य मर्त्यानां किमुता शिषः २१

दोहा ।

सब संसार जु आरसी जन महिमा प्रतिबिम्ब ।
रति दृग बिनु सूझै नहीं ज्यों अन्धे कौ बिम्ब ॥
और शास्त्र के श्रवण कौ अति फल हरि निरधार ।
सो याके श्रोता अहो महिमा अगम अपार ॥
पादप पेड़हि सींचते पावै अंग अंग पोष ।
पूरवजा ज्यों बरणते सब मानै सन्तोष ॥२४॥
भक्त जिते भू लोक में कथे कौन पै जांय ।
समुद्र पान श्रद्धा करे कहा चिरिया पेट समाय ॥
चार जुगन में जे भगत तिनके पग की धूरि ।
सर्वस शिर धरि राखिहों मेरी जीवन मूरि ।२६।
भगतन के गुन को कहै हरि हू मानौ हार ।
भक्त रूप श्रीराधिका वर चैतन्य वपु धार ।२७।
रसना गुन भक्तन कहैं सुनैं भक्त वर गाथ ।
भक्तन को हिय ध्यान अति बिके जु भक्तन हाथ ॥
प्रभुता सकल जु डारि कै नाम भक्त विख्यात ।

रोम रोम प्रति पूरि रहे भक्त सकल वरगात ॥
निस दिस भक्तन भाव धरि श्याम भये वपुभक्त।
मन अरु आनन नैन ये लखत भक्त ही भक्त॥
खान पान वतरात मिलि भक्तन संग करैं केलि ।
जहं जहं द्दग परैं तहं फुरै भक्त सु नवल नवेलि ॥
याही ते रटिवो करै गौर गौर यह नाम ।
कलि रसिकन हित राधिका वपु अति ललति ललाम
वड़े भाग जो नरन के जे पावैं ये ठौर ।
जनम जनम इनके चरण शरण जो आवे गौर ॥
सकल अनन्यन नृपति वर गौर रसिक सिरमौर।
नेक नाम मुख लेत ही राधा रस निधि वोर ॥
इनके जस को कहि सकै रसिक नरेश प्रमान ।
सोऊ हारि हिय मधि धरें तन मन रस में सान॥
जिते रसिक प्रणऊं सकल छामियो मो अपराध ।
जो कछु आयो कह्यो सो पूरन करियो साध ॥
ब्रह्मेशादि महाचरिय महिमा भक्तन जोय ।
मुग्ध बाल के वैन ज्यों मात पितहि सुख होय ॥

नहीं शास्त्र देख्यो कोऊ सुने न गुरु शिषचार ।
नहीं विवेचन सुबुधि बुध महिमा भक्तन सार ॥
जैसे तैसे मुग्ध अति जल्पत बालक भाव ।
तेही विधि परसन्न ह्वै भक्त रसिक मनिराव ॥
श्रीनित्यानन्द रसिका भरन भक्त सु गौर विहार ।
जिहि तिहि भांत कहा इकै देत जु विपिन विहार ॥
नित्यानन्द श्रीगौर वर ।नित्यानन्द लेव नाम ।
तव पैये रस माधुरी श्रीवृन्दावन धाम ॥ ४१ ॥
श्रीरूप सनातन जीव श्रीगोपाल भट्ट रघुनाथ ।
रसिक प्रबोधानन्द बर दास श्रीरघुनाथ ॥४२॥
सन्त रूप श्रीप्रिया पिय सन्त सहचरी वृन्द ।
सन्त रूप धर प्रगटही कारण जग सुख कन्द ॥
ललित विसाखा आदि सब मंर्जार रूप अनंग ।
आचारज ह्वै धरनि पर रस निधि प्रेम तरंग ॥
सन्त सन्त सब एक हैं नाहीं नेकौ भेद ।
भेद करै नर्कन परै उधरै नहिं कहैं वेद ॥४५॥

सन्त राम के वाप हैं सन्त राम के पूत ।
सन्त न होते परसराम तो जाते राम अऊत ।४६।
ठाकुर ठाकुर एक हैं सन्त सन्त सव एक ।

चौपाई ।

जो कोऊ इनमें अन्तर करिहै ।
धमक धमक नर्कन में परिहै ॥४८॥

वार्ता—

मनुष्य ने पाग पलटी । हरि ने हृदय पलटे । हरि साधुन के गुन कहैं और सुनैं । तैसे साधू हरि के गुण कहैं और सुनैं । पुर प्रवेस करत कहे, तो भरत सों हनुमान आदिक के सुने, नारदजी सों पांडवन के सुने, सन्त हू अनन्य हैं जैसे प्रहलाद । ऐसे ही हरि अनन्य हैं।

इति श्रीश्री वैष्णव वन्दना व महिमा संपूर्णा ।

———

श्लोक।

आनंद लीला मय विग्रहाय,
हेमाभ दिव्यच्छवि सुन्दराय।
तस्मै महा प्रेम रस प्रदाय,
चैतन्य चन्द्राय नमो नमस्ते ॥ १ ॥
नम स्त्रिकाल सत्याय, जगन्नाथ सुताय च।
स भृत्याय स पुत्राय सकल त्राय ते नमः ॥ २ ॥

श्री श्रीनित्यानंद प्रभू प्रणाम मन्त्रः—

नित्यानन्द महं बन्दे, कर्णे लम्बित मौक्तिकम्।
चैतन्याग्रज रूपेण, पवित्री कृत भूतलम् ॥ ३ ॥
नित्यानन्द नमस्तुभ्यं, प्रेमानन्द प्रदायिने।
कलौ कलमष नाशाय जान्हवा पतये नमः ॥ ४ ॥
औदार्य्येण सुकामधनुदीविषद्,
वृक्षेन्दुचिन्तामणि।
बृन्द ब्रम्ह सुखञ्च सुन्दरतया,
कंदर्प बृन्दं प्रभुम् ॥
वात्सल्येन सु मातृ धेनु निवयं,

विस्पर्द्धिनं नंदिनम् ।
नित्यानन्द महं नमामि सततं,
प्रेमाब्धि सम्वर्द्धिनम् ॥ ५ ॥
निरानन्द मिदं सर्वं, प्रेमा नन्दा स्पदी कृतम् ।
येन तं सततं वन्दे, नित्यानन्दं जगत् गुरुम् ॥
श्रीमन्नित्यानन्द चन्द्र, करुणामय विग्रहम् ।
चैतन्या भिन्न देह तं, वन्दे सर्व जन प्रियम् ।७।

श्री अद्वैतप्रभु प्रणाम मन्त्रः

श्रीअद्वैत नमस्तुभ्यं, कलिजन कृपानिधे ।
गौर प्रेम प्रदानाय, श्रीसीतापतये नमः ॥८॥
येन श्रीहरिरीश्वरः प्रकटया,
श्चक्रे कलौ राधाया ।
प्रेम्णा येन महेश्वरेण सकलं,
प्रेमाम्बुधि प्लावितम् ॥
विश्वं विश्व विकाशि कीर्ति मतुलं,
तं दीन बन्धुंप्रभु ।

मद्वैतं सततं नमामि हरिणा,
द्वैतं हि सर्वार्थदम् ॥ ९ ॥
निस्तारिताशेष जनं दयालुं'
प्रेमामृताब्धौ परि मग्न चित्तम् ।
चैतन्य देवा हृत मादरेण,
अद्वैत चन्द्रं शिरसा नमामि ॥ १० ॥
वन्दे आचार्य्य मद्वैतं, भक्ता वतार मीश्वरम् ।
यस्य ज्ञात्वा मनो बृत्तिं, चैतन्योऽवतरेद्भुवि ॥११॥
अद्वैताय नमस्तेऽस्तु ' महेशाय महात्मने ।
यस्य प्रसादा च्चैतन्य , चरणे जायते रतिः ॥१२॥

जुगल श्रीगौर नित्यानंद प्रणाम मन्त्रः

आजानु लम्बित भुजौ, कनका वदातौ,
सङ्कीर्त्तनैक पितरौ , कमलायताक्षौ ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ, युग धर्म्म पालौ,
बन्दे जगत प्रियकरौ, करुणा वतारौ ॥ १३ ॥

श्री गदाधर प्रणाम मन्त्रः

गदाधर महं बन्दे माधवाचार्य्यनन्दनम् ।

महाभाव स्वरुपं श्री, चैतंयाभिन्न रूपिणाम् ।१४।
श्रीह्लादिनी स्वरूपाय, गौराङ्ग सुहृदायच ।
भक्त शक्ति प्रदानाय, गदाधर नमोऽस्तुते ।१५।

यत्पादाब्ज नखाग्र कान्ति लवतो,
ह्यज्ञान मोहःक्षयम् ।
यत्कारुण्य कटाक्षतः स्वयमसौ,
श्रीगौर चन्द्रोवशम् ॥
याती षड्जनाच्च यस्य जगतां,
प्रेमेन्दु रन्तर्नभो ।
नौमि श्रीलगदाधरं तमतुला,
नन्दैक कल्पद्रुमम् ॥१६॥

श्री श्रीवास प्रमाण मन्त्रः

प्रणमामि श्री श्रीवासं, तमाद्यं पण्डितं मुदा ।
श्रीगौराङ्ग कृपापात्रं, कीर्तनानन्द मानसम् ।१७।
श्रीवास पण्डितं नौमि गौरङ्गप्रिय पार्षदम् ।
यस्य कृपालवै नापि गौराङ्गेजायते रतिः ॥१८॥

श्रीवास कीर्तनानन्दे, भक्त गोष्ठ्यैक वल्लभ ।
त्वा नमामि महायोगिन् भक्तरूपोऽसिनारदः ।१९।

श्रीपञ्च तत्व प्रणाम मन्त्रः

पञ्चतत्वात्मकं कृष्णं, भक्त रूप स्वरूपकम् ।
भक्तावतारं भक्ताख्यं, नमामिभक्त शाक्तिकम् ।२०।

श्री श्रीकृष्ण प्रणाम मन्त्रः

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हितायच ।
जगद्धिताय कृष्णाय, गोविंदायनमोनमः ।२१।
नमो नलिन नैत्राय वेणु वाद्य विनोदिने ।
राधाधर सुधापान शालिने वनमालिने ।२२।
कृष्णाय कृष्ण चन्द्राय, बृन्दावन विहारिणे ।
नमस्ते वल्लभीशाय, राधिका पतये नमः ।२३।

श्री श्रीराधिका प्रणाम मन्त्रः

तप्त काञ्चन गौराङ्गि, राधे बृंदावनेश्वरि ।
बृषभानु सुते देवि, त्वांनमामि हरि प्रिये ।२४।
नवीन हेम गौराङ्गीं, प्रवरेन्दी वराम्वराम् ।

वृषभानु सुतां वन्दे कृष्ण कान्ता शिरोमणिम् २५
तप्त काञ्चन गौराङ्गीं, रङ्गिणीं प्रमदाकृतिम् ।
वृषभानु सुतां वन्दे, वृन्दावन विलासिनीम् ॥२६॥
नवीन हेम गौराङ्गिं, पूर्णानन्द वतीं सतीम् ।
बृषभानु सुतां देवीं, वन्दे राधां जगत् प्रसूम् ॥२७॥
राधां रासेश्वरीं रम्या, गोविंदमोहिनीं पराम् ।
वृषभानु सुताम् देवीं नमामि श्रीहरि प्रियाम् ॥२८॥
महाभाव स्वरूपात्वं कृष्णाप्रिया वरीयसी ।
प्रेम भक्ति प्रदे देवि, राधिके त्वां नमाम्यहम् ॥२९॥
रासोत्सव विलासिन्यै, नमस्ते परमेश्वरि ।
कृष्ण प्राणाधिके राधे परमानन्द विग्रहे ॥

श्री श्रीजुगल प्रणाम मन्त्रः

बन्दे वृन्दावन गुरुं कृष्णं कमल लोचनम् ।
वल्लवी वल्लवं देवं राधा लिङ्गित विग्रहम् ।३१॥

श्री बलराम प्रणाम मन्त्रः ॥

नमस्ते तु हलग्राम–नमस्ते मुषलायुध ,

नमस्ते रेवतीकान्त नमस्ते भक्त वत्सल ॥
नमस्ते वलिनां श्रेष्ठ, नमस्ते धरणीधर ।
प्रलम्बारे नमस्ते तु, त्राहि मां कृष्ण पूर्वज ।३२।

श्री श्री वैष्णव प्रणाम मन्त्रः ॥

वाञ्छा कल्प तरु भ्यश्च, कृपासिन्धुभ्य एवच ।
पतितानां पावनेभ्यो, वैष्णवेभ्यो नमो नमः ३३।
चैतन्य चन्द्र चरितामृत, शुद्ध सिन्धु-
बृन्दावनीय सुरसोर्म्मि, समुन्निमग्नाः ।
ये वै जग न्निज गुणैः स्वयमा पुनान्ति
तानू वैष्णवांश्च हरिनाम, परान्नमामि ॥३४॥
चैतन्य चरणाम्भोज, मधुपेभ्यो नमो नमः ।
कथञ्चिदाश्रयाद् येषां श्वापि तद्गंधभाग्भवेत् ॥

श्री सर्वेषां प्रणाम मन्त्रः ॥

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुत पद कमलं,
श्रीगुरून्वैष्णवाश्च ।
श्रीरूपं साग्रजातं सहगण,

रघुनाथान्वितं तं सजीवम्।
साद्वैतं सावधूतं परिजन सहितं,
श्रीकृष्ण चैतन्य देवम् ।
श्रीकृष्णाराध पादान् सहगम ललिता,
श्रीविशाखान्विताश्च।३६।
वन्दे गुरू नीश भक्ता नीश मीशा वतारकान्।
तत्प्रकाशांश्च तच्छक्तीःकृष्ण चैतन्य संज्ञकम्॥३७
गुरुवे गौर चन्द्राय, राधिकायै तदालये।
कृष्णाय कृष्ण भक्ताय, तद्भक्ताय नमो नमः॥३८

श्रीश्रीललिता आदि प्रणाम मन्त्रः।

कारुण्यं कल्प लतिके. ललिते नमस्ते।
राधा समान गुन चातुरिके विशाखे ॥ १ ॥
त्वां नौमि चम्पकलतेऽच्युत चित्त चौरे।
वन्दे विचित्र चरिते सखि चित्र लेखे ॥ २ ॥
श्रीरङ्गदेवि दयिते प्रणयाङ रङ्गे ।
तुभ्यं नमोऽस्तु सुखदे दयिते सुदेवि ॥ ३ ॥

विद्या विनोद सदनेऽपिच तुङ्ग विद्ये।
पूर्णेन्दु खण्ड नखरे सुमुखीन्दु लेखे ॥ ४ ॥
राधानुजे मम नमोऽस्तु अनङ्ग देवि।
तुभ्यं सदा मधुमति प्रियतामरन्दे ॥ ५॥ ३९ ॥

श्रीश्रीरूपमञ्जरी आदि प्रणाम मन्त्रः ।

ताम्बूलार्पण पाद मर्दन पयो दानाभिसारादिभि-
र्वृंदारण्य महेश्वरीं प्रियतया यास्तोषयन्ति प्रियाः।
प्राण प्रेष्ठ सखी कुलादपि,
किला सङ्कोचिता भूमिकाः—
केली भूमिषु रूप मञ्जरि मुखा,
स्ता दासिकाः संश्रये ॥ ४० ॥

श्रीनवद्वीप प्रणाम मन्त्रः ।

नवीन श्रीभक्ति नव कनक गौरा कृति पतिम।
नवारण्य श्रेणी नव सुर सरिद् वात वलितम्॥
नवीन श्रीराधा हार रस मयोत्कीर्तन विधिम।
नव द्वीपं वन्दे नव करुणा माद्य न्नव रुचिम ।४१।

श्रीश्रीवृन्दावन धाम प्रणाम मन्त्र ।

आनन्द बृन्द परि तुन्दिल मिन्दिराया ।
आनन्द बृन्द परि नन्दित नन्द पुत्रम् ॥
गोविन्द सुन्दर वधू परि नन्दितं तद् ।
वृन्दावनं मधुर मूर्त महं नमामि ॥ ४२ ॥

श्रीश्रीपूर्णमासी देवी प्रणाम मन्त्र ।

राधेश केलि प्रस्तुता विनोद,
विन्यास विज्ञां ब्रज वन्दिताङ्घ्रिम् ।
कृपालुताद्याखिल विश्व वन्द्यां,
श्रीपौर्णमासीं सिरसा नमामि ॥४३॥

श्रीवृन्दादेवी प्रणाम मन्त्रः ।

तवारण्ये देवि ध्रुव मिह मुरारि र्विहरति ।
सदा प्रेय स्येति श्रुति रपि विरौति स्मृति रपि ।
इति ज्ञात्वा वृन्दे चरण मभि वन्दे तव कृपाम् ।
कुरुस्व क्षिप्रंमे फलतु नितरां तर्ष विटपी ।४४।

श्रीराधाकुण्ड प्रणाम मन्त्रः ।

श्रीवृन्दाविपिनं सुरम्य मपि तच्छ्री मांस गोवर्धनः

सा रास स्थलिकाप्यलं रसमयैः,
किन्ता बदन्यस्थलैः ।
यस्या प्यङ्श लवेन नार्हति,
मनाक् साम्यं मुकुन्दस्य तत् ।
प्राणेभ्योऽप्यधिकं प्रियेव दर्पितं,
तत्कुण्ड मेवाश्रये ॥ ४५ ॥

श्री स्याम कुण्ड प्रणाम मन्त्रः ॥

दुष्टारिष्ट वधे स्वयं समभवत् ,
कृष्णाङ्घ्रि पद्मादिदम् ।
स्फीतं यन्मकरन्द विस्तृति,
रिवा रिष्टाख्य मिष्टं सरः ॥
सो पानैः परिरञ्जितं प्रियतया,
श्री राधया कारितः ।
प्रेमालिङ्ग दिव प्रिया सर इदं,
तन्नित्य नित्यम्भजे ॥ ४६ ॥

श्री गोवर्धन प्रणाम मन्त्रः

सप्ताह मेवाच्युत हस्त पङ्कजे,
भृङ्गाय मानं फल मूलकन्दरैः।
सं सेव्यमानं हरि मात्म बृन्दकै,
गोवर्द्धनाद्रिं सिरसा नमामि ॥४७॥

श्री व्रजवासी वृन्द प्रणाम मन्त्रः ॥

मुदा यत्र ब्रह्मा–तृण निकर
गुल्मादिषु परम–
सदा काङ्क्षन् जन्मार्पित,
विविध कर्म्माप्यनुदिनम्!
क्रमाद्ये तत्रैव व्रज भुवि,
वसन्ति प्रिय जनाः–
मया ते ते वन्द्याः
परम, विनया पुण्य खचिताः ॥४८॥

श्री श्री जमुनो प्रणाम मन्त्रः ॥

गङ्गादि तीर्थ परिषेवित पाद पद्माम्–
गोलोक सौख्य रस पूर माहिं महिम्ना।

आप्लाविता खिल सुसाधु जलां सुखाब्धौ-
राधा मुकुन्द मुदितां यमुनां नमामि ।४९॥

श्री तुलसी प्रणाम मन्त्रः

वृन्दायै तुलसी देव्यै प्रियायै केशवस्यच ।
विष्णु भक्ति प्रदे देवि सत्य सत्यै नमो नमः ॥५०
महा प्रसाद जननी सर्व सौभाग्य वर्द्धिनी ।
आधि व्याधि हरा नित्यं तुलसी त्वं नमोऽस्तुते ५१

श्री जमुना स्नान मन्त्रः

कलिन्द तनये देवि परमानन्द वर्द्धिनि ।
स्नामि ते सलिले सर्वा पराधान्मां विमोचय ॥५२॥

श्री राधाकुण्ड स्नान मन्त्रः

राधिका सम सौभाग्यं सत्र तीर्थ प्रवन्दितम् ।
प्रसीद राधिका कुण्ड स्नामि ते सलिले शुभे ॥५३॥

श्री श्यामकुण्ड स्नान मन्त्रः ।

उद्भूतम कृष्णा पादाब्जा,
दरिष्ट वधतश्छलात् ।

पाहिमां पामरं स्नामि–
श्याम कुण्ड जले तव ॥५४॥

श्री तुलसी स्नान मन्त्रः ।

गोविन्द वल्लभां देवीं भक्त चैतन्य कारिणीम् ।
स्नापयामि जगद्धात्रीं विष्णु भक्ति प्रदायिनीम् ५५

श्री तुलसीचयन मन्त्रः ।

तुलस्या मृत जन्मासि सदात्वं केशव प्रिया ।
केशवार्थे चिनोमित्वां वरदा भव शोभने ॥५६॥

श्री तुलसी प्रदक्षिण मन्त्रः ।

यानि कानि च पापानि ब्रह्म हत्यादिकानि च ।
तत्सवं विलयं याति तुलसित्वत्प्रदाक्षिणात् ॥५७

श्री राधाकृष्ण प्रदक्षिण मन्त्रः ।

हे कृष्ण राधिका कान्त गोविन्द मधुसूदन ।
प्रदक्षिणां करोमि त्वां करुणां कुरु माधव ॥५८॥

जप समर्पण मन्त्र ।

गुह्याति गुह्य गोप्ता त्वं-
गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।

सिद्धिर्भवतु मे नाथ-
त्वत्प्रसादात् त्वयि स्थिते ॥५९॥

वैष्णव चरणामृत धारण मन्त्रः ।

अन्तर्ध्वान्त विनाशनं सर्व विघ्न प्रमोचनम् ।
त्रितापानि हरेन्नित्यं वैष्णाव चरणोदकम् ॥६०॥
हरि भक्ति प्रदं पुण्यं सर्वोपद्रव नाशनम् ।
भक्त पादोदकं पीत्वा सिरसा धारयाम्यहम् ॥६१॥

श्री कृष्ण चरणामृत धारण मन्त्रः ।

अकाल मृत्यु हरणं सर्व व्याधि विनाशनम् ।
विष्णु पादोदकं पीत्वा सिरसा धारयाम्यहम् ॥६२

श्री वैष्णव पदरज सेवन मन्त्र ।

सर्वानर्थ हरं श्रद्धं सर्वाभीष्ट प्रपूरकम् ।
भक्त पाद रजो नित्यं भक्षयामि सुभक्तिदम् ॥६३

श्री व्रजरज सेवन मन्त्रः ।

वन्दे नन्द व्रजस्त्रीणां पादरेणु मभीक्ष्णशः ।
यासां हरि कथोद्गीतं पुनाति भुवन त्रयम् ॥६४॥

तिलक धारण मन्त्रः

ललाटे केशवं ध्याये नारायण मथोदरे ।
वक्षःस्थले माधवन्तु गोविन्दं कण्ठ कूपके ॥
विष्णुञ्च दक्षिणेवाहौ कुक्षौ च मधुसूदनम् ।
त्रिविक्रम कन्धेर तु वामनं वाम पार्श्वके ॥
श्रीधरं वाम वाहौ च हृषीकेशन्तु कन्धरे ।
पृष्ठे तु पद्म नाभञ्च कट्यां दामोदरं न्यसेत् ।
तत्प्रक्षालन तोयन्तु बासुदेवेति मूर्धनि ॥६५॥

तुलसी माला धारण मन्त्रः

तुलसी काष्ठ सम्भूते माले कृष्ण जन प्रिये ।
विभार्म्मि त्वामहं कण्ठे कुरु मां कृष्ण वल्लभम् ॥
यथा त्वं वल्लभा विष्णो नित्यं विष्णुजन प्रिया ।
तथा मां कुरु देवेशि नित्यं विष्णुजन प्रियम् ।६६ ।

पूजान्ते प्रार्थना मन्त्रः

त्रायस्वभो जगन्नाथ गुरो सन्सार वह्निना ।
दग्धं मां काल दष्टञ्च त्वामहं शरणांगतः
सन्सार दुःखजलधौ पतितस्य काम-
क्रोधादि नक्र मकरैः कवली कृतस्य ।

दुर्वासना निगडितस्य निराश्रयस्य-
चैतन्य चन्द्र मम देहि पदावलम्वम ६८

पूजान्ते विज्ञप्ती मन्त्रः

दुष्कर्म कोटि निरतस्य दुरन्त घोर-
दुर्वासना निगड शृंखलितस्य गाढम्।
क्लिश्यन्मतेः कुमित कोटि कदर्थितस्य-
गौरं विनाद्य ममको भवितेहबन्धुः ६९
मत्समो नास्ति पापात्मा त्वत्समो नास्ति पापह ।
इति विज्ञाय गोविन्द यथा योग्य तथा कुरु ।७०॥

पूजान्ते अपराध क्षमापन मन्त्र

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
प्रतिज्ञा तव गोविंद नम भक्तः प्रणश्यति ॥
इति सङ्स्मृत्य सङ्स्मृत्यप्राणां सङ्धारयाम्यहम्।
दासोऽयमिति माम् मत्वा तत्सर्वम् क्षन्तु मर्हसि ॥

जपार्थे नाम माला ग्रहन मंत्रः ॥

अविघ्नं कुरु मालेत्वम् हरि नाम जपेषु च ।
श्री राधाकृष्णयोदास्यं देहि माले तु प्रार्थये ॥

नाम चिन्तामणीरूपं नामैव परमा गतिः ।
नाम्नः परतं नास्ति तस्मान्नाम उपास्महे ॥७३॥

नाम जप समर्पण मंत्रः ॥

नाम यज्ञो महा यज्ञः कलौ कल्मष नासनः ।
कृष्ण चैतन्य प्रीत्यर्थं नाम यज्ञ समर्पणम् ॥७४॥

जपान्ते नाम माला स्थापन मन्त्र ॥

पतित पावनं नाम निस्तारय नराधमम् ।
राधाकृष्ण स्वरूपाय चैतन्याय नमो नमः ॥
त्वं माले सर्व देवानां सर्व सिद्धि प्रदामता ।
तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मातर्नमोस्स्ते ॥

आत्म समर्पण मंत्र ॥

अहं भगवतोऽन्शोऽस्मि सदा दासोऽस्मि सर्वथा ।
तत्कृपा पेक्षको नित्य मित्यात्मानं समर्पयेत् ॥७७॥
तवास्मि राधिका नाथ कर्मणा मनसा गिरा ।
कृष्ण कान्ते तवै वास्मि युवामेव गतिर्मम ॥७८॥
योऽहं ममास्ति यत् किञ्चिद् इह लोके परत्र च ।
तत्सर्वं भवतो रद्य चरणेषु समार्पितम ॥ ७९ ॥

श्रीभक्तितत्वसार से उद्धृत किये "दासानुदास बाबा वंशीदास"

* श्री श्री चैतन्याष्टक *

सदोपास्यः श्रीमान् धृत मनुज कायैः प्रणयिताम्
वहद्भि गीर्वाणैर्गिरिश-परमेष्ठि प्रभृतिभिः ।
स्वभक्तेभ्यः शुद्धां निज भजन मुद्रा मुपदिशन्
स चैतन्यः किम्मे पुनरपि दृशोर्यास्याति पदम् ॥
सुरेशानां दुर्गम गतिरतिशये नोप निषदाम
मुनीनां सर्वस्वं प्रणत पटलीनां मधुरिमा ।
विनिर्यासः प्रेम्णो निखिल पशु पालाम्बुज दृशाम
स चैतन्यः किम्मे पुनरपि दृशो यास्यति पदम।२।
स्वरूपं विभ्राणो जगदतुल मद्वैत दायितः
प्रपन्न श्रीवासो जनित परमानन्द गारिमा ।
हरिर्दीनोद्धारी गजपति कृपोत्सेक तरलः
स चैतन्यः किम्मे पुनरपि दृशो र्यास्यति पदम।३
रसोद्दामा कामार्बुद मधुरधामोज्वल्ल तनू
र्यतीना मुत्तन्सस्तरनिकर विद्योति वसनः ।
हिरण्यानां लक्ष्मी भरमभि भवन्नाङ्गिकरुचा
स चैतन्यः किम्मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम्।४

हरे कृष्णेत्युच्चैः स्फुरित रसनो नाम गणना
कृतग्रन्थि श्रेणी सुभग कटि सूत्रोज्वल करः
विशालाक्षो दीर्घार्गलजुगल खेलाञ्चित भुजः
सचैतन्यः किम्मे पुनरपि दृशो र्यास्यति पदम् ।५
पयो राशेस्तीरे स्फुर दुपव नाली कलनया
मुहु र्वृन्दारण्य स्मरण जनित प्रेम विवशः ।
क्वांचेत्कृष्णा वृत्ति प्रचल रसनो भक्ति रासिकः
स चैतन्यः किम्मे पुनरपि दृशो र्यास्यति पदम् ।६
रथारूढस्यारादधि पदवि नीलाचल पते
रदभ्र प्रेमोर्म्मि स्फुरित नटनोल्लास विवशः ।
सहर्षम् गायद्भिः परिवृत तनु वैष्णव जनैः
स चैतन्यः किम्मे पुनरपि दृशो र्यास्यति पदम् ।७।
भुवं सिञ्चन्नश्रु श्रुति भिरभितः सान्द्र पुलकैः
परीताङ्गोनीयस्तवक नव किञ्जल्क जयिभिः
घन स्वेद स्तोम स्तिमित तनु रुत्कीर्तन सुखी
स चैतन्यः किम्मे पुनरपि दृशो र्यास्यति पदम् ।८।

अधीते गौराङ्ग स्मरण पदवी मङ्गल तरम्
कृती यो विश्रम्भ स्फुर दमल धी रष्टक मिदम्।
परानन्दे सद्य स्तदमल पदाम्भोज जुगले
परि स्कारा तस्य स्फुरतु नितरां प्रेम लहरी।८।
इति रसिक सिरोमणि श्रीमद्रूप गोस्वामी बिरचित श्रीचैतसं०

श्री श्री चैतन्याष्टकम्।

कलौ यं विद्वान्सः स्फुट माभि यजन्ते द्युति भरा
त्कृष्णाङ्गं कृष्णं मख विधि भिरुत्कीर्तनमयः।
उपास्यञ्च प्राहु र्य मखिल चतुर्थाश्रम जुषाम्
स देवश्चैतन्या कृति रति तरां नः कृपयतु।१।
चरित्रं तन्वानः प्रिय मघवदा हलादन पदम्
जयोद् घोषैः सम्यग् विरचित शची शोक हरणः
उदञ्चन्मार्तण्ड द्युति हर दुकूलाञ्चित कटिः
स देवश्चैतन्या कृतिरति तरां नः कृपयतु।२।
अपारं कस्यापि प्रणयि जन वृन्दस्य कुतुकी
रसस्तोमं हृत्वा मधुर मुप भोक्तुं कमपि यः।
रुचिं स्वामा वव्रे द्युति मिह तदीयां प्रकटयन्

स देवश्चैतन्या कृतिं रातितरां नः कृपयतु ।३।
अनाराध्यः प्रीत्या चिर मसुर भाव प्रणयिनाम्
प्रपन्नानां दैवीं प्रकृति मधि दैवं त्रिजगति ।
अत्रस्रं यः श्रीमान् जयति सहजानन्द मधुरः
स देवश्चैतन्या कृति रतितरां नः कृपयतु ॥
गति र्यः पौण्ड्राणां प्रकटित नवद्वीप महिमा
भवे नालङ्कुर्व्वन् भुवन माहतं श्रोत्रिय कुलम
पुनायङ्गीकाराद्भुवि परम हन्सा श्रम पदम्
सदेवश्चैतन्या कृति रतितरां नः कृपयतु ॥
मुखे नाग्रे पीत्वा मधुर मिह नामामृत रसम्
दृशो द्वारा यस्तं वमति घन वास्याम्बु मिषतः
भुवि प्रेम्न स्तत्त्वं प्रकटयितु मुल्लासित तनुः
सदेवश्चैतन्या कृति रातितरां नः कृपयतु ॥
तनु माविष्कुर्वन् नव पुरट भासं कटि लसत्
करङ्कालङ्कार स्तरुण गज राजाञ्चित गतिः ॥
प्रियेभ्योयःशिक्षां दिशंति निज निर्माल्यरुचिभिः

सदेवश्चैतन्या कृति रतितराम नः कृपयतु॥
स्मिता लोकःशोकं हरति जगतां यस्यपरितो
गिरान्तु प्रारम्भः कुशल पटलींम पल्लवयाति।
पदालम्भः कम्वा प्रणायति नहि प्रेम निवहम्
सदेवशैवतन्या कृत्ति रतितरां नः कृपयतु॥
शची सूनो कीर्तिं स्तवक नव सौरभ्य निविडम्
पुमान् यःप्रीतात्मा पठति किल पाद्यष्टक मिदम
स लक्ष्मी वानेतं निज पद सरोजे प्रणायिताम।
ददानः कल्याणी मनुपद मवाधं सुखयतु॥
रसिक सिरोमणि श्रीमद्रूप गोस्वामी विरचित श्रीचैतन्यास०

* श्री शचीतनयाष्टकम *

उज्ज्वल वरण गौर वर देहम्-
विलासित निरवधि भाव विदेहम्।
त्रिभुवन पावन कृपया लेशं-
तंप्रणामामि च श्रीशची तनुपम ॥१॥
गद् गद् अन्तर भाव विकारं-
दुर्ज्जन तर्ज्जन नाद विसालम्।

भव भय भञ्जन कारण करुणां-
तंप्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥२॥
अरुणाम्वर धर चारु कपोलं,
इन्दु विनिन्दित नख चय रुचिरम् ।
जल्पित निज गुण नाम विनोदं,
तं प्रणमामिच श्रीशचीतनयम् ॥३॥
विगलित नयन कमल जल धारं,
भूषण नवरस भाव विकारम्
गति अति मन्थर नृत्य विलासं,
तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।४।
चञ्चल चारु चरण गति रुचिरं,
मञ्जीर रञ्जित पद युग मधुरं ।
चन्द्र विनिन्दित शीतल वदनं,
तं प्रणमामिच श्रीशचीतनयम् ।५।
धृत कटि डोर कमण्डलु दण्डं,
दिव्य कलेवर मण्डित मण्डम् ।

दुर्ज्जन कल्मष खण्डन दण्डं,
तं प्रणमामिच श्रीशचीतनयम् ॥६॥
भूषण भूरज अलकावलितं,
कम्पित विम्वाधर वर रुचिरम् ।
मलयज विरचित उज्जल तिलकं,
तं प्रणमामिच श्रीशचीतनयम् ॥७॥
निन्दित अरुण कमल दल लोचनं,
आजानु लम्वित श्रीभुज जुगलं ।
कलेवर कैशोर नर्तक वेशम्,
तं प्रणमामिच श्रीशचीतनयम् ॥८॥

इतिश्री रसिक शिरोमणि श्रीमद्सार्वभौम भट्टाचार्य वि०र० श्रीश०

श्रीनित्यानन्दाष्टकम् ।

शरच्चन्द्र भ्रान्ति स्फुरदमल कान्ति गज गतिम
हरि प्रेमोन्मत्तं धृत परम सत्वंस्मित मुखम ।
सदा घूर्णन्नेत्र कर कलितवेत्रं कलि भिदम,
भजे नित्यानन्दं भजन तरु कन्दं निरवधि ।१।
रसा नामा गार स्वजन गण सर्वस्व मतुलम,

तदीयैक प्राण प्रतिं वसुधा जान्हवी पतिम्।
सदा प्रेमोन्मादं परम विदितं मन्द मनसाम्,
भजे नित्यानन्दं भजन तरुकन्दं निरवधि।२।
शची सूनुप्रेष्ठं निखिल जगदिष्टं सुखमयम्,
कलौ मज्जजीवो द्धरण करणोद्दाम करुणम्।
हरे राख्यानाद्वाभव जलधिगर्व्वोन्नति हरम्,
भजे नित्यानन्दं भजन तरुकन्दं निरवधि।३।
अये भ्रातर्नृणां कलि कलुषिनां किन्नु भविता
तथा प्रायश्चित्तं रचय सदनाया सतइमे।
व्रजन्ति त्वा मित्थं सह भगवता मन्त्रयति यो,
भजे नित्यानन्दं भजन तरुकन्दं निरवधि।४।
यथष्टेरे भ्रातः कुरु हरि हरि ध्यान मनिशम्,
ततो वः संत्सराम्बुधि तरणदायो मपि लगेत्।
इदं वाहुस्फोटै रटति रटयन् यः प्रति ग्रहम्,
भजे नित्यानन्दं भजन तरुकन्दं निरवधि।५।
वलात्संत्साराम्भो निधि हरण कुम्भोद्भवमहा

सतां श्रेयः सिन्धून्नति कुमुद वन्धुं समुदितम ।
खल श्रेणी स्फूर्ज्जत्तिमिरहर सूर्य्य प्रभमहं,
भजे नित्यानन्दं भजन तरुकन्दं निरवधि ।६।
नटन्तं गायन्तं हरि मनु वदन्तं पथि पथि,
व्रजन्तं पश्यन्तं स्वमपि नदयन्तं जन गणम् ।
प्रकुर्व्वन्तं सन्तं सकरुण दृगन्तं प्रकलनाद्,
भजे नित्यानन्दं भजन तरु कन्दं निर वधि ।७।
सुविभ्राणं भ्रातु कर सरसिजं कोमल तरं
मिथो वक्त्रा लोकोच्छलित परमानन्द हृदयम् ।
भ्रमन्तं माधुर्य्यै रहह मदयन्तं पुरजनां,
भजे नित्यानन्दं भजन तरुकन्दं निरवधि ।८।
रसानामाधारं रसिकवर सद्वैष्णव धनं,
रसागारं सारं पतित ततितारं स्मरणतः ।
परं नित्यानन्दाष्टक मिदं पूर्वं पठति य,
स्तदाङ्घ्रि द्वन्द्वाब्जं स्फुरतु नितरां तस्य हृदये ।९।

श्रीमद् वृन्दावनदास कृत ।

॥ श्रीअद्वैताष्टकम् ॥

हुहुङ्कार गर्ज्जनादि अहोरात्र सद्गुणाम्,
हा कृष्ण राधिकानाथ प्रार्थनादि भावनम् ।
धूप दीप कस्तुरी च चन्दनादि लेपनम्,
सितानाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम् ॥ १ ॥

गङ्गावारि मनोहार तुलस्यादि मञ्जरी,
कृष्ण गान सदा ध्यान प्रेमवारि झर्झरी ।
कृपाधि करुणानाथ भविष्यति प्रार्थनम्
सितानाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम् ॥२॥

मुहुर्मुहुः कृष्ण कृष्ण उच्चैः स्वरे गायनम्,
अहो नाथ जगन्नाथः मम दृष्टि गोचरम् ।
द्विभुज करुणानाथ दीयतां सुदर्शनं,
सीता नाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम ॥ ३ ॥

श्री अद्वैत प्रार्थनार्थ जगन्नाथं आलयं,
शचीमातु गर्भजात चैतन्य करुणामयम् ।
श्री अद्वैत सङ्ग रङ्ग कीर्त्तनं विलासनम्

सीता नाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम ॥४॥
अद्वैत चरणारविन्द ज्ञान ध्यान भावनं,
सदा द्वैत पादपद्म रेनु राशि धारणम्।
देहि भक्तिं जगन्नाथ रक्षमां भाजनं,
सीतानाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम् ॥५॥
सर्वदातः सीतानाथ प्राणेश्वर सद्‌गुणम्,
ये जपन्ति सीतानाथ पादपद्म केवलम्।
दीयतां करुणा नाथ भक्ति योगः तत्क्षणम्,
सीतानाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम ॥६॥
श्रीचैतन्य जयाद्वैत नित्यानंद करुणामयम्,
एक अंग त्रिधामूर्ति कैशोरादि सदावरम्।
जीवत्राण भक्ति ज्ञानं हुङ्कारादि गर्जनम्,
सीता नाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम ॥७॥
दीन हीन निन्दकादि प्रेम भक्ति दायकम्,
सर्वदातः सीतानाथ शान्तिपुर नायकम।
रागरङ्ग सङ्ग दोष कर्म्मयोग मोक्षणम्,

सीता नाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम् ॥८॥

इति श्रीश्रीसार्वभौमभट्टाचार्य्य विरचित श्रीअद्वैताष्टक संपूर्णम् ।

॥ श्रीगदाधराष्टकम् ॥

स्वभक्ति योग लासिनं सदा व्रजे विहारिणम्,
हरिप्रिया गणाग्रगं शचीसुता प्रियेश्वरम् ।
स राधाकृष्ण सेवनं प्रकाशकं महाशयम्,
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुम् ॥१॥
नवोज्वलादि भावना विधान कर्म पारगम्,
विचित्र गौर भक्ति सिन्धु रङ्ग भङ्ग लासिनम्,
सुराग मार्ग दर्शकं ब्रजादि वास दायकम्,
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुम् ॥ २ ॥
शची सुताङ्घ्रि सार भक्त वृन्द वन्द्य गौरवम्,
गौर भाव चित्त पद्म मध्य कृष्ण सुवल्लभम् ।
मुकुन्द गौर रूपकं स्वभाव धर्म्म दायकम्,
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुम् ॥ ३ ॥
निकुञ्ज सेवनादिकं प्रकाशनैक कारणम्,

सदा सखी रति प्रदं महारसं स्वरूपकम् ।
सदा श्रिताङ्घ्रि पुण्डरीक प्रदं सद्गुरु वरम्,
भजाम्यहं गदाधरं सुपाण्डितं गुरुं प्रभुम् ॥ ४ ॥
महाप्रभोर्महारस प्रकाशनाङ्कुरं प्रियम्,
सदा महारसाङ्कुर प्रकाशनादि बासनम् ।
महाप्रभाव्रजाङ्गनादि भावमोद कारकम्,
भजाम्यहं गदाधरं सुपाण्डितं गुरुं प्रभुम् ॥५॥
द्विजेन्द्र वृन्द वन्द्य पाद युग्म भक्ति बर्द्धकम्,
निजेषु राधिकात्मता वपु प्रकाशनाग्रहम् ।
अशेष भक्ति शास्त्र शिक्षयोज्वलाम्मृत प्रदम्,
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुम् ।६।
मुदा निज प्रियादिक स्वपाद पद्मसीधुभि,
महा रसार्णवामृत प्रदेष्ट गौर भक्तिदम् ।
सदाष्ट सात्विकान्वितं निजेष्ट भक्तिदायकम्,
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुम् ।७।
यदीय रीति राग रङ्ग भङ्ग दिग्ध मानसो,

नरोऽपि याति तूर्णमेव नार्य्य भाव भाजनम्।
तमुज्ज्वलाक्त चित्त मेतु चित्त मत्त षट्पदो,
भजाम्यहं गदाधरं सु पण्डितं गुरुं प्रभुम् ।८।
महारसामृत प्रदं सदा गदाधराष्टकम्,
पठेत्त यः सु भक्तितो व्रजाङ्गणा गणोत्सुकम्।
शची तनूज पाद पद्म भक्ति रत्न योग्यताम्,
लभेत राधिका गदाधराङ्घ्रि पद्म सेवया ॥९॥
इति श्रीलस्वरूप गोस्वामी कृत श्री गदाधराष्टक समाप्तम्।

श्री श्री वासाष्टकम् ।

आश्रयामि श्रीश्री वास तमाद्य पण्डित मुदा
शुक्लाम्वरधर गौरं गौर भक्ति प्रदायकम् ॥ ॥
श्रीगौरस्य नवद्वीप लीला सङ्कीर्तन सम्पदे ।
यः प्रधान तया ख्यातः स श्रीवासो गतिमर्म॥२॥
श्रीगौर कीर्तनानन्दे पुत्रशोकोऽपि नास्पृशम् ।
यं श्रीवासं भक्त राजं तं नमामि पुनः पुनः ॥३॥
आदौ वासन्तु श्रीहट्टे भागीरथ्यास्तटे ततः ।
कुमार हट्टे यस्यासीत्समे गौर गतिर्गतिः ।४।

श्रीरामः श्रीपतिश्चैव श्रीनिधिश्चेति सतमाः ।
श्रीवास भ्रातरो ज्ञेयाः श्रीवासं नौमि तदरम् ॥५॥
पुरा नारद रूपेण हरि नाम सुधा झरैः ।
यो जगत् प्लावयामास स श्रीवासोऽधुना गतिः ।६।
यत्पत्नी मालिनी देवी श्रीगौराङ्ग मतोषयत्
स्व हस्त पक्क भक्ताद्यैः स श्रीवासो गति र्मम ॥७॥
पतिवद् गौराङ्ग गतिर्मालिनी गौड विश्रुता ।
तत्पादपद्म सावधे प्रणतिर्म्मे सहस्रशः ॥८॥
श्रीचैतन्य प्रियतमं वन्दे श्री वास पण्डितम् .
यत्कारुण्य कटाक्षेण श्री गौराङ्गे रतिर्भवेत्॥९॥

इति श्री श्री वासाष्टकम् ।

श्री श्री गौर गदाधर जुगलाष्टकम् ।

क्षितौ लुठत् गौर कलेवराभ्यां
सदा महा प्रेम विलासकाभ्याम्
समुद्र तीरे नट नागराभ्यां,
नमोस्तुमे गौर गदाधराभ्याम् ॥ ॥

हा हा क्व राधेति मुहुः स्थिताभ्यां-
श्री राधिकाकृष्ण वपुर्धराभ्याम् ।
आनन्द लीला रस रञ्जिताभ्यां-
नमोस्तु मे गौर गदाधराभ्याम् ॥२॥

अद्वैत चिन्ताहर सम्भवाभ्यां-
मनोभवानन्द मनोहराभ्याम् ।
अचिंत्यलीला परिपूरिताभ्यां-
नमोस्तुमे गौरगदाधराभ्याम् ॥३॥

जीवैक निस्तार घृत व्रताभ्यां-
श्रीकृष्ण नाम्ना जन तारकाभ्याम् ।
हरे हरे कृष्ण मुखाम्बुजाभ्यां-
नमोस्तुमे गौरगदाधराभ्याम् ॥४॥

अशेष दुःखामय भेषजाभ्यां-
किरीट केपूर विभूषिताभ्याम् ।
ग्रैवेय माला मणि रञ्जिताभ्यां-
नमोस्तुमे गौरगदाधराभ्याम् ॥५॥

श्रीवत्स रोमावलि रञ्जिताभ्यां-
वक्षःस्थले कौस्तुभ भूषिताभ्याम् ।
त्रैलोक्य सम्मोहन सुन्दराभ्यां-
नमोस्तुमे गौर गदाधराभ्याम् ॥६॥

स्फुरच्चलत् काञ्चन कुण्डलाभ्यां–
सदाष्ट भावैः परिशोभिताभ्याम् ।
स्वेदाश्रु कम्पादि विभूषिताभ्यां–
नमोस्तुमे गौर गदाधराभ्याम् ॥७॥

श्री मच्छिवानन्द मनोरथाभ्यां-
सदा सुखानन्द रस स्फुराभ्याम् ।
मदीय सर्वस्व पदाम्बुजाभ्यां–
नमोस्तुमे गौर गदाधराभ्याम् ॥८॥

पठन्ति ये गौर गदाधराष्टकं-
पद्यं लभन्ते व्रज युग्म पादम् ।

अद्वैत पुत्रेण मयोक्त मेत-
न्नाम्नाच्युतानन्द जनेन धीमता ॥९॥

इति श्री मदच्युतानंद गोस्वामी बिरचित श्री गौरगदाधराष्टक समाप्तम् ।

श्री श्री षट्गोस्वाम्यष्टकम् ॥

कृष्णोत्कीर्तन गाननर्तन-
परौप्रेमा मृताम्भोनिधी,
धीरा धीर जन प्रियौ प्रिय करौ-
निर्मत्सरौ पूजितौ ।
श्री चैतन्य कृपा भरौ भुवि भुवौ
भारावहन्तारकौ,
वन्दे रूप सनातनौ रघुजुगौ-
श्री जीव गोपालकौ ॥ १ ॥
नाना शास्त्र विचारणैक निपुणौ
सर्द्धम सङ्स्थापकौ,
लोकानां हित कारिणौ त्रिभुवने-
मान्यौ शरण्याकरौ ।

राधा कृष्ण पदार विन्द भजना-
नन्देन मत्तालिकौ,
वन्दे रूप सनातनौ रघुजुगौ-
श्री जीव गोपालकौ ॥ २ ॥
श्री गौराङ्ग गुणानु वर्णन विधौ
श्रद्धा समृद्धान्वितौ,
पापोत्ताप निकृन्तनौ तनुभृतां-
गोविन्द गाना मृतैः ।
आनन्दाम्बुधि वर्द्धनैक निपुणौ
कैवल्य निस्तारकौ,
वन्दे रूप सनातनौ रघुजुगौ-
श्री जीव गोपालकौ ॥ ३ ॥
त्यक्त्वा तूर्ण मशेष मण्डल पति-
श्रेणीं सदा तुच्छवत् ,
भूत्वा दीन गणेशकौ करुणाया-
कापौनि कन्थाश्रितौ ।

गोपीभाव रसामृताब्धि लहरी-
कल्लोल मग्नौ मुहु,
बंन्दे रूप सनातनौ रघुजुगौ-
श्री जीव गोपालकौ ॥ ४ ॥

कूजत्कोकिल हंस सारस गणा-
कीर्णे मयूराकुले,
नाना रत्न निवद्ध मूल विटप-
श्री युक्त वृन्दावने ।
राधा कृष्ण महर्निशं प्रभजतौ-
जीवार्थदौ यो मुदा,
वन्दे रूप सनातनौ रघुजुगौ-
श्री जीव गोपालकौ ॥ ५ ॥

सङ्ख्या पूर्वक नाम गान नतिभिः-
कालौ वसानी कृतौ,
निद्राहार विहारकादि विजितौ-
चात्यन्त दीनौचयौ ।

राधा कृष्ण गुणस्मृतेर्मधुरिमा-
नन्देन सम्मोहितौ,
वन्दे रूप सनातनौ रघुजुगौ-
श्री जीव गोपालकौ ॥६॥

राधाकुण्ड तटे कलिन्द तनया-
तीरे च वन्शीवटे,
प्रेमोन्माद बशादशेष दशया-
ग्रस्तौ प्रमत्तौ सदा ।
गायन्तौ च कदा हरेर्गुण वरं-
भावाभिभूतौ मुदा,
बन्दे रूप सनातनौ रघुजुगौ-
श्री जीव गोपालकौ ॥७॥

श्री राधास्तोत्र प्रारम्भः ॥

हे राधे ! ब्रजदेविके च ललिते-
हे ! नन्द ! सूनो कुतः,

श्री गोवर्द्धन कल्प पादप तले-
कालिन्दि वन्ये कुतः ।
घोषन्ताविति सर्वतो ब्रजपुरे-
रवेदैर्महा विह्वलौ,
वन्दे रूप सनातनौ रघुजुगौ—
श्री जीव गोपालकौ ॥८॥

इति श्रीलनिवासाचार्य कृत श्री षट् गोस्वामी अष्टक समाप्तम्

श्री राधिके निकुञ्ज बिहारिणै नमः श्री नारद उवाच ॥

किंनुगुह्यतरं ब्रह्मन् यच्चिन्त्य मखिलेश्वरः ।
तन्मे ब्रूहि सुतत्वज्ञ योगेश मयि वत्सल ॥१॥

॥ ब्रह्मोवाच ॥

श्रणु गुह्य तमं तात नारायण मुखाच्युतं ।
सर्वैश्च पूजिता देवी राधा बृन्दा वने वने ॥२॥
राधा विश्लेषतः कृष्णो ह्येकदा प्रेम विह्वलः ।
राधा मंत्रं जपन् ध्यायन् राधा सर्वत्र पश्यति॥३॥

अस्य श्री राधा स्तोत्रस्य ब्रह्म ऋषिः अनुष्टुप छंदः
श्रीराधा देवता क्लीं बीजं श्री राधा प्रीत्यर्थे जपे
विनियोगः ।३।

गृहे राधा वने राधा राधा पृष्ठे पुरास्थिता ।
यत्र तत्र स्थिता राधा राधैवाराध्यते मया ॥४॥
जिह्वा राधा श्रुतौ राधा नेत्राराधा हृदि स्थिता ।
सर्वांग व्यापिनी राधा राधैवा राध्यते मया ॥५॥

॥ अथ ध्यानं ॥

किशोरी सुन्दरी रूपा राधा कमल लोचना ।
श्रीकृष्ण श्लेषिता राधा वृन्दावन विहारिणी ॥६॥
पूजा राधा जपे राधा राधिका चाभि वंदने ।
श्रुतौ राधा शिरो राधा राधैवाराध्यतेमया ॥७॥
गाने राधा गुणे राधा राधिका भोजने गतौ ।
रात्रौ राधा दिवा राधा राधैवाराध्यतेमया ॥८॥

माधुर्य्यें मधुरे राधा महत्वे राधिका! गुरुः ।
सौन्दर्यें सुन्दरी राधा राधैवाराध्यतेमया ॥९॥
राधा पद्मानन्दा पद्मा पद्मोद्भव मुपासिता ।
पद्मा विम्बार्चिता राधा राधैवाराध्यतेमया ॥१०॥
राधा कृष्णात्मिका नित्यं कृष्णो राधात्मिको ध्रुवं ।
वृन्दा वनेश्वरी राधा राधैवाराध्यतेमया ॥११॥
जिह्वाग्रे राधिका नाम नेत्राग्रे राधिकातनुः ॥
कर्णाग्रे राधिका कीर्ति मनोग्रे राधिका मनु ॥१२॥
राधा रस सुधा सिंधु राधा सौभाग्य सुन्दरी ।
राधा व्रजांगना मुख्या राधैवाराध्यतेमया ॥१३॥
कृष्णेन पठितं स्तोत्रं श्री राधा प्रीतये परं ।
यः पठेच्छृणुया न्नित्यं राधैवाराध्यतेमया ॥१४॥

इति श्री ब्रह्मांड पुराणे श्री ब्रह्म नारद संवादे

श्री राधा स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥



दोहा ॥

बानी मानी रसिक जन छानी रहै न मूल ।
सानी वन हित जुगल हित गानी सब अनुकूल ॥

पद

विधिना गौर चंदसों नातो । जब ते कियौ जियौं नहि भावत दियौ जगत करि हांतो ॥ अव काहू की बात सुहात न कहूं कहा धौं कीजै । नैंन चकोर चंद्रिकाजी वन विन प्याये क्यों जीजौ । भई ढीठ सव इंठ पीठ दई लई जगत उपहास ॥ वन वन फिरत परत कल नाहीं किसै सुहावै वास ॥ करिये लाज सरन आवन की जोर नहीं कछु आस ॥ करुनासिन्धु अनाथ वन्धु सुनि जियत मनोहर दास ॥



श्री श्री गौर नित्यानन्द श्री श्रीअनन्य रसिक शिरोमणि-
श्री प्रवोधानन्द सरस्वती पाद का-

* चरित्र *

श्री श्री नाभाजी महाराज कृत भक्तमाल छप्पै —

श्रीप्रवोधानंद राम भद्र जगदानंद--
कालियुग धनी ।
पर्म धर्म प्रति पोषकौ संन्यासी--
ये मुकुट मनी ॥ इति ॥

टीकाः— रसरास श्री प्रियां दास महाराज कृत-
श्री श्री प्रबोधानन्द महाराज की ॥ कवित्त टीका भक्तमाल ॥

श्री प्रवोधानंद बड़े रसिक आनंद कंद,
श्री चैतन्य चंद जू के पारिषद प्यारे हैं ।
श्री राधाकृष्णा कुञ्ज केलि निपट नवली,
कही झेलि रस रूप दोऊ किये दृग तारे हैं ॥
वृन्दावन वास कौ हुलास लै प्रकास कियो,
दियो सुख सिंधु कर्म धर्म सर्व टारे हैं ।

ताही सुनि सुनि कोटि कोटि जन रंग पायो,
विपिन सुहायो वसे तन मन वारे हैं ॥ १ ॥

* वार्ता *

श्री सरस्वती पाद जी का जीवन चरित्र अति अकथनीय है, पर रसिकन के सुख बर्द्धनार्थ कथञ्चित् जहां तहां से इकट्ठा कर कुछ एक प्रकास कियो विशेष रस रास श्री प्रिया-दास महाराज कृत श्री भक्तमाल टीका कवित्त में सविस्तार भावार्थ रसिक जन समझ लेंगे कुछ आपका जीवन चरित्र श्री श्री चैतन्य चरितामृत ग्रंथ में भी है, आप काशीजी के वासी सर्व सन्यासी मुकुट मानि रहे, वहीं पर श्री महाप्रभु जी के पारिषद तपन मिश्र एवं श्री चन्द्र शेखर जी श्री महाप्रभू जी की आज्ञा से वहीं वास करते, श्री मन्महाप्रभू जी चौबीस वर्ष की उमर तक इकसार श्री नवद्वीप में बिराजे ,

ता ऊपर आप चौबीस बर्ष के भीतर ही श्री श्री ईश्वर पुरी जी से श्री मन्महाप्रभूजी ने जीवन के शिक्षार्थ श्री कृष्ण मन्त्र ग्रहण कर चौबीस वर्ष पीछे आप श्री नीलाचल विराजे श्री नीला-चल जायबे के वाद छै वर्ष गमना गमन तहां श्रीकृष्ण जीवन महाराज का पद—

प्रवल पाखण्ड सब मतन को खण्ड,
परताप परचण्ड मारतण्ड जैसे ।
भ्रमत तैलंग कर्नाट गौड़ादि सब,
विमत गज दमन कौ सिंह ऐसै ।

आप छै वर्ष दक्षिण देश लेकर श्रीवृन्दावन तक याता यात किये इति मध्ये श्री वृन्दावन आगमन छल कर श्रीप्रकाशानन्द सरस्वती पाद पै कृपा कर दर्शन दै कृतार्थ कर आप पहले श्री प्रकाशानन्द सरस्वती पाद के नाम से विख्यात रहे, आप उस काल काशी वासी सर्व

सन्यासीन के विद्या गुरु रहे, आप सर्वदा ब्रह्म में लीन रहते श्री प्रभु वृन्दावन गमना गमन के समैं कितने ही दिन काशी वासी श्री तपन मिश्र चन्दशेखर जी के घर रहे, इति पूर्व, जिसदिन से श्री महाप्रभू काशी पधारे उसी दिन से सारी काशी और आस पास के वस्ती नगरों की वगर वगर में हलचल परगई, श्री मन्महाप्रभू जी की रूप माधुरी वनृत्य माधुरी वो श्री हरि नाम मांधुरी को देख सव लोग वाल वृद्ध वनिता पशु पक्षी स्थावर जंगम जो किसी ही को एक वेर दृष्टि गोचर होते ही वह वहीं मोह कर कठपुतरी की भांति इकटक रह जाते, दोहा-- "मनहुं ठगे से ठगि रहे लगे न नैन निमेष" आप जहां कहीं जाते श्री गंगा स्नान वो श्री विन्दुमाधौ जी के दर्शनार्थं वहीं

असंख्य लोग आपकी प्रेम माधुरी मूर्ति के दर्शनार्थ आजुटते वहोत भीर देख श्री मन्महाप्रभू जी के पारिषद आप का प्रेम सम्बरण कर वाय वाह्य दसा में ही सब लोगों से अति सुमधुर शब्दों में सब को सनमान कर सब को घर भेजते, इति मध्ये, काशी में श्री महाप्रभू जी दो महिना विराजे, कारण श्री सनातन गोसांई को शिक्षा आपने काशी में ही दई तथा श्री चैतन्य-तामते ॥

सनातन गुसांई आय तहांइ मिलिला।
ताको शिक्षा देवे प्रभु दुई मास रहिला।१।
सव निस्तार हेतू प्रभु कृपा अवतार।
सव निस्तार हेतू करैं चातुरी अपार।२।
तबे निज भक्त करे जित म्लेच्छ आदी।
सब इक वचिरह काशी के माया वादी।४।

बृन्दावन जाईते प्रभु रह ज्ञु काशी ते ।
माया वादी गन सब लागे ज्ञु निन्दिते ।४।
सन्यासी होइ करैं नाचन गायन ।
न करैं वेदांत पाठ करैं संकीर्तन ॥ ५ ॥
मूर्ख सन्यासी निज धर्म नहिं जानै ।
भावुक है कै फिरैं भावुक न साने ॥ ६ ॥
ये सब सुनिआ गुसाई हसैं मन मन ।
उपेक्षाय न करैं काहूते संभाषन ॥ ७ ॥

वार्ता ।

श्री रसिक मनि राव श्रीं महाप्रभु जी इस तरह लीला कर वहां रहने लगे, इतने ही में रसिक जन समझ लेंगे कि सरस्वती प्रकाशानन्द जी का हृदय पहले कैसो सरस हो, सरस्वती जी विद्या मद में दिन रात चूर रहते, श्री महाप्रभु जू ने सब जगजनों को इसी

तरह वहा रह कर सव को महा प्रेम सागर में डुवा दिया।

चौपाई।

सज्जन दुर्जन पंगु जड़ अंधगन।
प्रेम सागर डुवायो जगत जुजन ॥१॥

इसी तरह श्री महाप्रभु जी की बात सब लोग लोग में फैल गई जहां तहां आपके गुणानुवाद की चरचा होने लगी होते होते सरस्वती जी के पास आपकी प्रशंसा लोग करते पर आप हंस कर ही उड़ा देते, कछु दिन वाद श्री महाप्रभू जी के गुणानुवाद इतने फैले के संन्यासियों में भी हलचल परी, दिन रात ये लोग भी श्री महाप्रभु के स्वभाव माधुरी वो रूप माधुरी में डूब गये वो जहां तहां आपके गुणानुवाद सुनने वो सुनाने लगे, अब तो श्री महा प्रभु जी के दर्शन के लिये वहोत सन्यासी भी जाने आने लगे, पर एक

सरस्वती जी आपकी प्रशंसा सुन कभी प्रसन्न होते कभी रिस्याते, और कभी हंस कै लोगों से यों कहते कि ये तनकसा लोंडा नें कई रोज से काशी में आकर लोगों में इतनी हलचल मचादी है कि सब सन्यासी भी अपना पढ़ना पढ़ाना भूल गये दिन रात लोग उसी के तमासे में लगे रहते हैं हमारे सन्यसिायों की ऐ दसा कर दी है, तब संसारियों की कहना ही क्या है, कि बो कुछ जादू इन्द्र जाल इत्यादि कुछ वसीकिरन आदि जरूर कुछ जानते हैं, जवी इसने सिगरी दुनियाँ पागल कर राखी है, पर क्या करूं मेरे पास तौ वो कभी भूल के भी नहीं आते, और क्या करूं मेरा भी कभी कभी मन करता है कि कोई समय जाकर उसे देखूं तौ सही कै वो कैसा इन्द्रजाली वसी करन जानै है, फिर विचारते हैं कि जो में वहां गयो तौ और

अधिक लोगों में शोर होयगो इससे अपनो जानो ठीक नहीं कभी न कभी आवैगो जभी देख लेंगे अब कुछ दिन बाद आप भी इसी तरह वेदान्त देखना भूल गये श्रीमहाप्रभूजी की चरचादिन रात करते रहते कभी निंदा कभी स्तुति विशेष निंदा ही करते, कभी कहते ऐसो अभिमानी है थोरी सी उमर में ही भूल के भी हमारे दर्शनों के लिये भी न आयो, इति मध्ये श्री महाप्रभुजी के पारिषद चंद्रशेखर वो तपन मिश्र वहीं होकर निकसे कि जहाँ सरस्वती जी सन्यासियों को फटकार दे रहे वो श्री महाप्रभु जी की निंदा कर रहे, दोऊ जन निंदा सुन कांन में हाथ दे महा दुखी हो श्री महाप्रभु जी के पास आये और यों कहने लगे,

॥ चौपाई ॥

इति मध्ये चंद्रशेखर मिश्र तपना
दुखी होइ करैं प्रभु पद निवेदन १॥

कितेक सुनैं प्रभु तुम्हार निन्दन ।
नाहिं जाय सहि अव छांडै येजीवन ॥
तुम्हरे निन्दै सब संन्यासी जुगन ।
सुनि नाहिं जाय फाटै हदै श्रवन ॥ ३ ॥
एई सुनि रहैं प्रभु कछुक हांसिया ।
एई काल एक विप्र मिल्यो जु आइया ॥४॥
आय निवेदन करै चरन धरिया ।
एक वस्तु मांगौ देहु प्रसन्न होइया ॥ ५ ॥
सकल संन्यसी मै करचो निमंत्रन ।
तुम जदि आवो तबै पूर्ण होय मन ॥६॥
न जाहु संन्यासी गोष्ठी येहू मैं जानौं ।
मो पै अनुग्रह करौ निमंत्रन मानौं ॥ ७ ॥
प्रभु हंसि निभंत्रन करचो अङ्गीकार ।
संन्यासीन कृपा हेतु ये लीला ताहार॥८॥
सो विप्र जानै प्रभू न जांय काहु के घरै ।
तिनहीं की प्रेरणाय तिन्हें प्रत्याग्रह करै ॥६॥

और दिन गये प्रभु सो विप्र भवन ।
देख्यो बैठे सब संन्यासी गन ॥ १० ॥
सव नमस्करि गये पाद प्रक्षालन ।
पाद प्रक्षालन करि बैठे सोई स्थान ॥११॥
बैठि जु कर्‌यो कछू ऐश्वर्य प्रकाश ।
महा तेजो मय वपु कोटि सूर्य्य भास ॥१२॥
प्रभावे आकार्षित सव संन्यासी जुमन ।
उठे संन्यासी गन छाड्यो जु आसन ॥१३॥
प्रकाशानन्द नाम सब संन्यासी प्रधान ।
प्रभू को कहैं कछु करि कै सनमान ॥१४॥
यहां आवो यहां आवो सुनहु श्रीपाद ।
अपवित्र स्थान बैठो ए कहा अवसाद ॥१५॥
गुसाइं कहैं मैं हीन सम्प्रदाय ।
तुम सवकी सभा बैठे न भल पाय ॥१६॥
आपही प्रकाशानन्द हाथ तौ धरिया ।
बैठारयो सभा मध्ये सन्मान करिया ॥१७॥

पूछै तुम्हार नाम श्रीकृष्ण चैतन्य ।
केशौ भारती के शिष्य ताते तुम धन्य ॥१८॥
सम्प्रदाई सन्यासी तुम रहौ एई ग्राम ।
कारन कौन हम सबके ना करौ दर्शन ॥१९॥
संन्यासी होइ कै करौ नर्तन गायन ।
भावुक सब संग लै कै करौ संकीर्तन ॥२०॥
वेदान्त पठन प्रधान संन्यासी ज्ञु धर्म ।
ताहि छांडि क्यों करौ भावुकन कौ कर्म ॥२१
प्रभाव देखिये तुम साक्षात् नारायन ।
हीनाचार करौं क्यों कहो इहि को कारन॥२२॥
प्रभु कहैं श्रीपाद सुनौ इहि कौ कारन ।
गुरू मोहि मूर्ख देखि करयो ज्ञु शासन॥२३॥
मूर्ख तू तुम्हार नहि वेदान्त अधिकार ।
कृष्ण मंत्र जपौ सदा यही मंत्र सार ॥२४॥

* वार्ता *

इसी तरह से श्री महाप्रभूजी के साथ

सरस्वतीजी की बात चीत बहुत हुईं तब श्रीमहाप्रभूजी ने चौपाई कही ॥ इति ॥

कृष्ण नाम को जो आनन्द सिन्धू आस्वादन
ब्रह्मानंद ताके आगे खाद्योदक सन ॥ १ ॥

श्लोक हरिभक्त सुधोदये।

तं साक्षात्करुणा ह्लाद्‌—
विशुद्धाब्धि स्थितस्यमे ।
सुखानि गोष्पदायन्ते—
ब्राह्मण्यपि जगद्गुरो ॥१॥

चौपाई ॥

प्रभु के मीठे वाक्य सुनि संन्यासी ज्ञु गन ।
चित फिर गये कहैं मधुर बचन ॥ १ ॥
जो कछू कही ज्ञु तुम सब सत्य होय ।
कृष्ण प्रेमा सोई पाय जिहि भाग्योदय होय २
कृष्ण भक्ति करो इहि ते सबको सन्तोष ।
वेदांत न सुनौं क्यों तिहि कौन दोष ॥३॥
इतौ सुनि हंसि प्रभू बोले ज्ञु बचन ।

दोहा ॥

दुख न मानौ यदि करौ निवेदन ॥ ४ ॥
इहि सुनि बोले सब सन्यासी जुगन ।
तुम को देखिये जैसे साक्षात् नारायन ॥५॥
तुम्हार वचन सुनि जुडांय श्रवन ।
तुम्हार माधुरी देखि जुडाय नयन ॥ ६ ॥
तुम्हार प्रभाव ते सब को आनन्दित मन ।
कभू असङ्गत नहीं तुम्हार वचन ॥ ७ ॥
प्रभू कहैं वेदान्त सूत्र ईश्वर वचन ।
व्यास रूपे कह्यो जोई श्रीनारायन ॥ ८ ॥
भ्रम प्रमाद विप्र लिप्सा करणा पाटव ।
ईश्वर के वाक्ये नहीं एई दोष सब ॥ ९ ॥
उपनिषद सह सूत्र कहै जेई तत्व ।
मुख्यावृत्ति सोइ अर्थ परम महत्व ॥ १० ॥
गौणीबृत्ति सेवाभाष्य करी जु आचार्य ।
ताही के श्रवणे नास होय सब कार्य ॥ ११ ॥

तिनको नाहिक दोष ईश्वर आज्ञा पाइया।
गौणार्थ करयो मुख्य अर्थ अच्छा दिया १२
ब्रह्म शब्द मुख्य अर्थ कहै भगवान्।
चिदैश्वर्य परिपूर्ण अनूर्द्ध समान ॥ १३ ॥
तिहि की विभूति देह सब चिदाकार।
चिद्विभूति आच्छादिताहि कहै निराकार १४
चिदानंद देह तिहि स्थान परिवार।
तिहि कहै प्राकृत सत्व का विकार ॥ १५ ॥
तिनको दोष नहीं ते आज्ञाकारी दास।
और जोई सुने तिहि होयं सर्वनास ॥ १६ ॥
विष्णु निन्दा नहीं और इहि के ऊपर।
प्राकृत करिके माने बिष्णु कलेवर ॥ १७ ॥
ईश्वर को तत्व जैसे ज्वलित ज्वलन।
जीव को स्वरूप जैसे स्फुलिङ्ग कौ कन १८
जीव तत्व शक्ति कृष्ण तत्व शक्तिमान।
गीता विष्णु पुराण इहि ते परम प्रमान १९

वार्ता ।

इहीं भांति श्रीमहाप्रभूजी ने सरस्वती पाद जी को बहुत भांति करि उपदेस कह्यौ, और उपदेश करिबे के साथ ही साथ सरस्वती समेत सब संन्यासियों के मन आकर्षण कर मोह लिये फिर सब सन्यासी सरस्वती समेत श्री-महाप्रभूजी को दण्डवत् प्रार्थना करिवे लगे ।

चौपाई ।

वेद मय मूर्ति तुम साक्षात् नारायन ।
अपराध क्षमा पूर्व जो कह्यौ है नन्दन ॥१॥
सोई होते सन्यासिन के फिर गये मन ।
कृष्ण कृष्ण नाम सदा करें ग्रहन ॥ २ ॥
एई मत तिहि सब को क्षमि अपराध ।
सबहिन कौ कृष्ण नाम कर्यो प्रसाद ॥३॥
तव सन्यासी गन महाप्रभू लइया ।
भिक्षा करी है सबन मध्य बसाइया ॥ ४ ॥
भिक्षा करि महाप्रभु आयेउ वासा घर ।

ऐसी विचित्र लीला करें गौराङ्ग सुन्दर ॥५॥
प्रभू को देखन आवै सकल सन्यासी।
प्रभु का प्रशंसा करें सब वाराणासी ॥ ६ ॥
वाराणासी पुरी आये श्रीकृष्ण चैतन्य।
पुरी सह सब लोग भये महा धन्य ॥ ७ ॥
लक्ष-लक्ष लोग आवैं प्रभु को देखिते।
महा भीर होय द्वार नाहि प्रवेशते ॥ ८ ॥
स्नान करिवे जब जांय गङ्गा तीर।
तहां सब लोग आय होय महा भीर ॥ ९ ॥

वार्ता।

इसी तरह श्रीमहाप्रभूजी सरस्वती पाद सह सब सन्यासी गन को अपनी रूप माधुरी व प्रेम माधुरी व संकीर्त्तन-माधुरी में सब को डुबा लिये, अब तो सरस्वती पाद श्रीमहाप्रभूजी के पीछे ही पीछे डोलने लगे।

चौपाई।

कोइक काल महाप्रभू पंचनद स्नान करि।

देखिवे चले जु विन्दु माधव श्रीहरि ॥१॥
पथ सोई विप्र सब वृत्तान्त कह्यो धाय ।
सुनि महा प्रभू सुखे कछुक हंसि जाय २
माधव सौंदर्य देखि आविष्ट होइला ।
अंगिना ते आय नाचिवे जु लागिला ॥ ३॥
शेखर परमानन्द तपन सनातन ।
चारों जन मिलि करें नाम सङ्कीर्तन ॥ ४ ॥
चौदिग ते लोग लक्ष बोलैं हरी-हरी ।
उठी जु मङ्गल धुनि स्वर्ग मर्त्य भरी ॥ ५ ॥
निकट ते धुनि सुनि सोई प्रकासानन्द ।
कौतुक देखिवे आये ले शिष्य वृन्द ॥ ६ ॥
देखि प्रभु को नृत्य व देह की माधुरी ।
शिष्य गन संग सोऊ वोलें हरी हरी ॥ ७ ॥
कम्प स्वर भङ्ग स्वेद वैवर्न्य स्तम्भ ।
अश्रुधार भीजें लोग पुलक कदम्ब ॥ ८ ॥
हर्ष दैन्य चापल्यादि सञ्चारी विकार ।

देखि कासी वासी लोग को भयो चमत्कार१६
लोग संघट देखि प्रभु को बाह्य भई ।
संन्यासी गन देखि नृत्य संवरी ॥ १० ॥
प्रकाशानन्द को किये चरन बन्दन ।
प्रकाशानन्द आप तिहूं धरे जु चरन ॥ ११ ॥
प्रभु कहैं जगद्गुरू तुम पूज्यतम ।
मैं तुम्हार न होऊं शिष्य को शिष्य सम ॥१२॥
श्रेष्ठ है के क्यों करौ हीन कौ बन्दन ।
हमरो सब नास होय तुम ब्रह्म सम॥१३॥
यद्यपि तुम्हार ब्रह्म सर्वत्र मात्र भासे ।
लागै शिक्षा लगए विधि कर्‍यो ना आईसै॥
तिहुं कहैं तुम्हरि निन्दा पूर्व जो करी ।
तुम्हार चरण स्पर्श सब च्चय गई ॥१५॥
प्रभु कहैं विष्णु विष्णु हम जीव हीन ।
जीव विष्णु माने एई अपराध चीन ॥१६॥
जीवे विष्णु बुद्धि करै जोई व्रह्म रुद्र सम ।

नारायणौ मानै ताको पाखण्ड गनन ॥१७॥

प्रकाशानन्द कहैं तुम साक्षात् भगवान् ।
तभूजदि करौ तिहि दास अभिमान ॥१८॥
तभू पूज्य होओ तुम हम सब होते ।
सर्वनास होय हमार तुम्हारि निन्दाते ॥१९॥
अब तुम्हार पदे जोरि उपजैगी भक्ति ।
तिहि निमित्त करौं तुम्हार चरन प्रणति॥२०॥
आवो बोलि प्रभू लैकै तहां ही बैठिला ।
प्रभू के प्रकाशानन्द पूछते लागिला ॥२१॥
मायावाद ते करीले जितौ दोष कौ आख्यान
सब इहा जानी आचार्य कल्पित व्याख्यान२२
सूत्र को करयो तुम मुख्यार्थ विवरन ॥
तिहि सुन सब को भयो चमत्कार मन ॥२३॥
तुम तो ईश्वर तुम्हार अहै सब शक्ति ॥
संक्षेप रूप कहौ तुम सुनिवे कौ होय मति२४

वार्ता ।

इसी तरह श्रीमहा प्रभुजी व सरस्वती पाद जी की कथोपकथन श्रीराधाकृष्ण रस जस कह सुनाये, तव सरस्वती पाद का नाम श्रीप्रकाशानन्द हो अब श्रीमहाप्रभूजी की कृपा से आप का जो पहिला स्वरूप श्री श्रीतुङ्गविद्याजी अष्ट सखिन में से वह भाव भी उदय भयो, अपने भाव के अनुरूप श्रीमहाप्रभुजी की महा मधुर महा भाव रसराज कौ एक रूप देख छक गये, और आप से विनय कर सब संन्यासी समेत उपदेश लियो ॥

चौपाई ।

लोगन को संघट आवै प्रभु को देखिते ।
नाना शास्त्र पण्डित आवै शास्त्र विचारते ॥१॥
सब शास्त्र खण्डि प्रभू भक्ति करें सार ।
संयुक्त वाक्य मन फिराये जु सवार ॥ २ ॥

उपदेश लै करें श्रीकृष्ण सङ्कीर्तन।
सब लोग हंसे गावें करें नर्तन ॥ ३ ॥
प्रभू कौ प्रणत भयौ संन्यासी कौ गन।
आत्म मध्ये गोष्ठी करें छांड अध्ययन ॥४॥

वार्ता।

अब श्रीमहाप्रभुजी ने सरस्वती से कह्यो अब आप को प्रबोध भया, याते आपका नाम प्रबोधानन्द पर्यो, आज से महाप्रभूजी की कृपा को अंकुर जम्यो, एक दिन श्रीप्रबोधानंद जी आप को वियोग न सह सकै, तब बहुत साहस भी किया, साहस बिलकुल मर्याद तोर भज्यो, तब लाचार हो लोग भय लज्जा धैर्य्य सब तिलाञ्जलि दे रीति के मध्ये श्रीमहाप्रभुजी के वासा घर को चल दिये, मग में सोचते जा रहे हैं कि हाय हाय मैं कहां जाऊं, कहा करूं, किसी तरह चित्त को चैन नहीं, पागल की

तरह इत उत घूम कर वहां जाकर कहा देखते हैं—महा अद्भुत श्रीमहाप्रभू अपनी हथेरी पे कपोल धर श्रीराधिकाजू के चरनन की प्रीति को बढ़ा रहे हैं, इकौसे बैठकर तहां सरस्वतीजी का रचित श्लोक—

अश्रूणां किमपि प्रवाह निवहैः
क्षौणीपुरः पंकिलां ॥
कुर्वन् पाणि तले निधाय बदरा--
पाण्डुं कपोलस्थलीम् ॥
आश्चर्य लवणोद रोधसि वसन्-
शोणं दधानोऽशुकं ।
गौरी भूय हरिः स्वयं वितनुते-
राधा पदाब्जे रतिं ॥

* वार्ता *

श्रीप्रवोधानन्दजी आये तौ कुछ और को, पर यहां और से और ही देख छभ पर गये ।

तहां एक महात्मा की कही बानी—

आई ही कछु और को देख चली कछु और ।
लहंगा फाट्यो गांठ को देख चली पैघौर ॥

वार्त्ता ।

आप इसी तरह रात भर कभी श्री महाप्रभू जी श्री राधिका भावमें मग्न होते कभी श्रीकृष्ण भावमें, इसी तरह रात भर बीत गई कुछ खबर भी न परी कि रात कित कर निकस गई, भोर होते ही श्रीमहाप्रभूजी को बाह्य दशा भई तो देखे हैं कि सरस्वती पाद द्वार पै खड़े हैं देख कर सरस्वती पाद दौड़ कर दोऊ चरणों से लिपट गये और बोले—

कालः कलिर्बलिन इन्द्रिय वैरि वर्गाः
श्रीभक्ति मार्ग इह कण्टक कोटि रुद्धः ।
हाहा क्वयामि विकलः किमहं करोमि,
चैतन्य चन्द्र यदि नाद्य कृपां करोषि १

दुष्कर्म कोटि निरतस्य दुरन्त घोर,
दुर्वासना निगड शृङ्खलितस्य गाढं।
क्लिश्यन्मतेः कुमति कोटि कदर्थितस्य,
गौरं विनाद्य मम को भवितेहि वन्धुः २

हा हन्त हन्त परमोषर चित्त भूमौ,
व्यर्थी भवान्ति मम साधन कोटयोऽपि।
सर्वात्मना तदहमद्भुत भक्ति वीजं,
श्रीगौरचन्द्र चरणं शरणं करोमि ३

संसार दुःख जलधौ पतितस्य काम,
क्रोधादि न क्रम करैः कबलो कृतस्य।
दुर्वासना निगडि तस्य निराश्रयस्य,
चैतन्य चन्द्र मम देहि पदावलम्बम् ४

मृग्यापि सा शिव शुकोद्धव नारदा-
द्यैराश्चर्य भक्ति पदवी न दरीयसीनः।
दुर्वोध वैभवपते मयि पामरेपि,
चैतन्य चन्द्र यदि ते करुणा कटाक्षः ५

ईशं भजन्तु पुरुषार्थ चतुष्टयासा,
दासा भवन्तु च विहाय हरे रुपास्यान् ।
किञ्चिद्रहस्य पद लोभित धीर हन्तु,
चैतन्य चन्द्र चरणं शरणं करोमि ६

वार्ता ।

इसी तरह वहुत विनय करी, आपकी प्रेम रूप मधुरी में सरस्वती पादजी को मग्न देख बहुत अनुग्रह पूर्वक श्रीमहाप्रभुजी श्रीप्रवोधानंद जी को कुछ हित उपदेश दिये । यथा—

॥ चौपाई ॥

अतएव भागवत करहु विचार ।
इही मध्य पावौ सूत्र श्रुति अर्थ सार ॥
निरंतर करो कृष्ण नाम संकीर्तन ।
सहज मुकति पावौ पावौ कृष्ण प्रेम धन ॥

वार्ता ।

ऐसे कह श्री प्रवोधानन्दजी पै बहुत कृपा कर अपनो निज स्वरूप श्रीवृन्दावन धामसमेत

रसराज भाव मिलत वपु यथा—

दोहा ।

गौर नाम अरु गौर तन अन्तर कृष्ण सरूप ।
गौर सांवरे दुहुन को प्रकट एक ही रूप ॥
तिनके चरण प्रताप ते सर्व सुलभ जगहोय ।
गौर सांवरे पाइयै आपु अपन को खोय ॥
श्रीवृन्दावन विहरे सदा गहे परस्पर बांह ।

वार्ता ।

इसी तरह अपनो निज रूप व श्रीप्रबो-धानन्दजी का श्रीतुङ्गविद्या रूप श्री वृन्दावन वैभव सब दिखाय कृपा कर कही कि तुम श्री वृन्दावन जाव, आज से तुम को सब वस्तु दई ऐसे कह बहुत हित सों छाती सों छाती लगाय भेंटे, अपने विरह से सरस्वतीजी का चित्त स्थिर न देख प्यार से बहुत प्रवोध कर विदा किये, आप श्रीवृन्दावन को चल परे, प्रभु के विरह से आप

की उन्माद दशा हो गई प्रभू की आज्ञा सिरपै धर उन्माद दशा में ही धीरे२कुछ दिन वाद श्री वृन्दावन आ पहुँचे और श्रीवृन्दावन कालीदह पै विराजे वहीं पर आपकी अद्यावधि समाधि स्थल मौजूद है आप यहां आकर श्रीगौराङ्गमहाप्रभू के रूप भावना में तन मय लीन भये और उनकी कृपा से आप श्री प्रबोधानंद पाद रचित अति मधुर रस मय तीन ग्रंथ रचे उनके जथा क्रम नाम प्रथम श्री श्री चैतन्य चंद्रामृत, दूसरे श्री श्रीराधारस सुधानिधि स्तोत्र, तीसरे श्री श्रीवृन्दावन महिमामृतसत ये तीनों ग्रंथ अव भी मौजूद हैं । आप के ये तीनों ग्रंथ अति अतुलनीय हैं और ये तीनों ग्रंथ की परस्पर एक दूसरे के साथ शब्द वो भाव एक से ही मिलते हैं इस तरह के ग्रंथ किसी ने ही

आज तक नहीं रचे, ये तीनों ग्रंथ अच्छी तरह ध्यान देकर अवलोकन करने से ही ज्ञात होता है कि ये श्रीप्रबोधानन्दजी की बोलनि है, अब आप श्री श्रीगौरविरह मैं उनमाद दसा में जैसे महाप्रभूजी की कृपा से तीनों ग्रंथ रचे सो आप की कुछ इक बोलनि जथा।

श्लोक।

यन्नाप्तं कर्म निष्ठै न च समाधि-
गतं यत्तपो ध्यान योगे,
वैंराग्ये स्त्याग तत्व स्तुति भिर-
पिन यत्तार्कि तञ्चापि कैश्चित।
गोविंद प्रेम भाजा मपिन-
च कालितं यद्रहस्यं स्वयंत,
न्नाम्नैव प्राडु रासी दवतरंति-
परे यत्रतं नौमि गौरम् ॥१॥

श्रीराधारस सुधानिधीते । श्लोक ।

ब्रह्मा नंदैक वादाः कति च न-
भगवद्धंना नंद मत्ताः,
के चिद्वोविंद सख्या द्यनुपम-
परमानंद मन्ये स्वदंते ।
श्रीराधा किंकरीणां त्वखिल-
सुख चमत्कार सारैक,
सीमा तत्पादां भोजराजन्नख-
मणिविलस ज्योतिरेक च्छटापि ।

श्रीचैतन्य चंद्रामृते ।

श्रवण मनन संकीर्त्तनादि भत्तया मुरारे-
र्यदि परम पुमर्थं साधये त्कोऽपि भद्रं ॥
ममतु परम पार प्रेम पीयूष सिंधोः--
कि मपि रस रहस्यं गौर धाम्नौ नमस्यम ॥३॥
प्रवाहै रश्रूणां नव जलद कोटी इवदृशौ-
दधानं प्रेमर्द्धया परम पद कोटि प्रहसनं ।

वमन्तं माधुर्य्यै रमृतनिधि कोटारिवतनु-
च्छटाभिस्तं वंदे हारि महह संन्यास कपटम् ॥४॥
सिह स्कंधं मधुर मधुर स्मेर गण्ड स्थलान्तं,
दुर्विज्ञे यो ज्वलरस मया श्चर्यं नाना विकारं।
विभ्रत्कान्ति विकच कनकां भोजगर्भा भिरामा,
मेकीभूतं वपुरवतु वो राधया माधवस्थ ॥५॥
वन्दे श्रीकृष्ण चैतन्यं गौर कृष्ण मपि स्वयं।
यो राधा भाव संलुब्धः स्वभावं नितरा ज्जहौ ॥६॥

श्रीराधा रस सुधा निधौ।

कैशोरा द्भुत माधुरी भर धुरीणां-
गच्छाविं राधिकां, प्रेमो-
ल्लास भराधिकां निर वधि-
ध्यायं तिये ताद्धियः।
त्यक्ताः कर्म भिरात्मनैव भग-
वद्धर्मे प्यहो निर्ममाः,

सर्वा श्चर्य गति गता रस मयीं-
तेभ्यो महद्भ्यो नमः ॥७॥
लिखंति भुज मूलतो न-
खलु शंख चक्रा दिकं,
विचित्र हरि मंदिरं न रच-
यन्ति भाल स्थले ।
लसतुलसि मालिकां दधति-
कठं पीठे नवा, गुरो-
भजन विक्रमात्क इह--
ते महाबुद्धायः ॥ ८ ॥
कर्माणि श्रुति बोधितानि--
नितरा कुर्वंतु कुर्वन्तु मा,
गूढा श्चर्य रसाः स्वर्गादि विषया--
न्गृह्णंतु मुंचंतु वा ।
कैर्वा भाव रहस्य पारग मतिः--
श्रीराधिका प्रेयसः ,
किंचिज्जैत्र रनु युज्यतां वहि--

रहो भ्राभ्यद्भिरन्यै रपि ॥९॥
श्यामेति सुंदर वरेति मनोहरेति कंदर्प कोटि-
ललितेति सुनागरेति ।
सोत्कंठमाह्नि गृणती मुहुरा कुलाक्षीसा राधिका-
मयि कदानु भवेत्प्रसना ॥१०॥
क्षणं सीत्कुर्वंती क्षण मथ महा वेपथुमती-
क्षणं श्याम श्यामेत्यमुभि लपंती पुलकिता ।
महाप्रेमा कापि प्रमद मदनो द्दामरसाद सदा-
नंदा मूर्ति जयात वृषभानोः कुलमाणिः ॥११॥
श्रीचन्द्रामृते ।
चैतन्येति दयामयेति परमो दारेति नान विध-
प्रेमावेशित सर्व भूत हृदयेत्याश्चर्य धामान्निति ।
गौराङ्ग गेति गुणार्णवेति रस रूपेति स्वनाम-
प्रिये त्यश्रान्तं ममजल्पतो जनिरिय या-
या दिति प्रार्थये ॥ १२ ॥
स्वादं स्वादं मधुरिम भर स्वीय नामावलीनां-
मादं मादं कि मपि विवशी भूतविश्रस्त गात्रः ।

वारं वारं ब्रजपति गुणावान् गाय गायेति जल्पन्-
गोरो दृष्टः सकृदपि यै र्दुघटो तेषु भक्तिः ॥१३॥
क्षणं क्षीनः पीनः क्षण महह साश्रुः क्षणमथ-
क्षणं स्मेरः शीतः क्षण मनलतप्तः क्षणमपि,
क्षणं धावन् स्तब्धः क्षणमधिकजल्पन् क्षणमहो,
क्षणं मूको गौरः स्फुरतु ममदेहो भगवतः ॥१४॥
क्षणं हसति रोदिति क्षण मथ क्षणं मूर्छति ।
क्षणं लुठति धावति क्षणमथ क्षणं नृत्यति ॥
क्षणं श्वसिति मुञ्चति क्षण मुदार हाहा रुतिं ।
महा प्रणाय सीधुना विहरतीह गौरो हरिः ।१५।

श्रीराधासुधा निधौ ।

यस्याः प्रेमघना कृतेः पद नख-
ज्योत्स्ना भर स्नानापित,
स्वान्ता नासमुदेति कापि सरसा-
भक्ति श्चमत्कारिणी ।
सामे गोकुल भूप नंदन--
मन श्चोरी किशोरी,

कदा दास्यं दास्यति सर्व वेद-
शिरसां यत द्रहस्यं परम् १६
कदा गायं गायं मधुर मधु-
रीत्या मधुभिद श्चरि,
त्राणि स्फारा मृत रस वि-
चित्राणि वहुशः ।
मृजंती तत्केली भवन मभि-
रामं मलयज च्छटाभिः,
सिंचंती रसहृद निमग्ना--
स्मि भविता ॥ १७ ॥
महाप्रेमोन्मीलन्नव रस सुधासिंधु लहरी-
परी वाहै विंश्वं स्नपय दिव नेत्रांत नटनैः ।
तडिन्माला गौरं किमपि नव कैशोर मधुरंपुरं-
ध्रीणां चूडा भरण नवरत्नं विजयते ॥ १८ ॥
अमंद प्रेमांक श्लथ सकल निर्वंध हृदयंदया-
पारं दिव्यच्छवि मधुर लावण्य ललितम् ।

अलक्ष्यं राधाख्यं निखिल निगमै रम्यति तरां-
रसांभोधे सारं किमपि सुकुमारं विजयते १९
उन्मीलन्मिथुनानुरागगरि-
मोदार स्फुरन्माधुरी,
धारा सार धुरीण दिव्य ललिता-
न गोत्सवैः खेलतोः।
राधा माधवयोः परं भवतु-
न श्चित्तोचिरार्त्तिस्पृशोः,
कौमारे नव केलिशिल्प लहरी-
शिक्षा दिदीक्षारसः ॥२०॥
कदा वा खेलंतौ ब्रज नगर-
वीथीषु हृदयं हरंतौ,
श्रीराधा ब्रजपति कुमारौ सुकृ-
तिनः अकस्मात्कौ-
मारे प्रकट नव कैशोर विभवौ-
प्रपश्यन्पूर्णः स्यां रहसि,
परि हासादि निरतौ ॥ २१ ॥

प्रेमानंद रसैक वारिधि महा-
कल्लोल माला कुलाव्या,
लोलारुण लोचनां चल-
चमत्कारेण संचिन्वती ।
किंचित्केलि कला महोत्सवमहो-
वृन्दाटवी मंदिरे
नंदत्युद्भुत काम वैभव मयी-
राधा जगन्मोहिनी ॥ २२ ॥
बृंदारण्य निकुञ्ज सीमानि नव-
प्रेमानु भावभ्रमद्-
भ्रूभंगी लव मोहित व्रज मणि-
र्भक्तैक चिंतामणिः ।
साद्रानंद रसा मृत स्रव मणिः
प्रोद्दाम विद्युल्लता कोटि,
ज्योतिरुदेति कापिरमणी चूडा-
मणि मोहिनी ॥ २३ ॥

यो ब्रह्म रुद्र शुक नारद भीष्म मुख्यै-
रालक्षितो न सहसा पुरुषस्य तस्य।
सद्यौ वशीकरण चूर्ण मनंत शक्तिं-
तं राधिका चरण रेणु मनुस्मरामि॥

* श्रीचन्द्रामृते *

पूर्ण प्रेमरसा मृताब्धि लहरी-
लोलांग गौरच्छटा,
कोट्याच्छादित विश्वमीश्वर विधि-
व्यासादिभिः संस्तुतम्।
दुर्लक्ष्यां श्रुति कोटिभिः-
प्रकटयन्मूर्तिं जगन्मोहिनी,
माश्चर्यंलवणोदरोधासि परब्रह्म स्वयं नृत्यति॥
सर्वे राम्नाय चूड़ामणि भिरपिन-
संलक्ष्यते न यत्स्वरूपं,
श्रीशाब्रह्माद्य गम्या सुमधुरपदवी-
कापि यस्याति रम्या।
येना कस्माज्जगच्छ्री हरि रस-

मादिरा मत्त मेतद व्यधायि,
श्रीमच्चैतन्य चन्द्रः स किमु ममागिरां-
गोचर श्चेत सोवा ॥
क्वचित्कृष्णा वेशान्नटति वहु भंगी मभिनयन्,
क्वचिद्राधा विष्टो हरि हरि हरीत्यार्त रुदितः।
क्वचिद्रिङ्गन्वालः क्वंचि दपिच गोपाल चारितो,
जगद्गौरो विस्मापयति वहु गम्भीर महिमा ॥
वेलायां लवणां वुधे मधुरिम प्राग् भाव-
सार स्फुरल्लीलायांनव वल्लवी रसनिधे-
रावेशयन्ती जगत् ।
खेलायामपि शैशवे निज रुचा विश्वैक संमोहिनी,
मूर्तिः काचन कांचन द्रवमयी चित्तायमे रोचते ॥
विभ्रद्वर्णांकिमपि दहनो त्तीर्ण सौवर्ण सारं,
दिव्याकारं किमपि कलयन् दृप्त गोपालवालः ।
आविष्कुर्वन् क्वचिदवसरे तत्तदाश्चर्य लीलां,
साक्षाद्राधा मधुरिपु वपुर्भाति गोरांग चंद्र ॥२६

सिञ्चन् सिंचन् नयन पयसा पांडुगण्डस्थलान्तं
मुंचन् मुंचन् प्रतिमुहरहो दीर्घ निश्वास जातं
उच्चैः क्रन्दन् करुणा करुणोद्गीर्ण हा हेति रावो
गौरः कोऽपि ब्रज विरहिणी भाव मग्नश्चकास्ति ॥
यथा यथा गौर पदार विंदे-
विंदेत भक्ति कृत पुण्य राशिं,
तथा तथोत्सर्पति हृद्यकस्माद्राधा-
पदांभोज सुधांबु राशिः ॥३१॥
उद्गृह्णान्ति समस्त शास्त्र मभितो दुर्वार गर्वायिता
धन्यं मन्य धियश्च कर्म तपसा हूच्चा वचेषुस्थिता॥
द्वित्र्याण्येव जपंति केचनहरेर्नामानिवामाशया,
पूर्वं सम्प्रतिगौरचद्र उदिते प्रेमापि साधारणः॥
श्रीराधा सुधानिधौ ।
यत्पादांबुरुहैकरेणु कणिकां मूर्ध्ना-
निधातुं नहि प्रापु ब्रह्म शिवादयोप्यधिकृतिं
गोप्यैक भावाश्रया ।
सापि प्रेम सुधा रसांबुधि निधी, राधापि-

साधारणी, भूताकाल गति क्रमेण-
वलिना हे दैव तुभ्यं नमः ॥ ३३ ॥

॥ श्रीचन्द्रामृतौ ॥

साक्षान्मोक्षादि कार्य्यान्न विविध-
विकृतिभि स्तुच्छतां दर्शयन्तं,
प्रेमानन्दं प्रसूते सकल तनु-
भृतां यस्य लीला कटाक्षः।
नासौ वेदेषु गूढो जगति-
जदि भवेदीश्वरो गौरचन्द्र,
स्तत्प्राप्तो नीश वादः शिव शिव-
गहने विष्णु माये नमस्ते ।३४।

॥ श्रीराधासुधानिधौ ॥

अङ्क स्थितेपि दयिते किमपि प्रलापं-
हा मोहनेति मधुरं विदधत्य कस्मात्।
श्यामानुरागमद विह्वल मोहनाङ्गी-
श्यामामणिर्जयति कापि निकुञ्ज सीम्नि।३५।

वीणांकरे मधुमती मधुर स्वरांता माधाय नागर शिरोमणि भावलीलां । गायंत्यहो दिन मपार मिवाश्रु वर्षै दुःखान्नयंत्यह हसा हृदिमेस्तु राधा ॥ ३६ ॥ विच्छेदा भासमाना दहह निमिषतो गात्र विस्त्रं सनादौ चंचत्क--ल्पाग्नि कोटिज्ज्वलित मिव भवेक्षाह्यमभ्यं तरं च । गाढस्नेहानु वन्ध ग्रथित मिवतयो--रद्भुत प्रेम मूर्त्योः श्रीराधामाधवाख्यं पर--मिह मधुरं तद्दूयं धाम जाने ॥३७॥ कालिंदी तट कुञ्जे पुञ्जी भूतं रसामृतं किमपि । अद्भुत केलि निधानं निरवाधीभिधान मुल्लसति ॥ ३८ ॥ अहो तेमी कुञ्जास्तदनु—पम रासस्थल मिदं गिरि द्रोणी सैव स्फुरति रति रंगेप्रणायिनी । नवीक्षे श्रीराधां हर हर कुतो पीति शतधा विदीर्येंत प्राणेश्वरि मम कदाहन्त हृदयम् ॥ ३९ ॥ किं वा नस्तैः

सुशास्त्रैः किमथ तदुदितैर्वर्त्मभिसद्‌ गृहीतै
र्यत्रास्ति प्रेम मूर्तै र्नहि महिम सुधा नापि
भाव स्तदीयः। किं वा वैकुण्ठ लक्ष्म्या प्यहह
परमया यत्र मेनास्ति राधा किं त्वाशा प्यस्तु
वृन्दावन भुवि मधुरा कोटि जन्मातरेपि ।३६।
यन्नार दाजेश शुकै रगम्यं बृन्दावने मंजुल
मंजु कुञ्जे । तत्कृष्ण चेतो हरणैक विज्ञमत्रा-
स्ति किं चित्परमं रहस्यम्‌ ॥ ४० ॥ लक्ष्म्या
पश्च न गोचरी भवति यन्नापुः सरवायः प्रभो
संभाव्योपि विरंचि नारद शिव स्वायंभु वाद्यै
र्नयः। यो बृन्दावन नागरी पशुपति स्त्री
भाव लभ्यः कन्थ राधामाधवयोर्ममास्तु स
रहो दास्याधि कारोत्सवः ॥ ४१ ॥ राधा केलि
निकुञ्ज वीथिषु चरन्राधा भिधा मुच्चरन्त्रा-
धाया अनुरूप मेव परमं धर्म्मं रसेना चरन्‌।
राधायाश्चरणां वुजं परि चरन्नानोप चारै

मुदा कर्हि स्यां श्रुति शेखरो परिचर व्राश्चर्य चर्यां चरन् ॥ ४२ ॥

॥ श्रीचन्द्रामृतौ ॥

असूणां किमपि प्रवाह निवहैः क्षौणींपुरः पंकिलां, कुर्वन् पाणि तले निधाय वदरा पांडुं कपोल स्थलीं। आश्चर्यं लवणोद रोध सिवसन् शोणं दधानोऽशुकं गौरी भूप हरि स्वयं वितनुते राधा पदाव्जे रतिं ॥ ४३ ॥ प्रेमा नामाद्भुतर्थः श्रवण पथ गतः कस्य नाम्नां महिम्नः को वेत्ता कस्य वृन्दावन विपिन महा माधुरीषु प्रवेशः । को वा जानाति राधां परम रस चमत्कार माधुर्य्य सीमा मेक स्वैतन्य चन्द्रः परम करुणाया सर्व माविश्चकार ॥ ४४ ॥ कालिंद तनया तटे स्फुरद मन्द बृन्दावनं विहाय लवणां वुधेः पुलिन पुष्प वाटीं गतः । धृतारुण

पटः परी हृत सु पीत वासा हरिस्तिरोहित निजच्छविः प्रगट गौरिमा मे गतिः ॥ ४५ ॥ जाड्यं कर्मसु कुत्र चिज्जप तपो योगादिकं कुत्र चिद्, गोविन्दार्चन विक्रियः क्वचिदपि ज्ञानाभिमानः क्वचित् । श्रीभक्तिः क्वचिदुज्ज्वलापिच हरे वाङ् मात्र एव स्थिता, हा चैतन्य कुतो गतोसि पदवी कुत्रापि ते नेक्ष्यते ॥ ४६ ॥ सैवेयं भुवि धन्य गौड नगरी वेलापि सैवांबुधेः, सोयं श्रीपुरुषोत्तमो मधुपते स्तान्येव नामानितु । नो कुत्रापि निरीक्ष्य ते हरि हरि प्रेमोत्सवस्तादृशो, हा चैतन्य कृपानिधान तव किं वीक्ष्ये पुन वैभवम् ॥ ४७ ॥ ब्रह्मेशादि महाश्चर्य महि-मापि महाप्रभुः । मुग्ध वालोदितं श्रुत्वा स्निग्धोऽवश्यं भविष्यति ॥ ४८ ॥

वार्ता।

इसी प्रकार आप अपनो जीवन रूप ये तीन ग्रन्थ रच कर रसिक जनन को सुख वर्द्धन हेतु करे आपका जीवन चरित्र वहुत विशेष है उनकी कृपा से थोरो सो संग्रह कर पायो सो लिख्यो है।

रसिकन के चरित कौंन पै कहे आवै हैं,

॥कवित्त॥ संत है अनंत गुन अंत कौंन पावै जाके॥

अनन्य रसिक शिरोमणि श्री १०८ श्री प्रबोधानन्द सरस्वती जी का जीवन चरित, जैश्रीराधे, श्रीश्री राधा गोविन्द देवजू के अधिकारी श्रीहरिदासजी महाराज का जीवन चरित।

श्री चैतन्यचरितामृते ॥

चौपाई।

बृन्दावन कल्प द्रुमसुवर्न सदन।
महायोग पीठ तहां रत्न सिंहासन।१।

ताते वैठि आछे साक्षात् ब्रजेन्द्र नन्दन।
श्री गोविन्द देव नाम साक्षात् मदन ॥
राज सेवा होय तसां विचित्र प्रकार।
दिव्य साामग्री वस्त्र दिव्य अलंकार ॥
सहस्र सेवक सेवा करैं अनुक्षण ।
सपस्र वदन सेवा न होय वर्णन । ४॥
सेवा के अध्यक्ष श्री पण्डित हरिदास ।
जिहि यस गुन सर्व जगत प्रकास ॥५॥
सुशील सहिष्णु शांत वदान्य गम्भीर।
मधुर वचन मधुर चेष्टा अति धीर ॥६॥
सव के सन्मान कर्ता करैं सवकौ हित ।
कोटिल्य मात्सर्य हिन्सा न जानै जिंहि चित ।७।
कृष्ण के जे साधारन सद्गुन पंचास ।
सो सव इनके शरीरहि प्रकास ॥ ८ ॥
पंडित गुसाई के शिष्य अनन्त आचार्य ।
कृष्ण प्रेम मय तनु उदार महाआर्य ॥९॥

तिहि के अनन्त गुन को करै प्रकास ।
तिहि प्रिय शिष्य इहि पंडित हरिदास १०
श्रीचैतन्य नित्यानन्द तिहि परम विश्वास ।
श्रीचैतन्य चरित तिहि परम उल्लास ॥११॥
वैष्णवन के गुनग्राही नाहीं देखै दोष ।
काय मन वाक्य करैं वैष्णव संतोष ।१२।
निरन्तर तिहूं सुनैं चैतन्य मंगल ।
जाके प्रसाद सुनैं वैष्णव सकल ॥१३॥
कथा सभा उज्वल करैं जैसे पूर्न चन्द्र ।
निज गुनामृत बढावै वैष्णव आनंद ।१४।
तिहि बड़ि कृपा करि आज्ञा कियो मोरे ।
श्रीगौराङ्ग शेष लीलावर्निवारे ॥ १५ ॥

वार्त्ता ।

आपही के शिष्य श्रीश्रीमाधो रसिकजी वो श्रीभगवन्त मुदितजी हैं ।

चरित्र श्री माधौरसिक जी कौ।

भक्तमाल टीका कर्त्ता कवित्त ॥

जगत माधौरसिक वात सुनौ पिता पाये हैं। इति ॥१॥ आयो अन्तकाल वे जानि सुधि पिछानि सब आगरे तेलै कै चले बृन्दावन जाइयै आये आधी दूर सुधि आई बोले चूर ह्वै कै कहां लिये जात कूर कही जोई ध्याइयैं ॥ कह्यो फेरौ तन वन जायवे कौ पात्र नहीं जरै वास आवै प्रिया पिय कौन भाइये। जाने हारो होइ सोई जायगो जूगल पास ऐसे माव रासि ताही ठौर चले आइये ॥ २ ॥

वार्त्ता

लौट जायवे के वाद सरीर को आगरे में हीं ले गये वहीं श्री वृन्दावन वैभव समेत प्रगट कर दिखायो तव आपने सरीर को छोड्यो, इहि विधि आप महल टहल जुगल खवासी पाई। सहचरि हो श्रीवृन्दावन नित्त निकुञ्ज श्रीप्रियाजी के महल की टहल पाई।

इति आप श्रीश्री भगवन्त मुदितजी के पिता हैं॥

चरित्र श्री भगवन्त मुदित जी का ।

श्री भक्तमाल श्रीश्री नाभाजी महाराज की छप्पै ।

छप्पै ।

कुञ्ज विहारी केलि सदा अभ्यंतर भासै । दंपति सहज सनेह प्रीति परमित परकासै ॥ अनन्य भजन रसरीति पुष्टमारग करदेखी । विधि निषेध वल त्यागि पागि रति हृदै विशेखी ॥

माधौ सुत सम्मत रसिक तिलक दामधर सेवलिय भगवन्तमुदित उदार जसरस रसनाआस्वाद किय

टीका कर्त्ता श्री प्रियादास जी महाराज कृत

कवित्त ।

सूजा के दीवान भगवन्त रसवन्त भये वृन्दावन वासिन की सेवा ऐसी करी है । विप्र कै गुसाईं साधु कोऊ ब्रजवासी जावो देत वहु धन एक प्रीति मति हरी है ॥ सुनि गुरुदेव अधिकारी श्रीं गोविन्द देव नाम हरिदास जाय देख चित

धरी है। योग्यताई सौंवा प्रभु दूध भात मांग
लियो कियो उत्साह तंऊ पेखैं अरवरी है ॥ २ ॥
सुनि गुरु आवत अमावत न किहूं अंग रंग
भरी तियासों यों कहा कहा कीजियै। बोली
घरवार पट सम्पति भण्डार सब भेंट करि दीजै
एक धोती धारि लीजियै ॥ रीझे सुनि बानी
सांची भक्ति तुही जानी मेरे अति मनमानी
कहि आखैं जल भीजियै। यही बात परी कांन
श्री गुसाईं लई जानि आये फिरि वृन्दावन पन
माति धीजियै ॥३॥ रह्यौ उत्साह उर दाह को
न पारावार कियो लै विचार आज्ञा मांगि वन
आये हैं। रहे सुख लहे नाना पद राचि कहे
एक रस निर्वहे ब्रजवासी जा छुटाये हैं ॥ कीनी
घर चोरी तउ नेकु नासा मोरी नांहि वारी मति
रंग लाल प्यारी दृग छाये हैं । बडे वडभागी
अनुरागी रति जागी जग माधौ रसिक बात

सुनौं पिता पाये हैं ॥ ४ ॥

वार्त्ता ।

श्रीश्री भगवन्त रसवन्त जी का चरित श्री भक्त माल मे सविस्तार है टिप्पनी श्री वैष्णवदासजी की में आपके अति अपार चरित हैं आप श्री गुरुदेव गुसाईं श्री हरिदासजी महाराज जब वहां से लौट आये यह वात सुन श्री गुरुदेवजी को दुःसह विरह न सह सके, आज्ञा ले श्री गुरुदेव के दर्शन हितार्थ आप श्री वृन्दावन आकर वास करने लगे आपने अति माधुर्य रस के अनेक पद रचे और आप की प्रीति रस रीति एक रस निर्वही। एक समै आपके घर पै आगरे में व्रजवासीन ने जा चोरी करी, वादशाह ने पकडवा कैदखादे में डार दिये, ये वात श्री वृन्दावन में सुन यहां झट पट जा उनको छुटवा दिये और वहुत साधन दकर विदा किये आपकी तनक भी न नांक मुरी, आप असे

प्रीति रीति वारे ऐसे आप महाअनुरागी वड भागी आपकी रति सारे जगत में जगी ॥

व्रजवासिन पै आपकी रचित

सवैया।

धन लेहु जन लेहु अरंधगी हरि लेहु मांग ते न देहु जो पै उदभट कामी हैं सुतहू कौ मारौ तन टूक टूक करि डारौ दोषहू न निरवारौ वडे मत्त वामी है। ऐसे व्रजवासी ताकी जग करै उपहांसी मेरे तो आभासी एतो सुकृत सुधामी हैं। पूजि ही तौ जानौ भत्रगतं इष्ट करि मानौं इनमें जो दोष आनौ वड़ी जीय खामी हैं ॥ १ ॥

या प्रकार आपके अमित चरित हैं उनमें से कछु थोरे से संग्रह कर रसिक जनन के सुख वर्द्धन के हेतु लिखे। इति।

दोहा—

रसिक अनन्यन सों विनै, करौ जोरि जुग पांनि।
लीजौ भूल सुधारि मम आशा किरपा खांनि।१।

हौं मति वाल अवोध अति क्षमियो मो अपराध ।
अति प्रिय साध अगाध चित-
हित श्यामहि आराध ॥ २ ॥
विंद्व मात्रा दीर्घ अरु, नून जहां कहूं होय
सव सुधारि कीजौ कृपा, दृष्टि आपुनी जोय ।

कुण्डलिया ।

ये विनती मो अधम की सुनहु रसिक जन नित्त ।
अपनों मोकों जानिकै दया करोगे चित्त ।
दया करहुगे चित्त कहौ यह दास हमारो ।
जिहि तिहि भांति निरन्तर यह-
रहौ वन में डारचौ ॥
श्रीवन विहार आनन्द घन अति रस में रसवंत ।
अति कदर्य्य जिय हिय डरौं ए-
विनती सुनि सव सन्त ॥ ४ ॥

संग्रह कर्त्ता दासानुदास वंसीदास
"कांमा वारे" ।